परिचायिका

2013–14

सम्पादक

प्रो. के.बी. सुब्बरायुडु

कुलसचिव

सम्पादक मण्डल

रमेश सिंह

डॉ. जयप्रकाश नारायण

डॉ. प्रफुल्ल गड़पाल

डॉ. त. महेन्द्र

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

मानित विश्वविद्यालय,

मानव संसाधन विकास मन्त्रालय भारत सरकार के अधीन

(राष्ट्रीय मूल्यांकन प्रत्यायन परिषद् द्वारा 'ए' श्रेणी में प्रत्यायित)

नई दिल्ली – 110 058

प्रकाशक
प्रो. के.बी. सुब्बरायुडु
कुलसचिव
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)
56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058
ईपीएबीएक्स : 011-28524993, 28521994, 28524995
तार : संस्थान
ई मेल : rsks@nda.vsnl.net.in
वेबसाईट : www.sanskrit.nic.in

प्रथम संस्करण : 2012
द्वितीय संस्करण : 2013

© राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली

मुद्रक
डी.वी. प्रिंटर्स
97-यू.बी., जवाहर नगर, दिल्ली-110007
मो.: 98182 79798

शान्तिपाठः

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः।
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयङ्कुरु।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

कुलगीतम्

हिमगिरिवदनं समुद्रचरणं
गङ्गागोदासुधारसम्।
विश्वविश्ववन्दितसद्विद्यं
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्॥

योऽनूचानः स नो महानिति
शास्ति विमलमचलं भणितम्।
निखिलभारते व्याप्तपरिसरं
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्॥

सवेदवेदाङ्गं षड्दर्शन-
पुराणकाव्यैरलङ्कृतम्।
बौद्धजैनशैवागममहितं
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्॥

एकं सत्यमनन्तविग्रहं
समुपास्तेऽनिशमेकस्थम्।
जयति जयति सद्विद्यारत्नं
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्॥

समेधयति भारतीः समस्ताः
प्रणमति निखिलां वसुन्धराम्।
जयति सकलपुरुषार्थसाधकं
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्॥

– आचार्यः रामकरणशर्मा

प्रतीक चिह्न

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के प्रतीक चिह्न में चारों ओर से घिरे हुए लाल, सफेद और काले रंग के स्तम्भ ब्रह्माण्ड के आत्मतत्त्व गुणों-रजस्, सत्त्व और तमस् के प्रतीक हैं। इस तरह त्रिगुणात्मक प्रपञ्च में सत्त्व और रज गुणों से परिपूर्ण संस्थान पूर्वोक्त चारों स्तम्भों में अन्तर्वर्ती सफेद और रक्त स्तम्भ को सूचित करता है। वहीं ऊपरी भाग में "योऽनूचानः स नो महान्"[1] यह ध्येयवाक्य वेदादिविद्याओं का प्रतीकभूत है। मण्डल के बायें भाग में त्रिगुण की व्यञ्जिका लाल, सफेद और काली रेखाएँ क्षुब्धतरंग की तरह ऊपर से नीचे की ओर क्रम से बढ़ रही हैं। ये ब्रह्म के संयोग से क्षुब्ध प्रकृति की विश्वाकार अभिव्यक्ति की प्रक्रिया को प्रतिपादित करती है। इस अभिव्यक्ति में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, संस्कृत के प्रचार के द्वारा व्यापनशील हो, अपनी प्रभा सर्वत्र प्रकाशित करते हुए मूलकोष्ठ में विराज रहा है, यह प्रतिपादित होता है। मण्डल के दायें भाग में पुनः त्रिगुण और तीन वर्णों वाली रेखाएँ अधोर्ध्व क्रम से अपने लक्ष्यभूत प्रज्ञान को ब्रह्म के प्रति जाने के इच्छुक संस्थान का लक्ष्य प्रतिपादित करती हैं। केन्द्र में सूर्याभिमुख पुष्प संस्थान के ऋतानुकूलस्वभाववत्व (सत्य के अनुकूल स्वभाव के अनुरूप) को बताता है। पुष्पवृन्त में लगा पत्रयुगल अभ्युदय-निःश्रेयसरूप धर्म के तत्त्व को बताता है।

---

1. **न हायनैर्न पलितैर्न वित्तेन न बन्धुभिः।**
   ऋषयश्चक्रिरे धर्मं *योऽनूचानः स नो महान्*॥ महाभारत-शल्यपर्व 50.40

   (मानव की महत्ता न तो उम्र से, न बाल पकने से, न धन से और न तो बन्धुवर्ग से ज्ञात होती है, अपितु ऋषिपरम्परानुसार मानव-जाति में जो अध्ययनशील (वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञ) है, वह महान् है।)

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान के आवश्यक दूरभाष संख्या

कुलपति	011 – 28523949
	011 – 28521948 (फैक्स)
कुलसचिव	011 – 28520979
	011 – 28520976 (फैक्स)
उपनिदेशक (प्रशासन)	011 – 28524993 – एक्स. 218
	011 – 28524532 (टेलीफैक्स)
उपनिदेशक (लेखा)	011 – 28524993 – एक्स. 217
उपनिदेशक (शैक्षिक)	011 – 28524993 – एक्स. 216
उपनिदेशक (परीक्षा)	011 – 28524993 – एक्स. 206
	011 – 28521258 (टेलीफैक्स)
सचिव (खेलकूद)	011 – 28525978
अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्र	011 – 28524387 (टेलीफैक्स)
दूरस्थ शिक्षा (मुक्त स्वाध्याय पीठ)	011 – 28523611 (टेलीफैक्स)
स्वागतकक्ष	011 – 28524995, 28524993, 28521994

दृष्टि (Vision) एवं ध्येय (Mission)

दृष्टि (Vision)

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत शिक्षा की गरिमा की संस्थापना के लिए राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान का विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय के रूप में विकास।

ध्येय (Mission)

संस्कृत विद्या की समग्र शाखाओं का सर्वाङ्गीण विकास तथा आधुनिक प्रणालियों के द्वारा संस्कृत संसाधनों की उपलब्धि।

संस्कृत, पालि तथा प्राकृत भाषाओं में इन भाषाओं के परस्पर सांस्कृतिक अन्तःसम्बन्धों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षण व अनुसन्धान का व्यवस्थापन करते हुए भाषिक विविधता तथा सांस्कृतिक बहुलता का उन्नयन।

इन भाषाओं की ज्ञान प्रणालियों में दार्शनिक एवं वैज्ञानिक तत्त्वों का संरक्षण एवं समुन्नयन तथा इन ज्ञान प्रणालियों का सांस्कृतिक धरोहर के साथ सम्बन्ध स्थापित करते हुए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपकरणों के माध्यम से इनकी उपलब्धता सुनिश्चित करना।

पुरोवाक्

भारत सरकार द्वारा संस्कृत आयोग 1956-57 की अनुशंसा के अनुरूप देश में संस्कृत शिक्षा के प्रोन्नयन के लिये राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की स्थापना 1970 में की गई थी। विगत चार दशकों में संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका का निर्वाह करता हुआ यह संस्थान निरन्तर प्रगति के सोपानों पर आरोहण करता आया है। आज राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान विश्व का सबसे बड़ा संस्कृत विश्वविद्यालय है तथा देश का एकमात्र बहुपरिसरीय संस्कृत विश्वविद्यालय भी है। दिल्ली में स्थित मुख्यालय के अतिरिक्त कश्मीर से कन्याकुमारी तथा महाराष्ट्र से अगरतला तक स्थित संस्थान के बारह परिसर संस्कृत की प्राचीन गुरुकुल प्रणाली में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के नवाचारों, नवोन्मेषों तथा अभिनव प्रविधियों के समन्वय का विलक्षण उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। संस्थान ने विगत वर्षों में उत्तरपूर्व राज्यों में अपनी गतिविधियों का विशेष प्रसार किया है, तदनुसार त्रिपुरा राज्य में संस्थान का एकलव्य परिसर (अगरतला) वर्तमान सत्र 2013-14 से आरम्भ किया जा रहा है। वर्तमान समय संस्कृत की अभूतपूर्व संभावनाओं का काल है, जिनकी चरितार्थता में यह संस्थान भी सक्रिय है।

मुझे आशा है कि इस सक्रियता का दिग्दर्शन सत्र 2013-14 के लिये प्रकाशित प्रस्तुत परिचायिका से हो सकेगा।

नवसत्रारम्भ पर मैं संस्थान के समस्त प्राचार्यों, प्राध्यापकों, अधिकारियों, छात्रों व कर्मचारियों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

-राधावल्लभ त्रिपाठी
कुलपति

प्रस्तावना

सर्वविदित है कि राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान विश्व का सबसे बड़ा संस्कृत विश्वविद्यालय है। नई दिल्ली में 05 से 10 जनवरी, 2012 को समायोजित पन्द्रहवें विश्व-संस्कृत सम्मेलन के अवसर पर पेरिस के अन्ताराष्ट्रिय संस्कृत अध्ययन समवाय की साधारण सभा में यह प्रस्ताव पारित किया गया कि भारत शासन द्वारा संसद में अधिनियम पारित करके राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान को 'अन्ताराष्ट्रिय केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय' का दर्जा दिया जाए।

इस राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के बारह परिसर विभिन्न राज्यों में विराजमान हैं, जहाँ विविध भाषा-भाषी छात्र व अध्यापक अध्ययन-अध्यापन करते हैं। सभी परिसरों में संस्थान का अविभक्त तथा समान रूप देखने के लिए आदरणीय कुलपति महोदय प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी जी ने संस्थान की एक केन्द्रीय परिचायिका (Hand Book) के निर्माण का दायित्व सम्पादक मण्डल को सौंपा, जो अब आपके सामने प्रस्तुत है।

संस्थान के इस परिचयात्मक ग्रन्थ में संस्थान तथा बारह परिसरों का परिचय एवं अधिकारियों तथा कर्मचारियों के कार्यों का निरूपण किया गया है। प्रति परिसर किन विषयों का अध्यापन किया जाता है, कितने विभाग हैं? उन विभागों में प्रवेश के क्या नियम हैं? प्रवेश प्रक्रिया क्या है? प्रवेश योग्यता क्या होनी चाहिए? विविध मदों में कितने शुल्क लिए जाते हैं? इन सभी प्रश्नों का समुचित समाधान इस परिचय पुस्तिका में दिया गया है। यहाँ प्रार्थना पद्धति से लेकर प्रमाण पत्र प्राप्ति पर्यन्त सभी परिसरों में एकरूपता दिखायी गयी है। इस प्रकार राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान परिसरों में विभक्त होते हुए भी अविभक्त की तरह विराजमान है। यह परिचायिका छात्र-छात्राओं, अध्यापकों, प्राचार्यों तथा अभिभावकों के लिए समान रूप से संस्थान-मार्गदर्शिका के तौर पर उपयोगी होगी, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

केन्द्रीय परिचायिका का यह द्वितीय संस्करण है। परिसर प्राचार्यों से प्राप्त उपयुक्त सुझाव को ध्यान में रखकर इसका संपादन किया जा रहा है, फिर भी यदि इस परिचायिका में जो भी परिवर्तन सम्बन्धी बातें पाठकों के सम्मुख आती हैं तो कृपया वे सूचित करें तथा परामर्श भी दें, ताकि अग्रिम संस्करण में संशोधन किया जा सके।

प्रस्तुत परिचायिका के निर्माण के लिए प्रेरणास्रोत सम्माननीय कुलपति, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी जी को सादर धन्यवाद तथा कृतज्ञता अर्पित करता हूँ। इस कार्य के सम्पादनार्थ सम्पादक-मण्डल के सभी सदस्यों को साधुवाद तथा विभिन्न प्रकार से सहयोग प्रदान करने वाले संस्थान-सदस्यों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।

तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।

ॐ तत्सत् ॐ

K. B. Subbarayudu

- के. बी. सुब्बरायुडु

कुलसचिव

सम्पादकीय

भारतवर्ष अपने सांस्कृतिक वैभव के लिए विश्वगुरु रहा है। इस महती संस्कृति का आधार संस्कृत भाषा ही थी। अतीत इस बात का प्रमाण है कि प्रतिकूल परिस्थितियों में संस्कृत भाषा ही राष्ट्रिय सांस्कृतिक अखण्डता तथा मानवीय जीवन-मूल्यों को अक्षुण्ण बनाये रखने में विशिष्ट योगदान करती रही है। इसने समस्त विश्व के समक्ष मानवीय-तत्त्वों का आदर्श प्रस्तुत किया। ऐसी महत्त्वपूर्ण तथा सभी भाषाओं की जननी संस्कृत के प्रचार-प्रसार, संवर्धन तथा विकास के लिए भारत सरकार कृतसंकल्प रहा है। सन् 1956 को भारत सरकार के द्वारा संस्कृत आयोग का गठन इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम था। भारत सरकार का मानव संसाधन विकास मन्त्रालय विभिन्न माध्यमों से अनेक संस्कृत संस्थाओं का पोषण तथा संवर्धन कर रहा है। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) उनमें से अन्यतम है।

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान विश्व का सबसे बड़ा संस्कृत विश्वविद्यालय है। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है। इसके 12 परिसर भारत के सुदूर राज्यों में स्थित हैं। इस प्रकार यह एकमात्र बहुपरिसरीय संस्कृत विश्वविद्यालय है। इसका प्रत्येक परिसर आधुनिक सुविधाओं तथा संसाधनों से परिपूर्ण है तथा ये परिसर परम्परागत संस्कृत-शास्त्रों के अध्यापन, संवर्धन, प्रचार-प्रसार तथा शोध के लिए प्रतिबद्ध हैं। संस्थान के 25 आदर्श संस्कृत महाविद्यालय तथा शोध संस्थानों में भी संस्कृत के विकास कार्य हो रहे हैं। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के द्वारा अनेक संस्थाओं को सम्बद्धता दी जा चुकी है। मानव संसाधन विकास मन्त्रालय की नोडल एजेंसी के रूप में संस्थान मन्त्रालय की विभिन्न योजनाओं को कार्यान्वित करता है। संस्थान के योजना प्रभाग से राष्ट्र की अनेक संस्थाएँ लाभान्वित हो रही हैं। संस्कृत के छात्रों के लिए छात्रवृत्तियाँ, पुस्तक क्रय योजना, स्वैच्छिक संगठनों को वित्तीय सहायता, राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित विद्वानों को मौद्रिक अनुदान, अवकाश प्राप्त संस्कृत विद्वानों को शास्त्रचूडामणि योजना के तहत आर्थिक सहायता तथा उनकी विद्वत्ता का लाभ समाज को दिलाना एवं मन्त्रालय प्रकाशन इत्यादि योजनाएँ संस्थान के माध्यम से संचालित हो रही हैं।

संस्थान-परिसरों में प्राक्-शास्त्री (इण्टर), शास्त्री (बी.ए.), शिक्षाशास्त्री (बी. एड.), आचार्य (एम.ए.), शिक्षाचार्य (एम. एड्.) का अध्यापन किया जाता है। संस्थान शोध के क्षेत्र में विद्यावारिधि (पीएच्. डी.) उपाधि भी प्रदान करता है। मुक्त स्वाध्याय पीठ, अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्र तथा पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से भी परम्परागत संस्कृत का शिक्षण एवं प्रचार-प्रसार किया जाता है। मुख्यालय तथा सभी

परिसरों में विविध प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रमों के द्वारा पालि, प्राकृत, ज्यौतिष, वास्तुशास्त्र इत्यादि विषयों का भी अध्यापन किया जाता है। इन पाठ्यक्रमों का लाभ संस्कृतेतर अध्येतावर्ग भी उत्साह प्राप्त कर रहा है।

2010 में दूरस्थ शिक्षा परिषद् से मान्यता प्राप्त मुक्त स्वाध्यायपीठ द्वारा संस्थान के सभी 11 परिसरों में दूरस्थ शिक्षा के लिये स्वाध्याय केन्द्रों की स्थापना की गयी है। वर्तमान में इन सभी 11 स्वाध्याय केन्द्रों में दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से प्राक्शास्त्री, शास्त्री, आचार्य तथा सेतु पाठ्यक्रम सतत रूप से संचालित हैं। इन सभी स्वाध्याय केन्द्रों में अद्यावधि लगभग 2000 से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हो चुके हैं।

संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष समायोजित संस्कृत नाट्योत्सव (वसन्तोत्सव/कौमुदीमहोत्सव), अखिल भारतीय संस्कृत नाट्यमहोत्सव, युवमहोत्सव तथा अखिल भारतीय वाक्स्पर्धाओं के माध्यम से संस्थान अपने छात्रों के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाएँ (Co-curricular activities) आयोजित कर उनके सर्वांगीण विकास के लिए प्रयत्नशील है। संस्थान द्वारा पूर्वोत्तर राज्य असम के गुवाहाटी में दिनांक 16-18 मार्च 2013 तक अखिल भारतीय संस्कृत विश्वविद्यालय युवा महोत्सव का सफल आयोजन किया है। संस्थान में अनेक परियोजनाएँ जैसे पालि, प्राकृत, उर्दू-फारसी-अंग्रेजी-संस्कृत कोश, ई-टेक्स्ट, भाषामन्दाकिनी इत्यादि चल रही हैं। आधुनिक तकनीकी से युक्त दृश्य-श्रव्य माध्यमों (Audio visuals) द्वारा भी पाठ्यांशों को सुगम तथा रोचक बनाने का कार्य संस्थान कर रहा है। संस्थान द्वारा आयोजित व प्रायोजित राष्ट्रिय-अन्ताराष्ट्रिय संगोष्ठियों तथा विशिष्ट व्याख्यानमालाओं से संस्कृत-जगत् विशेष रूप से लाभान्वित हो रहा है।

संस्थान के इतने वैविध्यपूर्ण तथा विस्तृत कार्यकलापों को देखते हुए माननीय कुलपतिजी ने मुख्यालय सहित परिसरों के नियमों तथा गतिविधियों में एकरूपता लाने की दृष्टि से एक केन्द्रीय परिचायिका के निर्माण के लिए निर्दिष्ट किया। आदरणीय कुलसचिव जी के समुचित परामर्शों से यह कार्य सुगमतया सम्पन्न हो पाया।

संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों, प्राध्यापकों तथा परिसरप्राचार्यों के द्वारा आवश्यक सामग्रियाँ तथा सूचनाएँ समय-समय पर उपलब्ध कराई गयीं एतदर्थ उनका धन्यवाद। प्रस्तुत परिचायिका संस्थान का विस्तृत परिचय प्रस्तुत करने में सक्षम होगी तथा सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसी आशा है।

-सम्पादक मण्डल

विषय-सूची

	शान्तिपाठ	iii
	कुलगीतम्	iv
	प्रतीक चिह्न	v
	दृष्टि तथा लक्ष्य	vi
	पुरोवाक्	vii
	प्रस्तावना	viii
	सम्पादकीय	xi
राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान (मुख्यालय), नई दिल्ली		
1.	परिचय	3
2.	उद्देश्य	3
3.	संचालन संरचना	4
4.	प्रमुख कार्य	4
5.	प्रमुख-गतिविधियाँ और योजनाएँ	5
6.	संस्थान के पूर्वतन कार्यकारी अधिकारी	16
7.	7 मई 2002 से राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मानित विश्वविद्यालय घोषित होने के बाद कार्यकारी अधिकारी	18
8.	कार्यकारी संरचना	18
9.	सभी प्रभागों का परिचय और गतिविधियाँ	19
10.	प्रमुख वार्षिक कार्यक्रम	22
11.	प्रवर्तित व्याख्यानमालाएँ	23
12.	भविष्य-योजनाएँ	24
13.	मुख्यालय के सदस्यों के नाम	24
राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान के विभिन्न परिसर		
1.	गंगानाथ-झा-परिसर, इलाहाबाद (उ. प्र.)	35
2.	सदाशिव-परिसर, पुरी (उडीसा)	41

3.	श्री रणवीर-परिसर, जम्मू (जम्मू-कश्मीर)	48
4.	गुरुवायूर-परिसर, त्रिश्शूर, (केरल)	54
5.	जयपुर-परिसर, जयपुर, (राज.)	59
6.	लखनऊ-परिसर, लखनऊ (उ. प्र.)	68
7.	राजीव-गान्धी-परिसर, शृंगेरी (कर्णा.)	74
8.	वेदव्यास-परिसर, बलाहार, कांगड़ा (हि. प्र.)	79
9.	भोपाल-परिसर, भोपाल (म. प्र.)	86
10	के. जे. सोमैया-संस्कृत-विद्यापीठ, मुम्बई (महा.)	93

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान के प्रवेशादि विषयक सामान्य नियम

1.	प्रवेश के नियम व पाठ्यक्रम	103
2.	प्रवेश-निरस्ति और प्रतीक्षकों का प्रवेश	118
3.	सुरक्षित धनराशि	119
4.	परिधान	119
5.	अवकाश सम्बन्धी नियम	119
6.	शुल्क-विवरण	120
7.	छात्र-कोष	121
8.	छात्र कल्याण परिषद्	121
9.	अनुशासन	121
10.	आचार-संहिता	121
11.	रैगिंग-निषेध-अधिनियम	122
12.	छात्रों के लिए छात्रवृत्ति स्वीकृत करने हेतु विनियम	125
13.	अनिवार्य उपस्थिति (अ) परीक्षा के सन्दर्भ में (आ) छात्रवृत्ति के सन्दर्भ में	127
14.	परीक्षा उत्तीर्णता हेतु न्यूनतम प्रतिशत	128
15.	नेत्रहीन/स्थाई रूप से विकलांग/आकस्मिक दुर्घटना के कारण हाथ में फ्रेक्चर होने वाले परीक्षार्थियों हेतु लेखक की व्यवस्था	129
16.	छात्रों को प्रदेय सुविधाएँ	129

17. शैक्षिक कलैण्डर (सत्र 2013-14) 134

18. अवकाश (वर्ष 2013) 135

18.1 राजपत्रित अवकाश (Gazetted Holidays)

18.2 प्रतिबन्धित अवकाश (Restricted Holidays)

19. परिसर की समितियाँ 137

परिशिष्ट

1. राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के परिसरों में अध्यापनीय विषय
2. अध्यापन समय सारिणी निर्देश
3. अध्यापन समय सारिणी (कक्षानुसार)
4. अध्यापन समय सारिणी (अध्यापकानुसार)
5. छात्रवृत्ति कार्ड
6. आवेदन पत्र (with acknowledgement slip)

आवश्यक सूचना

* इस पुस्तिका में वर्णित किसी भी नियम का संशोधन/परिवर्धन या निरस्त करने का सम्पूर्ण अधिकार कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के अधीन होगा।
* किसी भी अनिश्चय की स्थिति में संस्थान (मुख्यालय) का निर्णय अन्तिम होगा।
* किसी न्यायिक विवाद की अवस्था में न्याय का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय क्षेत्र तक ही सीमित रहेगा।

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

नई दिल्ली

1. परिचय

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की संस्थापना अक्टूबर 1970 में, सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 (1860 का अधिनियम XXI) के अन्तर्गत पंजीकृत एक स्वायत्त संगठन के रूप में पूरे देश में संस्कृत के समग्र विकास तथा प्रोन्नयन हेतु हुई। अपने निर्माण काल से ही यह भारत-सरकार द्वारा पूर्णरूपेण प्रदत्तनिधि है। यह संस्कृत के प्रचार-प्रसार तथा विकास हेतु शीर्ष निकाय के रूप में कार्यरत है तथा संस्कृत विद्या के विकास हेतु विभिन्न योजनाओं तथा कार्यक्रमों के निर्माण तथा कार्यान्वयन में मानव संसाधन विकास मन्त्रालय की सहायता करता है। संस्कृत भाषा के संरक्षण, प्रसार तथा विकास और इसके सभी पक्षों की शिक्षा हेतु, 1956 में भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय द्वारा स्थापित 'संस्कृत आयोग' की विभिन्न संस्तुतियों के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु इसने एक केन्द्रीय अभिकरण के रूप में भूमिका निभाई है।

संस्थान के पारम्परिक संस्कृत शिक्षण के संवर्धन और सम्प्रसारण के क्षेत्र में योगदान, इसके श्रेष्ठ प्रकाशनों और इसके द्वारा 50,000 से भी अधिक दुर्लभ संस्कृत पाण्डुलिपियों के संरक्षण तथा प्रबन्धन को महत्त्व देते हुए भारत सरकार ने इसे 7 मई, 2002 से मानित विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया है, जो अधिसूचना संख्या एफ. 9-28/2000 यू 3 के अन्तर्गत है तथा जिसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अधिसूचना संख्या एफ 6-31/2001 (सी.पी.पी.-1), दिनांक 13 जून 2002 से अनुगत किया गया है।

2. उद्देश्य

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के 'संस्था के बहिर्नियम' (Memorandum of Association) में घोषित उद्देश्य इस प्रकार हैं–

संस्थान की स्थापना का उद्देश्य पारम्परिक संस्कृत विद्या का प्रचार, विकास व प्रोत्साहन है और उनका पालन करते हुए;

i. संस्कृत विद्या की सभी विधाओं में अनुसन्धान, अनुदान, प्रोत्साहन तथा संयोजन करना है, साथ ही शिक्षक-प्रशिक्षण तथा पाण्डुलिपि विज्ञान आदि को भी संरक्षण देना, जिससे पाठमूलक प्रासंगिक विषयों में आधुनिक शोध के निष्कर्ष के साथ सम्बन्ध स्पष्ट किया जा सके तथा इनका प्रकाशन हो सके।

ii. देश के विविध भागों में परिसरों की स्थापना, विद्यापीठों का अधिग्रहण तथा संचालन करना और समान उद्देश्यों वाली अन्य संस्थाओं को संस्थान से सम्बद्ध करना।

iii. केन्द्रीय प्रशासनिक संकाय के रूप में इसके द्वारा स्थापित अथवा अधिगृहीत समस्त केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों का प्रबंधन तथा उनकी शैक्षणिक गतिविधियों में अधिकाधिक प्रभावी सहयोग करना जिससे विशिष्ट क्षेत्रों में विद्यापीठों के बीच

कर्मचारियों, छात्रों व शोध और राष्ट्रिय कार्य-विभाजन के अन्तर्विनियम और स्थानान्तरण को सुसाध्य एवं तर्कसंगत बनाया जा सके।

iv. संस्कृत के संवर्धनार्थ भारत सरकार के केन्द्रीय अभिकरण (Nodal Agency) के रूप में उनकी नीतियों एवं योजनाओं को लागू करना।

v. उन शैक्षणिक क्षेत्रों में अनुदेश एवं प्रशिक्षण का प्रबन्ध करना जो निर्धारित मानदण्डों को पूरा करते हों और संस्थान जिन्हें उचित समझता हो।

vi. शोध एवं ज्ञान के प्रसार एवं विकास के लिए समुचित मार्गदर्शन एवं व्यवस्था करना।

vii. प्राचीर-बाह्य (Extra-mural) अध्ययन, विस्तारित योजनाएँ एवं दूरस्थ क्रिया-कलाप जो समाज के विकास में योगदान देते हों, उनका उत्तरदायित्व लेना।

viii. इसके अतिरिक्त उन सभी उत्तरदायित्वों एवं कार्यों का निष्पादन करना जो संस्थान के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक या वाञ्छित हों।

ix. पालि तथा प्राकृत भाषाओं का संरक्षण एवं संवर्धन।

3. संचालन संरचना

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान का संचालन अधोलिखित के द्वारा किये जाते हैं–

अध्यक्ष (Chairman)

प्रबन्धन परिषद् (Board of Management)

विद्वत् परिषद् (Academic Council)

योजना एवं परिवीक्षण मंडल (Planning and monitoring Board)

वित्त समिति (Finance Committee)

'केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मन्त्री', संस्थान का पदेन **कुलाधिपति** (Chancellor) होता है। प्रबन्धन परिषद् संस्थान की सर्वश्रेष्ठ नीति-निर्धारक परिषद् है। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान का कुलपति जो प्रबन्धन परिषद् का अध्यक्ष होता है, संस्थान का मुख्य शैक्षणिक एवं प्राशासनिक अधिकारी है।

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली (मुख्यालय) परिसर के अतिरिक्त अखिल भारतीय स्तर पर दस परिसर हैं। संस्थान मुख्यालय शैक्षणिक, शोध एवं प्रकाशन, पत्राचार एवं अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण, मुक्तस्वाध्यायपीठम्, परीक्षा, योजना, प्रशासन तथा वित्त विभागों के माध्यम से कार्य सम्पादित करता है।

4. प्रमुख कार्य

संस्थान अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्नलिखित प्रमुख कार्यक्रमों और क्रियाकलापों में कार्यरत है:

- विभिन्न राज्यों में परिसरों की स्थापना।
- माध्यमिक, पूर्वस्नातक, स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तरों पर परम्परागत पद्धति से संस्कृत शिक्षण तथा संस्कृत के विभिन्न क्षेत्रों में विद्यावारिधि (पीएच.डी.) उपाधि हेतु शोध-कार्य का संचालन व समन्वयन।
- शिक्षा शास्त्री (बी.एड.) तथा शिक्षाचार्य (एम.एड.) स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण का संचालन करना।
- उभयनिष्ठ अभिरुचि वाली संयुक्त परियोजनाओं के प्रायोजन में अन्य संगठनों से सहयोग।
- संस्कृत पुस्तकालयों, पाण्डुलिपि संग्रहालयों की स्थापना और दुर्लभ पाण्डुलिपियों एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन तथा प्रकाशन।
- स्वीकृत निर्धारित पाठ्यक्रम/शोध को संतोषजनक रूप से पूर्ण करके निर्धारित परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने वाले व्यक्तियों को उपाधियाँ प्रदान करना और डिप्लोमा/प्रमाण-पत्र देना।
- विज़िटरशिप, फेलोशिप, छात्रवृत्तियाँ, वज़ीफे, पुरस्कार तथा पदकों का संस्थापन एवं उन्हें प्रदान करना।
- मुक्तस्वाध्यायपीठम् के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा-कार्यक्रमों का संचालन।
- संस्कृत, पालि तथा प्राकृत के प्रोन्नयन हेतु मानव संसाधन विकास मन्त्रालय की योजनाओं का कार्यान्वयन।

5. प्रमुख-गतिविधियाँ और योजनाएँ

संस्थान निम्नलिखित गतिविधियों के द्वारा अपने निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सतत प्रयत्नशील है:-

5.1 शिक्षण

संस्थान के अंगभूत परिसरों में संस्थान द्वारा निर्मित पाठ्यक्रम के आधार पर प्राक्शास्त्री से लेकर आचार्य स्तर तक का शिक्षण प्रदान किया जाता है। संस्थान द्वारा संचालित और संस्थान से सम्बद्ध संस्कृत संस्थाएँ भी उक्त पाठ्यक्रम के अनुसार अध्यापन-कार्य सम्पन्न करती हैं।

5.2 प्रशिक्षण

परिसरों में शिक्षण अभ्यास पर बल देते हुए एक शैक्षणिक सत्र में शिक्षक-प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का संचालन किया जाता है जिससे संस्कृत में बी.एड. के समकक्ष शिक्षा-शास्त्री तथा एम.एड. के समकक्ष शिक्षाचार्य की उपाधि प्रदान की जाती है।

5.3 शोध

i. सभी परिसरों में छात्रों का शोध हेतु पंजीयन संस्थान द्वारा आयोजित अखिल भारतीय प्रवेश–परीक्षा में सफलता के आधार पर या नेट उत्तीर्णता के आधार पर होता है और शोध–कार्य के सफल समापन पर उन्हें पी–एच. डी. के समकक्ष विद्यावारिधि की उपाधि प्रदान की जाती है।

ii. संस्थान, संस्कृत वाङ्मय के विभिन्न अंगों पर शोध कार्यक्रमों का उत्तरदायित्व निर्वहण करता है।

iii. संस्थान द्वारा प्राचीन पाण्डुलिपियों पर अनुसंधान को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जा रहा है।

iv. गङ्गानाथ झा परिसर इलाहाबाद का उद्देश्य चयनित शाखाओं में शोध एवं सम्पादन है।

5.4 प्रकाशन

i. अपने अंगभूत परिसरों द्वारा सम्पादित शोध–ग्रन्थों और दुर्लभ संस्कृत पाण्डुलिपियों का प्रकाशन करता है।

ii. संस्थान मुख्यालय द्वारा **'संस्कृत-विमर्शः'** नामक अर्धवार्षिक तथा गङ्गानाथ झा परिसर द्वारा **त्रैमासिक शोध–पत्रिका** और **'उशती', 'दृक्', 'कथासरित्'** तथा **'गंगानाथ झा शोध-पत्रिका'** नामक साहित्यिक पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है। इनके अलावा जम्मू परिसर से **'श्रीवैष्णवी'**, भोपालपरिसर से **'राष्ट्री'** तथा वार्षिक शोधपत्रिका **'शास्त्रमीमांसा'**, लखनऊ परिसर से **'गोमती'** तथा ज्ञानायनी, जयपुर परिसर से **'जयन्ती'**, पुरी परिसर से **'शिक्षासुधा'** व **'पौर्णमासी'**, गुरुवायूर परिसर से **'गुरुपवनेशकृपा'**, शृंगेरी परिसर से **'शारदा'**, गरलीपरिसर से **'हैमी'** तथा मुम्बई परिसर से **'विद्यारश्मि'** शोध पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं।

iii. मौलिक संस्कृत ग्रन्थों के प्रकाशन हेतु विद्वानों एवं संस्थाओं को 80 प्रतिशत आर्थिक सहायता प्रदान करता है।

iv. प्रकाशकों के माध्यम से अप्राप्य तथा दुर्लभ संस्कृत ग्रन्थों के प्रकाशनार्थ आर्थिक सहायता दी जाती है।

v. संस्थान समय–समय पर विभिन्न ग्रन्थमालाओं का प्रकाशन करता है। अब तक संस्थान की निम्नलिखित ग्रन्थमालाएँ आरम्भ की जा चुकी हैं:–

* रजत जयन्ती ग्रन्थमाला
* स्वतन्त्र भारत स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थमाला
* संस्कृत वर्ष स्मृति ग्रन्थमाला

* पालि एवं प्राकृत अध्ययन ग्रन्थमाला
* लोकप्रिय ग्रन्थमाला/शास्त्रीय ग्रन्थमाला/दुर्लभ ग्रन्थों के पुनर्मुद्रण की ग्रन्थमाला

5.5 संस्कृत वार्ता

संस्थान् 2008 से त्रैमासिक पत्रिका 'संस्कृत वार्ता' का प्रकाशन कर रहा है। यह संस्थान-समाचार पत्रिका है। इसमें संस्थान मुख्यालय तथा इसके परिसरों की गतिविधियों और उपलब्धियों का विवरण प्रकाशित किया जाता है। अब तक इसके 19 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इस पत्रिका को बृहत्स्वरूप देते हुए अब इसे अखिल भारतीय स्तर प्रदान किया गया है।

5.6 संस्कृत पाण्डुलिपियों का संग्रहण एवं संरक्षण

i. संस्थान, संस्कृत पाण्डुलिपियों का संग्रहण तथा संरक्षण करता है। शुल्क के आधार पर संस्थाओं को पाण्डुलिपियों की प्रतियाँ भी उपलब्ध कराता है।

ii. गङ्गानाथ झा परिसर के पाण्डुलिपि–संग्रहालय में विभिन्न शास्त्रों से सम्बन्धित पचास हजार से भी अधिक पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं। जम्मू, पुरी तथा गुरुवायूर के परिसरों में भी दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ हैं।

5.7 मुक्त-स्वाध्याय-पीठ

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत विभिन्न पाठ्यक्रमों के संचालनार्थ संस्थान के मुख्यालय में मुक्त स्वाध्याय पीठ तथा स्वाध्याय केन्द्र की स्थापना की गई है। साथ ही संस्थान के ग्यारह परिसरों में स्वाध्याय केन्द्र स्थापित किये गये हैं। वर्तमान में मुक्त स्वाध्याय पीठ के द्वारा प्राक्शास्त्री, शास्त्री एवं आचार्य स्तर पर व्याकरण, साहित्य एवं ज्योतिष विषयों का अध्यापन किया जा रहा है। प्राक्शास्त्री, शास्त्री एवं आचार्य के सेतु पाठ्यक्रम भी इसके द्वारा चलाए जाते हैं। शीघ्र ही संस्कृत पत्रकारिता पाठ्यक्रम, नाट्य शास्त्र प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम, पालि/प्राकृत परिचय तथा प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम तथा हिन्दी/अंग्रेजी-संस्कृत अनुवाद शिक्षण पाठ्यक्रम भी चलाए जायेंगे।

5.8 पत्राचार के माध्यम से संस्कृत शिक्षण

देश-विदेश के प्रारम्भिक संस्कृत शिक्षणार्थियों को हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम से संस्कृत भाषा सिखाने हेतु **द्विवर्षीय पत्राचार पाठ्यक्रम** का संचालन करता है।

पत्राचार पाठ्यक्रम के अन्तर्गत गत वर्षों में विद्यार्थियों की संख्या इस प्रकार थीं-

सत्र	हिन्दी माध्यम	अंग्रेजी माध्यम	विदेशी छात्र
2010-11	731	639	05
2011-12	1051	674	10
2012-13	1656	1086	10

5.9 अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण

संस्थान के द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्रों के माध्यम से क्रमिक संस्कृत स्वाध्याय सामग्री ('दीक्षा' पाठ्यक्रम) का संचालन किया जाता है। इसके अन्तर्गत समाज के विभिन्न वर्गों तथा आयु के संस्कृत तथा संस्कृतेतर अध्येताओं जैसे शिक्षक, व्यापारी, गृहिणी, बालक, वृद्ध, डाक्टर, इंजीनियर इत्यादि नौकरी-पेशे के लोग सोत्साह लाभ ले रहे हैं। अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्र सम्पूर्ण देश में विख्यात हो रहे हैं। इनमें पढ़ाई जाने वाली स्वाध्याय सामग्री की मांग बहुत अधिक हो रही हैं।

यह योजना 2002-03 से आरम्भ हुई है। इनमें प्रशिक्षित अध्येताओं की संख्या इस प्रकार हैं-

वर्ष	केन्द्र	अध्येता
2002-03	100	4957
2003-04	1200	50273
2004-05	1218	40692
2005-06	1411	39507
2006-07	807	20342
2007-08	839	18215
2008-09	1105	29719
2009-10	1092	34598
2010-11	105 (केवल पूर्वोत्तर)	5783 (आसाम, मणिपुर व त्रिपुरा)
2011-12	1156	33668
2012-13	1125	36140

5.10 संस्कृत भाषा शिक्षक प्रशिक्षण

संस्थान, संस्कृत भाषा शिक्षण हेतु अखिल भारत स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। इसके लिए संस्थान प्रतिवर्ष प्रवेश परीक्षा आयोजित करता है। इस परीक्षा में समुत्तीर्ण अभ्यर्थियों को 20 दिन का गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। ये प्रशिक्षित अभ्यर्थी ही अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्रों में तीन-तीन महीनों के लिए पढ़ाने के लिए नियोजित किये जाते हैं।

5.11 शास्त्रीय ग्रन्थों का उन्नत शिक्षण

संस्थान शास्त्रीय ग्रन्थों के विशिष्ट अध्ययन एवं शिक्षण हेतु विशिष्टाध्ययन कार्यक्रम का आयोजन करता है।

5.12 स्वाध्याय सामग्री का निर्माण

संस्थान संस्कृत भाषा शिक्षण की मुद्रित एवं इलेक्ट्रॉनिक सामग्री का निर्माण एवं उसका प्रचार-प्रसार भी करता है। इसके अन्तर्गत संस्कृत तथा संस्कृतेतर अध्येताओं की अध्ययन सुविधा की दृष्टि से पाँच दीक्षा पाठ्यक्रम निर्धारित किये गये। इनका नामकरण इस प्रकार किया गया है -

1. प्रथमा दीक्षा (व्यवहारावतरणी)
2. द्वितीया दीक्षा (व्यवहारावगाहनी)
3. तृतीया दीक्षा (काव्यावतरणी)
4. चतुर्थी दीक्षा (काव्यावगाहनी)
5. पंचमी दीक्षा (व्युत्पादिनी)

5.13 इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से संस्कृत कार्यक्रमों का प्रसारण

संस्थान इग्नू के ज्ञानदर्शन के भाषा–मन्दाकिनी चैनल के माध्यम से प्रतिदिन संस्कृत कार्यक्रम प्रसारित करता है। डी.डी. इंडिया तथा डी.डी. भारती पर संस्कृत भाषा शिक्षण के कार्यक्रम का प्रसारण भी सप्ताह में तीन बार संस्थान के द्वारा किया जाता है।

5.14 पारम्परिक पद्धति से संस्कृत शिक्षण हेतु पाठ्यक्रम-निर्धारण

अपने परिसरों तथा सम्बद्ध संस्थाओं में पारम्परिक पद्धति से संस्कृत शिक्षण हेतु प्रथमा, पूर्व मध्यमा, उत्तरमध्यमा/प्राक्शास्त्री, शास्त्री, शिक्षा–शास्त्री, आचार्य, शिक्षाचार्य तक सभी कक्षाओं के पाठ्यक्रम का निर्धारण करता है।

5.15 परीक्षा का आयोजन

i. संस्थान परिसरों द्वारा संचालित समस्त पाठ्यक्रमों के लिए परीक्षाओं का आयोजन करता है। कक्षा 8वीं, कक्षा 10वीं, उत्तरमध्यमा/प्राक्शास्त्री (12वीं), शास्त्री (बी. ए.) और आचार्य (एम.ए.) उत्तीर्ण छात्रों के प्रमाण–पत्र/उपाधियाँ प्रदान करता हैं। कक्षा में सर्वप्रथम एवं अपने-अपने शास्त्र में सर्वप्रथम आने वाले छात्रों को 'स्वर्णपदक' प्रदान किया जाता है।

ii. शिक्षा–शास्त्री पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु अखिल भारतीय पूर्वशिक्षाशास्त्री प्रवेश परीक्षा (पी.एस.एस.टी) का आयोजन करता है।

iii. परिसरों एवं सम्बद्ध संस्थाओं के शोध–कर्ताओं को उनके शोध–प्रबन्ध के मूल्यांकन तथा मौखिक परीक्षण के पश्चात् विद्यावारिधि (पी–एच.डी.) की उपाधि प्रदान करता है।

5.16 परिसरों की स्थापना

संस्थान पारम्परिक पद्धति से संस्कृत शिक्षण हेतु देश के विविध प्रान्तों में अपने परिसरों की स्थापना, अधिग्रहण व संचालन करता है। वर्तमान में संस्थान के नई दिल्ली

स्थित मुख्यालय सहित इसके बारह अंगभूत परिसर हैं। हरियाणा तथा पश्चिम बंगाल में दो परिसरों की स्थापना विचाराधीन है।

5.17 संस्कृत संस्थाओं की सम्बद्धता

संस्थान संस्कृत में विभिन्न पाठ्यक्रमों के संचालन हेतु अन्यान्य संस्कृत संस्थाओं को सम्बद्धता जारी रखता है।

5.18 छात्रवृत्तियाँ

संस्थान देश भर में अपने अंगभूत परिसरों तथा अन्य शैक्षणिक संस्थाओं में अध्ययनरत संस्कृत के सुयोग्य छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान करता है। ये छात्रवृत्तियाँ दो प्रकार की है:–

i. उच्चमाध्यमिकोत्तर छात्रवृत्तियाँ (स्नातकोत्तर स्तर तक)

ii. शोधछात्रवृत्तियाँ

5.19 केन्द्र सरकार की योजनाएँ

संस्थान संस्कृत भाषा और साहित्य के संवर्धन तथा प्रचार हेतु मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रवर्तित निम्नलिखित विविध योजनाओं का कार्यान्वयन करता है:–

5.19.1 शास्त्र चूडामणि योजना

इस योजना के अन्तर्गत संस्कृत के विख्यात सेवा–निवृत्त विद्वानों को संस्थान के परिसरों तथा अन्य संस्कृत संस्थाओं में दो वर्ष की अवधि (एक वर्ष के लिए वर्धनीय) के लिए नियुक्त किया जाता है। वे शिक्षकों और छात्रों को संस्कृत वाङ्मय के विभिन्न शास्त्रों/विद्या विशेषों में गहन शिक्षण प्रदान करते हैं। वर्तमान में इस योजना में लगभग 100 विद्वान् कार्यरत हैं।

5.19.2 ग्रन्थ-क्रय योजना

इस योजना के अन्तर्गत संस्थान लेखकों और प्रकाशकों से संस्कृत ग्रन्थों का क्रय करके संस्कृत संस्थाओं को नि:शुल्क वितरित करता है।

5.19.3 संस्कृत शब्दकोश परियोजना

ऐतिहासिक सिद्धान्तों के आधार पर 1500 ई.पू. से 1900 ई. तक की अवधि का एक अति व्यापक संस्कृत शब्दकोश डेक्कन कॉलेज, पूना के द्वारा तैयार किया जा रहा है जिसे संस्थान के माध्यम से वित्तीय सहायता दी जाती है।

5.19.4 व्यावसायिक प्रशिक्षण योजना

इस योजना के अन्तर्गत चुने हुए संगठनों को ज्योतिष, कर्म–काण्ड, पुरालिपि-शास्त्र, सूची-निर्माण, पाण्डुलिपि विज्ञान, संस्कृत आशुलिपि और टंकण आदि विषयों में

कार्यशालाओं के आयोजन हेतु तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण देने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

5.19.5 आदर्श संस्कृत महाविद्यालयों/शोध संस्थानों के रूप में मान्यता प्राप्त संस्थाओं को वित्तीय सहायता

इस योजना के अन्तर्गत देश के विभिन्न भागों में 21 आदर्श संस्कृत महाविद्यालय तथा 4 आदर्श संस्कृत शोध संस्थाएँ संस्थान के अधीन चल रही हैं। इन संस्थाओं को व्यय की आवर्ती मदों पर 95 प्रतिशत तथा अनावर्ती मदों पर 75 प्रतिशत अनुदान दिया जाता है। चेन्नई तथा कोलकाता में दो आदर्श शोध संस्थानों की स्थापना के लिए प्रयास किये जा रहे हैं।

5.19.6 भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित विद्वानों को मानदेय राशि

संस्थान द्वारा संचालित मानव संसाधन विकास मंत्रालय की इस योजना में भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रतिवर्ष सम्मानित संस्कृत के 15, पालि या प्राकृत का 1, अरबी के 3 और फारसी के 3 प्रख्यात विद्वानों को 50,000/- (पचास हजार/प्रति व्यक्ति) रुपए की वार्षिक मानदेय राशि प्रदान की जाती थी। वर्ष 2008-09 से राष्ट्रपति सम्मानित विद्वानों को एक मुश्त (One time payment) 5,00,000/- (पाँच लाख) रुपए दिये जा रहे हैं। युवा संस्कृत विद्वान् के सम्मानार्थ एकमुश्त रु. एक लाख का 'महर्षि बादरायण पुरस्कार' भी दिया जाता है। वर्ष 2009-10 से अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विदेशी संस्कृत विद्वान् के लिये भी राष्ट्रपति प्रमाणपत्र सम्मान प्रारंभ किया गया है, जिसकी एकमुश्त राशि (One time payment) 5,00,000/- (पाँच लाख) रुपए है।

5.19.7 अखिल भारतीय शास्त्रीय स्पर्धा

संस्थान प्रत्येक वर्ष देश के विभिन्न भागों में आठ शास्त्रीय विषयों पर 'अखिल भारतीय शास्त्रीय स्पर्धा' आयोजित करता है जिससे पारम्परिक संस्कृत छात्रों को शास्त्रीय संस्कृत भाषा में आशुभाषण में प्रोत्साहित किया जा सके। श्लोकान्त्याक्षरी तथा समस्या-पूर्ति प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जाता है। उपर्युक्त दस विषयों के अतिरिक्त 'शास्त्र शलाका परीक्षा' का भी आयोजन किया जाता है। वर्ष 2009-10 से प्रादेशिक स्तर पर भी इन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है।

5.19.8 स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों को वित्तीय सहायता

इस योजना के अन्तर्गत चयनित संगठनों के संस्कृत शिक्षकों को वेतन, छात्रों की छात्रवृत्ति, पुस्तकालय अनुदान और संस्था के भवन-निर्माण के रूप में वित्तीय सहायता दी जाती है।

5.20 अन्ताराष्ट्रिय सहयोग

संस्थान, अन्ताराष्ट्रिय समितियों (अन्ताराष्ट्रिय संस्कृत अध्ययन समवाय IASS - International Association of Sanskrit Studies, Paris) के सहयोग से अन्ताराष्ट्रिय

स्तर पर संस्कृत सम्मेलनों का आयोजन करता है। शिकागो विश्वविद्यालय के SARIT (Search and Retrieval of Indic Texts) के द्वारा ई-टेक्स्ट प्रोजेक्ट में टाईप किये गये पाठ्य को TEI & XML में परिवर्तित कराया जा रहा है। ECAF - (European Consortium for Asian Field Study), Paris के संयुक्त तत्त्वावधान में संस्कृत सम्बन्धी कार्यक्रम आयोजित करने के लिए MOU - Memorandum of Understanding किया गया। इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है कि संस्थान ने प्रथम विश्व संस्कृत सम्मेलन का आयोजन नई दिल्ली में वर्ष 1972 में, पञ्चम विश्व संस्कृत सम्मेलन का आयोजन वाराणसी में वर्ष 1981 में और दशम विश्व संस्कृत सम्मेलन का आयोजन बेंगलूर में 3-9 जनवरी 1997 में किया था। संस्थान की ओर से एडिनबरा में आयोजित 13वें विश्व संस्कृत सम्मेलन में संस्कृत कवि सम्मेलन तथा शास्त्रचर्चा–ये दो विशेष सत्र प्रायोजित किये गये। क्योटो (जापान) में आयोजित 14वें विश्व संस्कृत सम्मेलन में संस्थान द्वारा संस्कृत कवि सम्मेलन, शास्त्र चर्चा तथा संस्कृत नाट्य–प्रस्तुति प्रायोजित किये गये। '15वाँ विश्व संस्कृत सम्मेलन', जनवरी 2012 में नई दिल्ली में संस्थान की ओर से आयोजित किया गया। '16वाँ विश्व संस्कृत सम्मेलन' का आयोजन बैंकाक (थाईलैंड) में आयोजित होना प्रस्तावित है।

5.21 संस्कृत तथा भारतीय बोलियों/उप बोलियों के कोश की योजना

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने संस्कृत तथा भारतीय बोलियों/उप बोलियों के कोश की योजना प्रारम्भ की। यह कार्य भोपाल तथा कोलकाता में किया जा रहा है। कोलकाता में संस्कृत तथा बंगला व ओड़िया की बोलियों/उपबोलियों से सम्बन्धित तथा भोपाल में संस्कृत तथा बुन्देलखण्डी की बोलियों/उपबोलियों से सम्बन्धित कोश निर्माण कार्य प्रगति पर है।

5.22 ई-टेक्स्ट, ई-पाठ्यक्रम तथा पाठ्यक्रम में नवाचार

5.22.1 ई-टेक्स्ट

संस्थान ने वेब में संस्कृत की दुर्लभ ग्रन्थों को उपलब्ध कराने का संकल्प किया है। अब तक 109 पुस्तकों को वेबसाईट पर अन्तर्विन्यस्त किया जा चुका है।

5.22.2 डिजिटल-ग्रन्थ

700 डिजिटल पुस्तकें वेब से संस्थापित हैं। इलाहाबाद स्थित गंगानाथ झा परिसर के ग्रन्थालय में 700 दुर्लभ ग्रन्थों का IIIT इलाहाबाद तथा IISC बैंगलुरु के सहयोग से डिजिटाईजेशन हो चुका है।

5.22.3 डिजिटाईजेशन

52000 पाण्डुलिपियों के डिजिटाइजेशन का कार्य इलाहाबाद परिसर में राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के सहयोग से चल रहा है। 28000 पाण्डुलियां अब तक डिजिटाइज्ड हो गई हैं।

5.22.4 आन-लाईन-ग्रन्थालय

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के दसों परिसरों के ग्रन्थालयों की पुस्तकों का डाटाबेस 2010 में श्रावणी पूर्णिमा के अवसर पर वेबसाईट में National Informatics Centre (NIC) दिल्ली के सहयोग से संस्थापित किया गया। पुस्तकालयों में प्राप्त होने वाली नूतन पुस्तकों की सूची भी निरन्तर प्रतिस्थापित की जा रही हैं। अब तक 69402 पुस्तकों का डाटाबेस तैयार हो चुका है।

5.22.5 व्यावसायिक पाठ्यक्रम

संस्थान में शास्त्री (स्नातक) स्तर तक संगणक (कम्प्यूटर) तथा पर्यावरण की शिक्षा अनिवार्य है। संस्कृत छात्रों में औद्योगिक दक्षता के विकास के लिये कतिपय रोजगारोन्मुख डिप्लोमा व प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम भी शीघ्र प्रारंभ किये जायेंगे। (परिसरों में कम्प्यूटर शिक्षा पाठ्यक्रम में पूर्व से ही शामिल है।)

5.23 अन्तःपरिसरीय युवा महोत्सव

सन् 2008 से संस्थान 'अन्तःपरिसरीय युवा महोत्सव' का आयोजन करता है, जिसमें खेलकूद एवं शास्त्रीय एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। पुरी, जयपुर, गुरुवायूर, जम्मू तथा भोपाल परिसरों में अन्तःपरिसरीय युवा महोत्सव आयोजित हो चुके हैं। अग्रिम युवा महोत्सव लखनऊ में अक्टूबर, 2013 को आयोजित किया जाना प्रस्तावित है।

5.24 अखिल भारतीय संस्कृत विश्वविद्यालय युवा महोत्सव

पूर्वोत्तर राज्य असम के गुवाहाटी में दिनांक 16-18 मार्च, 2013 तक संस्थान के तत्त्वावधान में युवा महोत्सव का सफल आयोजन किया गया, जिसमें देश के 7 संस्कृत विश्वविद्यालयों की सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं खेलकूद की दलों (टीमों) ने भाग लिया।

5.25 अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन

मार्च 2009 से प्रतिवर्ष अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन 'कवि भास्करी' नामक शृंखला प्रारम्भ किया गया। कवियों के द्वारा प्रस्तुत कविताओं का पुस्तकाकार रूप में प्रकाशन भी हो रहा है। 2012 में सम्पन्न 15वें विश्व संस्कृत सम्मेलन के अवसर पर इसका चतुर्थ संस्करण लोकार्पित हो चुका है।

5.26 राष्ट्रिय संस्कृत नाट्यमहोत्सव

मार्च 2009 से प्रतिवर्ष 'अखिल भारतीय संस्कृत नाट्योत्सव' का आयोजन किया जा रहा है। प्रथम अखिल भारतीय संस्कृत नाट्योत्सव भोपाल के 'भारत भवन' में आयोजित हुआ। इसके साथ त्रिदिवसीय रंगमंच पर परिसंवाद आयोजित किया गया। उसके बाद पूर्वोत्तर के अगरतला तथा मध्यप्रदेश के सागर विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय संस्कृत नाट्योत्सव आयोजित हो चुके हैं। 09 व 10 मार्च, 2012 को भोपाल परिसर में चतुर्थ राष्ट्रिय संस्कृत नाट्यमहोत्सव आयोजित किया गया। 01 मार्च, 2013 से 03 मार्च, 2013 तक वेदव्यास परिसर में पंचम राष्ट्रिय संस्कृत नाट्यमहोत्सव सम्पन्न हुआ।

5.27 संस्कृत-नाट्यमहोत्सव (अन्तःपरिसरीय संस्कृत नाट्य स्पर्धा)

सन् 2004 से संस्थान अन्तःपरिसरीय संस्कृत नाट्य स्पर्धा 'कौमुदीमहोत्सव' नाम से आयोजन कर रहा है। अब तक 100 संस्कृत नाटकों का प्रदर्शन किया गया। प्रारंभ में इसका नाम 'वसन्तोत्सव' था। 05-07 फरवरी, 2013 को नई दिल्ली के एल.टी.जी. प्रेक्षागृह में दशम संस्कृत-नाट्यमहोत्सव (अन्तः परिसरीय संस्कृत नाट्य स्पर्धा) का सफल आयोजन किया गया।

5.28 संस्कृत सप्ताहोत्सव

संस्थान श्रावणी पूर्णिमा के शुभ अवसर पर संस्कृत दिवस तथा संस्कृत सप्ताहोत्सव का आयोजन करता है जिसमें विद्वत्सपर्या, कविसपर्या, शास्त्र चर्चा, विद्यालयीय विद्यार्थियों के संस्कृत भाषण स्पर्धा, श्लोक स्पर्धा तथा निबन्ध स्पर्धा का आयोजन किया जाता है।

5.29 उत्तर-पूर्व राज्यों में संस्कृत सम्मेलन

सन् 2009 से संस्थान उत्तर पूर्व राज्यों में संस्कृत सम्मेलन का आयोजन कर रहा है। अब तक यह सम्मेलन गैंगटौक, सिलचर, गौहाटी, अगरतला, दीमापुर एवं मणिपुर में सम्पन्न हो चुके हैं।

5.30 प्राकृत परियोजना

प्राकृत परियोजना के अन्तर्गत संस्थान में विभिन्न गतिविधियाँ चल रही हैं। सन् 2009 से राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान त्रिदिवसीय राष्ट्रीय प्राकृत संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। प्रथम संगोष्ठी जुलाई माह में जयपुर में सम्पन्न हुई। प्राकृत अध्ययन ग्रन्थमाला के अन्तर्गत 'प्राकृत साहित्य और भारतीय परम्पराएँ' नामक ग्रन्थ प्रकाशित किया जा चुका है। लखनऊ-परिसर में मार्च 2010 में पालि-प्राकृत-संस्कृतभाषाओं के अन्तःसम्बन्ध विषयक द्विदिवसीय राष्ट्रिय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 2010 तथा 2011 में तीन पालि-प्राकृत-संस्कृतच्छाया कार्यशालाएँ लखनऊ-परिसर में आयोजित हो चुकी हैं। 2010 में प्राकृत पाण्डुलिपि कार्यशाला का आयोजन जयपुर-परिसर के प्राकृत अध्ययन केन्द्र के द्वारा आयोजित किया गया। अक्टूबर 2010 में कर्णाटक राज्य के श्रवणबेलगोला में बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ के सहयोग से संस्थान ने अन्ताराष्ट्रिय प्राकृत सम्मेलन आयोजित किया। प्राकृत के मूल ग्रन्थों की संस्कृत छाया, आन लाइन प्राकृत-संस्कृतच्छाया-हिन्दी शब्दकोश तथा शोध कार्य जयपुर-परिसर, लखनऊ-परिसर तथा संस्थान मुख्यालय में चल रहे हैं। प्राकृत भाषा अध्ययन केन्द्र जयपुर में संचालित किया जा रहा है।

5.31 पालि परियोजना

संस्थान में पालि परियोजना के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रम तथा गतिविधियाँ चलायी जा रही हैं। सन् 2009 से राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान त्रिदिवसीय पालि भाषा विषयक सम्मेलन

का आयोजन करता आ रहा है। सितम्बर 2009 में प्रथम अन्ताराष्ट्रिय पालि संगोष्ठी का आयोजन दिल्ली में हुआ। इस संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेखों का पुस्तकाकार रूप में 'बौद्धपरम्पराया: वैश्विकसन्देश: - पालिसाहित्यस्य विशेषसन्दर्भे' शीर्षक से प्रकाशन हो चुका है। 2010 तथा 2011 में तीन पालि-प्राकृत-संस्कृतच्छाया कार्यशालाएँ लखनऊ-परिसर में आयोजित हो चुकी हैं। लखनऊ-परिसर में मार्च 2010 में पालि-प्राकृत-संस्कृतभाषाओं के अन्त:सम्बन्ध विषयक द्विदिवसीय राष्ट्रिय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 16-18 सित., 2011 को पूर्वोत्तर राज्य के 'गंगटोक' (सिक्किम) में भारतीय बौद्धाध्ययन सभा, जम्मू विश्वविद्यालय के सहयोग से 11वाँ वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया गया। पालि त्रिपिटक की संस्कृत छाया तथा शोध कार्य लखनऊ-परिसर तथा संस्थान मुख्यालय में चल रहे हैं। पालि अध्ययन केंद्र लखनऊ परिसर में सक्रिय है।

5.32 हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस

संस्थान के द्वारा प्रतिवर्ष 14 सितम्बर से 30 सितम्बर तक हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया जाता है। संस्थान मुख्यालय तथा उसके परिसरों में हिन्दी भाषा में कार्यालयीय कार्य को बढ़ावा देने हेतु कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है तथा विजेताओं को पुरस्कृत किया जाता है। इस अवसर पर हिन्दी के विशिष्ट विद्वानों को हिन्दी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए सम्मानित किया जाता है। 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस एवं 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

5.33 परिसरों में स्थापित विशिष्ट अध्ययन/अनुसन्धान केन्द्र

संस्थान के द्वारा अपने परिसरों में अध्ययन/अनुसन्धान की विशिष्ट गतिविधियों के संचालन तथा पाठ्यक्रमेतर छात्रोपयोगी कार्यक्रमों के प्रोत्साहन हेतु निम्नलिखित केन्द्र स्थापित किये गये हैं–

i. महिला अध्ययन केन्द्र, वेदव्यास परिसर
ii. व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र, मुम्बई परिसर
iii. नाट्यशास्त्र अध्ययन केन्द्र, भोपाल परिसर
iv. संस्कृत में वैज्ञानिक परम्परा पर केन्द्रित संग्रहालय, मुम्बई परिसर
v. पालि अध्ययन केन्द्र, लखनऊ परिसर
vi. प्राकृत अध्ययन केन्द्र, जयपुर परिसर
vii. शास्त्रानुशीलन केन्द्र, शृङ्गेरी परिसर

5.34 संस्कृत विद्वत्परिचायिका

संस्थान के द्वारा संस्कृत के प्रतिष्ठित विद्वानों का डाटाबेस तैयार करने की दृष्टि से Who is who (संस्कृत विद्वत्परिचायिका) परियोजना चलाई जा रही है। इसका प्रथम

भाग प्रकाशित हो चुका है तथा द्वितीय भाग शीघ्र प्रकाशित होगा। इसके प्रथम भाग को संस्थान की वेबसाईट पर भी देखा जा सकता है। इसका फार्म भी वेबसाईट पर उपलब्ध है।

5.35 ग्रन्थ विक्रय

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान तथा इसके अंगीभूत परिसरों के द्वारा विभिन्न परियोजनाओं तथा प्रकाशनमालाओं के माध्यम से प्रकाशित लोकोपयोगी साहित्य का प्रकाशन करके उचित मूल्य पर उनके विक्रय की सुविधा संस्थान मुख्यालय तथा परिसरों में उपलब्ध है। छात्रों तथा पाठकों को न्यूनतम मूल्य में संस्थान द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ विक्रय किये जाते हैं।

6. संस्थान के पूर्वतन कार्यकारी-अधिकारी

अध्यक्ष

प्रो. वी.के.आर.वी. राव	1970	1972
प्रो. नूरूल हसन	1973	1975
प्रो. डी.पी. यादव	1976	
डॉ. पी.सी. चंदर	1977	
श्रीमती रेणुका बरकत्की	1977	1979
डॉ. कर्ण सिंह	1980	
श्रीमती शीला कौल	1981	
श्री पी.के. थुंगन	सित. 1982	सित. 1984
श्री के.सी. पंत	मार्च 1985	
श्री पी.वी. नरसिंहा राव	1986	1988
श्री पी. शिवशंकर	1988	
श्री चिमन भाई मेहता	1990	
श्री राज मंगल पाण्डेय	1991	
श्री अर्जुन सिंह	1991	1992
कुमारी शैलजा	1993	
श्री अर्जुन सिंह	1994	
श्री माधवराव सिंधिया	1995	
श्री एस.आर. बोम्मई	1996	1998
डॉ. मुरली मनोहर जोशी	1998	मई 2004

उपाध्यक्ष

डॉ. भक्त दर्शन	1970	1972
प्रो. डी.पी. यादव	1972	1976
डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन	1980	1981
डॉ. किरीट जोशी	1983	1987
श्रीमती कृष्णा शाही	1987	
डॉ. एल.पी शाही	1987	1989
डॉ. भाग्य गोवर्धन	1990	1991
डॉ. के.एन. राव	1991	1993
कुमारी शैलजा	1995	
डॉ. के.एस. भोई	1995	
श्री एम.आर. सैकिया	1996	1998
डॉ. सरोजिनी महिषी	1998	2001
डॉ. एन. गोपालस्वामी	अक्टू. 2001	फर. 2004

निदेशक

डॉ. रामकरण शर्मा (अति. प्रभार)	1970	1974
श्री पी.सी. शर्मा (अति. प्रभार)	1975	
श्री एस.के. चतुर्वेदी (अति. प्रभार)	1975	
श्री के.के. सेठी IAS (अति. प्रभार)	1976	1978
श्री के.के. खुल्लर (अति. प्रभार)	1979	
डॉ. रामकरण शर्मा (अति. प्रभार)	1981	1983
डॉ. मण्डन मिश्र (अति. प्रभार)	1983	1989
श्री पी.के. पंवार IAS (अति. प्रभार)	1990	
डॉ. मधुसूदन मिश्र (अति. प्रभार)	मार्च 1990	दिस. 1990
श्री पी. ठाकुर IAS (अति. प्रभार)	जन. 1991	फर. 1994
डॉ. कमलाकान्त मिश्र (पूर्णकालिक)	1994	फर. 1999
प्रो. वाचस्पति उपाध्याय (अति. प्रभार)	फर. 1999	नव. 1999
प्रो. वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री (पूर्णकालिक)	नव. 1999	मई 2002

7. 7 मई 2002 से राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मानित विश्वविद्यालय घोषित होने के बाद कार्यकारी अधिकारी

कुलाधिपति

डॉ. मुरली मनोहर जोशी	30 जुलाई, 2002	10 जून, 2004
श्री अर्जुन सिंह	11 जून, 2004	30 मई, 2008
श्री कपिल सिब्बल	31 मई, 2009	27 अक्टूबर, 2012
डॉ. एम.एम. पल्लम राजु	28 अक्टूबर, 2012	.....

कुलपति

प्रो. वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री	12 मई, 2002	11 मई, 2008
डॉ. अनिता भटनागर जैन (अति. प्रभार)	12 मई, 2008	13 अगस्त, 2008
प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी	14 अगस्त, 2008	---

8. कार्यकारी संरचना

मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत-सरकार संस्थान का पदेन प्रधान होता है। कुलपति इस संस्थान का प्रधान कार्यपालक अधिकारी होता है। वे संस्थान के मामलों पर सामान्य पर्यवेक्षण तथा नियन्त्रण रखते हैं, नीतियों और कार्यक्रमों का निष्पादन करते हैं तथा संस्थान के सभी प्राधिकारियों के निर्णयों को लागू करते हैं।

संस्थान की कार्यकारी संरचना इस तरह है-

8.1 राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के कार्यकारी अधिकारी

* **कुलाधिपति–** भारत शासन के मानव संसाधन विकास मन्त्री राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के पदेन कुलाधिपति होते हैं।

* **कुलपति–** कुलपति राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के सर्वप्रमुख कार्यपालक अधिकारी है। कुलपति की देख-रेख तथा सान्निध्य में सभी निर्णय लिये जाते हैं। वे संस्थान के मामलों पर सामान्य पर्यवेक्षण तथा नियन्त्रण रखते हैं और नीतियों व कार्यक्रमों का निष्पादन करते हैं। कुलपति संस्थान के सभी प्राधिकारियों के निर्णयों को लागू करते हैं।

* **कुलसचिव–** राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) में कुलसचिव सभी प्राशासनिक कार्यों के कार्यान्वयन, नियन्त्रण तथा सञ्चालन के प्रति उत्तरदायी होते हैं।

8.2 प्रबन्धन मण्डल

यह संस्थान में प्रबन्धन का प्रमुख अंग है। नीति-निर्णयों के निर्धारण तथा निर्णयों के कार्यान्वयन एवं प्रतिपादन हेतु यह अधिकार-सम्पन्न है।

8.3 विद्वत् परिषद्

शिक्षा, शिक्षण, प्रशिक्षण, परीक्षा और शोध कार्यक्रमों के मानदण्डों के अनुरक्षण हेतु उत्तरदायी प्रधान शैक्षिक निकाय है।

8.4 योजना तथा परिवीक्षण मण्डल

यह विकास कार्यक्रमों के परिवीक्षण हेतु उत्तरदायी प्रमुख योजना निकाय है।

8.5 वित्त समिति

प्रबन्धन मण्डल के समक्ष वार्षिक लेखा व वित्तीय प्राक्कलन रखने, कुल व्यय की सीमाएँ निर्धारित करने और हर प्रकार के पदों के सृजन की संस्तुति हेतु यह उत्तरदायी प्रमुख वित्त निकाय है।

उपर्युक्त निकायों के अतिरिक्त संस्थान में अन्य निकाय भी हैं, जो अपने-अपने कार्य के स्वरूप के आधार पर संस्तुतियाँ तैयार करते हैं, यथा–सहायता अनुदान समिति, प्रकाशन समिति, छात्रवृत्ति-चयनसमिति, शोधमण्डल तथा परीक्षामण्डल इत्यादि।

9. संस्थान के सभी प्रभागों का परिचय और गतिविधियाँ

अपने समृद्ध पुस्तकालय के अतिरिक्त राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान निम्नलिखित प्रमुख अनुभागों के माध्यम से कार्य करता है–

अ. शैक्षणिक अनुभाग, आ. शोध एवं प्रकाशन अनुभाग, इ. मुक्तस्वाध्यायपीठम् (दूरस्थ शिक्षा), ई. पत्राचार पाठ्यक्रम अनुभाग, उ. अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण अनुभाग, ऊ. परीक्षा अनुभाग, ऋ. प्रशासन अनुभाग, ॠ. वित्त अनुभाग, ऌ. योजना अनुभाग, ए. परियोजना अनुभाग, ऐ. विक्रय अनुभाग, ओ. सूचना का अधिकार प्रकोष्ठ, औ. आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ।

अ. शैक्षणिक अनुभाग

यह अनुभाग शैक्षिक कार्यों के निष्पादन हेतु मानक-निर्धारण, शैक्षिक-कार्यक्रमों के कैलेंडर निर्माण तथा विविध पाठ्यक्रमों हेतु पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार करने के लिए प्रमुखतया उत्तरदायी है।

आ. शोध तथा प्रकाशन अनुभाग

यह अनुभाग संस्थान के विभिन्न योजनाओं के कार्यान्वयन तथा अंगीभूत परिसरों के शोध तथा प्रकाशन गतिविधियों के समन्वयन, शोध तथा प्रकाशन कार्यक्रमों और संस्थान के परियोजनाओं के समन्वय से सम्बद्ध है। यह संस्कृत साहित्य के निर्माण हेतु वित्तीय सहायता तथा पुस्तकों के थोक क्रय जैसी योजनाओं से भी सम्बद्ध है। दिल्ली मुख्यालय से मुक्तस्वाध्यायपीठम् के अध्यापकों के निर्देशन में 25 छात्र शोध कार्य कर रहे हैं।

इ. मुक्तस्वाध्यायपीठम् (दूरस्थ शिक्षण संस्था)

मुक्तस्वाध्यायपीठ अनुभाग के अंतर्गत विभिन्न पाठ्यक्रमों के संचालनार्थ दूरस्थ शिक्षा प्रक्रिया के अनुसार संस्थान मुख्यालय, नई दिल्ली तथा इसके सभी अंगीभूत परिसरों में स्वाध्याय केन्द्रों की स्थापना की गई है।

वर्तमान में मुक्त स्वाध्याय पीठ के अन्तर्गत निम्नोक्त पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं-

1. **प्राक् शास्त्री** (द्विवर्षीय) - साहित्य, व्याकरण, फलित ज्योतिष
2. **शास्त्री** (त्रिवर्षीय) - साहित्य, व्याकरण, फलित ज्योतिष
3. **आचार्य** (द्विवर्षीय) - साहित्य, व्याकरण, फलित ज्योतिष
4. **प्राक् शास्त्री सेतुपाठ्यक्रम** (षाण्मासिक) - संस्कृतावतरणी
5. **शास्त्री सेतुपाठ्यक्रम** (एक वर्ष) - संस्कृतावगाहनी
6. **आचार्य सेतुपाठ्यक्रम** (एक वर्ष) - शास्त्रावगाहनी

ई. पत्राचार पाठ्यक्रम

यह अनुभाग पत्राचार पाठ्यक्रमों की व्यवस्था हेतु उत्तरदायी है। ये पाठ्यक्रम दो स्तरों पर दिये जाते हैं।

क. संस्कृत के प्रथम वर्ष में प्रारम्भिक पाठ्यक्रम (हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम)

ख. संस्कृत के द्वितीय वर्ष में प्रारम्भिक पाठ्यक्रम (हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम)

उ. अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण अनुभाग

यह अनुभाग सम्पूर्ण भारत में अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्रों का प्रबन्ध करता है तथा अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण हेतु पाठ्यसामग्री का निर्माण करता है।

ऊ. परीक्षा अनुभाग

परीक्षा अनुभाग निम्नलिखित पाठ्यक्रमों हेतु वार्षिक और पूरक परीक्षाओं का आयोजन करता है :

1. प्रथमा, 2. मध्यमा, 3. उत्तमध्यमा, 4. प्राक्-शास्त्री, 5. शास्त्री तथा 6. आचार्य। इन परीक्षाओं का मूल्याकंन कार्य भी परीक्षा अनुभाग के द्वारा संपादित किया जाता है।

परीक्षा अनुभाग के माध्यम से, संस्थान द्वारा शिक्षा-शास्त्री (बी.एड्.) तथा शिक्षाचार्य (एम.एड्.) पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु प्रतिवर्ष प्रवेशपरीक्षा का संचालन किया जाता है। विद्यावारिधि (पीएच्. डी.) कार्यक्रम में पंजीकरण हेतु पूर्व-शोध परीक्षा भी परीक्षा अनुभाग द्वारा ली जाती है।

परिसरों तथा सम्बद्ध संस्थाओं के छात्रों को शोध उपाधि 'विद्यावारिधि' (पीएच्.डी.) से पुरस्कृत करने हेतु यह शोध-प्रबन्ध का मूल्यांकन तथा मौखिक परीक्षा की भी व्यवस्था करता है।

इसके अतिरिक्त परीक्षा अनुभाग के द्वारा उक्त पाठ्यक्रमों के अंक पत्र, प्रमाण पत्र, प्रव्रजन प्रमाण पत्र तथा श्रेणी सुधार आदि कार्य भी किये जाते हैं।

ऋ. प्रशासन अनुभाग

प्रशासन अनुभाग संस्थान और उसके अंगीभूत परिसरों के सामान्य प्रशासनिक कार्यों की देखभाल करता है। यह नियुक्तियों, पदस्थापनों, स्थानान्तरणों तथा अन्य स्थापना सम्बन्धी कार्यों की योजना भी बनाता है। साथ ही यह परिसरों के प्रशासन पर भी पूर्ण रूप से नियन्त्रण रखता है।

ॠ. वित्त अनुभाग

यह अनुभाग बजट का विवरण, अनुदान का वितरण, वित्तीय व्यवस्था तथा वार्षिक लेखा-जोखा आदि तैयार करता है। यह भविष्य निधियों का भी प्रबन्धन करता है और छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्तियों के संवितरण की व्यवस्था करता है।

ऌ. योजना अनुभाग

यह अनुभाग स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करना, शास्त्र चूड़ामणि विद्वानों की नियुक्ति, विभिन्न संस्कृत पाठशालाओं/विद्यालयों/स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों/विश्वविद्यालयों में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के आयोजन हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करना, संस्कृत विकास योजना के अन्तर्गत परम्परागत एवं राजकीय विद्यालयों में संस्कृत व आधुनिक विषयों के शिक्षक उपलब्ध कराने हेतु तथा विश्वविद्यालयों/एन.जी. ओ. को विभिन्न परियोजनाओं हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करना, भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित विद्वानों को आर्थिक अनुदान देना, आदर्श संस्कृत महाविद्यालयों/शोध संस्थानों और संस्कृत शब्दकोश परियोजना को वित्तीय सहायता प्रदान करने जैसी विभिन्न योजनाओं के उचित कार्यान्वयन हेतु उत्तरदायी है। यह अनुभाग संस्कृत के पारम्परिक छात्रों के लिए अखिल भारतीय वाक्स्पर्धा का आयोजन भी करता है।

ए. परियोजना अनुभाग

इस अनुभाग के अन्तर्गत विभिन्न परियोजनाओं, वार्षिक कार्यक्रमों, नाट्य स्पर्धाओं, संगोष्ठियों व सम्मेलनों तथा विभिन्न उत्सवों का संचालन किया जाता है। परियोजना अनुभाग के अन्तर्गत पालि विकास परियोजना, प्राकृत विकास परियोजना, सांख्ययोग परियोजना, भाषामन्दाकिनी, विद्वत् परिचायिका, उर्दू-संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश परियोजना,

पुस्तकालय नेटवर्किंग, आनलाईन संस्कृत भाषा अध्यापन, सारस्वत सर्वस्वम्, भारतीय बोलियों/ उपबोलियों की शब्दकोश परियोजना, ई-टेक्स्ट, ग्रंथों एवं पाण्डुलिपियों का डिजिटाईजेशन इत्यादि परियोजनाएँ क्रियान्वित हो रही हैं। वार्षिक कार्यक्रमों में संस्कृत सप्ताहोत्सव, युवमहोत्सव, स्थापना दिवस, नाट्य महोत्सव, अखिल भारतीय संस्कृत नाट्योत्सव, हिन्दी पखवाड़ा, विभिन्न कार्यशालाएँ तथा सम्मेलन इस अनुभाग के द्वारा समायोजित किये जाते हैं। यह अनुभाग संस्थान के द्वारा प्रवर्तित व्याख्यानमालाओं के आयोजन को भी सुनिश्चित करता है।

ऐ. विक्रय अनुभाग

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान लोकोपयोगी तथा प्राचीन ग्रन्थों के प्रकाशन, पुनः प्रकाशन तथा पुनर्मुद्रण इत्यादि के द्वारा जन-जन तक संस्कृत साहित्य पहुँचाने हेतु कटिबद्ध है। मानव संसाधन विकास मन्त्रालय तथा संस्थान की विभिन्न ग्रन्थमालाओं के माध्यम से ग्रन्थों का प्रकाशन करके न्यूनतम मूल्य पर उन्हें विक्रय करने की सुविधा प्रदान करता है। इस अनुभाग के द्वारा संस्कृत की पाठ्य सामग्री तथा दृश्य-श्रव्य सामग्री को सी.डी. तथा डी.वी.डी. माध्यम में भी विक्रय किया जाता है।

ओ. सूचना का अधिकार प्रकोष्ठ

सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 के प्रावधानों के सफल कार्यान्वयन हेतु मुख्यालय में सूचना का अधिकार प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है। एक केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी (सी.पी.आई.ओ.) तथा एक सहायक केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी (ए.सी.पी. आई.ओ.) की नियुक्ति मुख्यालय में की गई है। समस्त परिसरों के प्राचार्य / प्रभारी प्राचार्य वहाँ के जन सूचना अधिकारी हैं। प्रथम अपीलीय अधिकारी, कुलसचिव, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) हैं।

औ. आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (आई.क्यू.ए.सी.)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्णयानुसार सभी उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा अपने यहाँ आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (आई.क्यू.ए.सी.) की स्थापना करनी चाहिए। आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ का उद्देश्य उच्च शिक्षा संस्थानों मे गुणवत्ता आश्वासन (क्यू.ए.) एवं गुणवत्ता वृद्धि (क्यू.ई.) सम्बन्धी गतिविधियों की योजना बनाना, मार्गदर्शन करना तथा अनुवीक्षण करना है। इसके आलोक में संस्थान में आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ का पुनर्गठन किया गया है।

10. प्रमुख वार्षिक कार्यक्रम

1. पूर्वोत्तर संगोष्ठी
2. संस्कृत सप्ताहोत्सव

अ. विद्वत् सपर्या

ब. कवि सपर्या

स. दिल्ली राज्य के विद्यार्थियों की संस्कृत स्पर्धायें

3. संस्कृत दिवस
4. अ. अन्त:परिसरीय युवमहोत्सव

ब. अखिलभारतीय संस्कृत विश्वविद्यालय युवमहोत्सव

5. स्थापना दिवस
6. अखिलभारतस्तरीय शास्त्रीय स्पर्धा
7. अन्त:परिसरीय नाट्यमहोत्सव
8. अखिल भारतीय संस्कृत नाट्योत्सव
9. हिन्दी पखवाड़ा
10. हिन्दी दिवस
11. कवि भास्करी
12. स्मृति व्याख्यानमालाएँ
13. कार्यशालाएँ
14. संगोष्ठियाँ/सम्मेलन

11. प्रवर्तित व्याख्यानमालाएँ

सन् 2008 से राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा कई व्याख्यान मालाएँ आयोजित की जा रही हैं जिसमें प्रमुख हैं:–

1. पं. गौरीनाथ शास्त्री स्मृति व्याख्यानमाला
2. डॉ. भीमराव अम्बेडकर स्मृति व्याख्यानमाला
3. पं. मण्डन मिश्र स्मृति व्याख्यानमाला
4. वी. राघवन् स्मृति व्याख्यानमाला
5. डॉ. राधाकृष्णन् स्मृति व्याख्यानमाला
6. पं. गोपीनाथ कविराज स्मृति व्याख्यानमाला
7. एम. एम. मधुसूदन ओझा स्मृति व्याख्यानमाला
8. डॉ. हीरालाल जैन स्मृति व्याख्यानमाला

9. पी.टी. कौरेकोशे स्मृति व्याख्यानमाला

10. राजीव गांधी अन्ताराष्ट्रिय व्याख्यानमाला

12. भविष्य-योजनाएँ

12वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के द्वारा संस्कृत के विकास के लिए कुछ विशिष्ट पदक्षेप किये जा रहे हैं। यहाँ पर मन्त्रालय में प्रस्तुत अथवा विचाराधीन कुछ विषय दिये जा रहे हैं -

1. हरियाणा और पश्चिम बङ्गाल में दो परिसरों का तथा चेन्नई और कोलकाता में दो आदर्श संस्कृत शोधसंस्थानों का संस्थापन,

2. राष्ट्रिय संस्कृत ग्रन्थालय (National Sanskrit Library) की स्थापना,

3. पालि और प्राकृत भाषाओं के आदर्श शोध संस्थान की स्थापना,

4. राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान का केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के रूप में (Central Sanskrit University) अथवा राष्ट्रिय महत्त्वाधायि-संस्था (Institute of National Importance) के रूप में परिवर्द्धन,

5. सायंकालीन कक्षाओं का आरम्भ।

13. संस्थान मुख्यालय के सदस्यों के नाम

क्र.सं.	नाम	पद	दूरभाष संख्या
1.	प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी	कुलपति	011-28523949
2.	प्रो. के.बी. सुब्बरायुडु	कुलसचिव (प्रभारी)	011-28520979
कुलपति कार्यालय			
*	श्री रोहतास सिंह	निजी सचिव	09718426176
3.	श्री पी.के. आनंद	अनुभाग अधिकारी	09811020547
4.	श्री अनूप सिंह	अवर श्रेणी लिपिक	09716576255
5.	श्री मनोज पहारी	ग्रुप सी	09560681695
6.	श्री अशोक कुमार महतो	ग्रुप सी	09971510397
7.	श्री महेश चंद	एम.टी.एस. (संविदा.)	
8.	श्री कृष्ण कुमार	स्टाफ कार ड्राईवर	

कुलसचिव कार्यालय

9.	श्रीमती संगीता	अवर श्रेणी लिपिक	09868187758
10.	श्री दिनेश कुमार	ग्रुप सी	09716244023
11.	श्री रवीन्द्र कुमार	स्टाफ कार ड्राईवर	09811653991

प्रशासन विभाग

12.	श्री मोहन लाल	उप-निदेशक	09469141194
*	डॉ. पी.एन. वत्स	विशेष कार्याधिकारी	09810145220
13.	श्री नवीन कुमार गुप्ता	अनुभाग अधिकारी-I	09818609303
14.	श्री के.टी. कृष्णकुमार	अनुभाग अधिकारी-II	08826434723
15.	श्री राजमल पठानिया	सहायक	09015610125
16.	श्री सुरेशानंद	सहायक	09868732314
17.	सुश्री आभा रानी	कनिष्ठ आशुलिपिक	09711885005
18.	श्रीमती पापिया दास	प्रवर श्रेणी लिपिक	08800840691
19.	श्री भुवनेश कुमार मौर्य	प्रवर श्रेणी लिपिक (केयरटेकर)	09910470407
20.	श्री रामाशीष शाह	अवर श्रेणी लिपिक	09968094054
21.	श्री गोपाल सिंह	अवर श्रेणी लिपिक	09868604835
22.	श्री उमेश कुमार ठाकुर	अवर श्रेणी लिपिक	09871411328
23.	श्री कल्लूलाल	दफ्तरी	09560538872
24.	श्रीमति अलका	ग्रुप सी	09250847731
25.	श्री जयओम	ग्रुप सी	09540717399
26.	श्री नवीन कुमार राणा	ग्रुप सी	9716311184
27.	श्री रतनबहादुर	ग्रुप सी	09958949236
28.	श्री टेकबहादुर	ग्रुप सी	09891854842
29.	कु. पूनम नागपाल	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09899939412
30.	श्री सुरेश कुमार	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09868640631
31.	श्री शाश्वत गुप्ता	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	9871730649
32.	श्री पप्पू राय	एम.टी.एस. (संविदा.)	09910165995
33.	श्रीमति पूनम	एम.टी.एस. (माली)	

34. श्री अमित	एम.टी.एस. (माली)	

वित्त अनुभाग

35. श्रीमती एस.पी.मेनन	उप-निदेशक	011-28524532
36. श्री विद्यानाथ झा	लेखा अधिकारी	07827854668
37. श्री बिशनदास	अनुभाग अधिकारी	08802983562
38. श्री राजीव कुमार मिश्र	सहायक	09990394390
39. श्री प्रमोद कुमार	प्रवर श्रेणी लिपिक/कैशियर	09868265504
40. श्री देवेन्द्र सिंह	प्रवर श्रेणी लिपिक	09650022567
41. श्री कृष्णकान्त पचौरी	अवर श्रेणी लिपिक	09968073347
42. श्री वीरेन्द्र कुमार	अवर श्रेणी लिपिक (तदर्थ)	09540238403
43. श्री वृन्दावन	ग्रुप सी (तदर्थ)	09971829850
44. श्री सुजात समी	ग्रुप सी (तदर्थ)	08826369682
45. श्री रामप्रकाश चावला	वित्तीय परामर्शदाता (संविदा.)	09968264049
46. श्री देवराज शर्मा	कनिष्ठ कार्यपालक (संविदा.)	
47. श्री रणधीर सिंह	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09868917452

शैक्षणिक अनुभाग

48. डॉ. (श्रीमती) सविता पाठक	उप-निदेशक	011-28524993-205
49. श्री विमल कपूर	अनुभाग अधिकारी	
50. श्री रामवीर	सहायक	
51. श्री भगवान दास	प्रवर श्रेणी लिपिक	
52. श्रीमती सुमन	ग्रुप सी (तदर्थ)	09971360765
53. श्री अश्विनी	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	

परीक्षा अनुभाग

54. डा. गोपीरमण मिश्र	उप-नियंत्रक (परीक्षा)	09990621785
55. श्री रोहतास सिंह	सहायक निदेशक	09718426176
56. श्रीमती मीना भसीन	अनुभाग अधिकारी (परीक्षा)	09968304305
57. डा. अनीता शर्मा	अनुदेशक	09891675441

58.	श्री विनोद कुमार द्विवेदी	सहायक	09555329118
59.	श्रीमती उषा तलवार	प्रवर श्रेणी लिपिक	08510030516
60.	श्री अशोक कुमार	अवर श्रेणी लिपिक	08010373867
61.	श्री सुखलाल	अवर श्रेणी लिपिक (तदर्थ)	08285777038
62.	श्री अनिल कुमार	अवर श्रेणी लिपिक (तदर्थ)	09971676152
63.	श्री प्रयाग सिंह	ग्रुप सी	09910681918
64.	श्री विनिल सिंह भण्डारी	ग्रुप सी	09911678065
65.	श्री धनबहादुर थापा	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	08860968366
66.	श्री नरेश कुमार	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09213088048
67.	श्री राजेश कुमार	ग्रुप डी (संविदा.)	08744982942
68.	श्री रविन्द्र कुमार	ग्रुप डी (संविदा.)	09990784407
69.	श्री प्रमोद मण्डल	ग्रुप डी (संविदा.)	08587090937

शोध एवं प्रकाशन विभाग

*	डॉ. पी.एन. वत्स	विशेष कार्याधिकारी	09810145220
70.	डा. छोटी बाई मीणा	प्रभारी (शोध एवं प्रकाशन)	09868639052
71.	श्री. रामचन्द्र	सहायक निदेशक	09971168106
72.	श्री अनिल नौड़ियाल	सहायक	09868283806
73.	श्री प्रभाष मिश्र	कनिष्ठ कार्यपालक (संविदा.)	09582873022
74.	श्री प्रदीप राजपाल	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09650528479
75.	श्री विमल प्रसाद	एम.टी.एस. (संविदा.)	09560301422

परियोजना अनुभाग

*	श्री रमेश सिंह	सचिव (खेलकूद)	09871532211
76.	श्री रामनिवास	प्रवर श्रेणी लिपिक	07838611757
77.	डॉ. अपर्णा धीर	सह-संयोजिका (संविदा.)	09990433340
78.	श्री सुधाकर शुक्ला	प्रोग्रामर (संविदा.)	09313205151
79.	श्री विजय कुमार	प्रोग्रामर (संविदा.)	09990652366
80.	श्री लव कुमार दूबे	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09810734248
81.	श्री प्रवीण रावत	एम.टी.एस. (संविदा.)	08587883594

पालि एवं प्राकृत परियोजना

82.	डॉ. रजनीश शुक्ल	विकास अधिकारी (संविदा)	09910127475
83.	श्री अजय कुमार सिंह	कनिष्ठ शोध अध्येता, पालि,"	09313971392
84.	श्री सतेन्द्र कुमार जैन	वरिष्ठ शोध अध्येता,प्राकृत "	09716768302
85.	डॉ. प्रभात कुमार दास	कनिष्ठ शोध अध्येता,प्राकृत "	09868098779
86.	श्री देवमणि पाण्डेय	कनिष्ठ शोध अध्येता,प्राकृत "	09654861726
87.	श्री हरिबहादुर थापा	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	07503221284

संस्कृत फारसी-उर्दू शब्दकोश परियोजना

88.	श्री रौनक कुमार	कनिष्ठ शोध अध्येता (संविदा)	08010448481
89.	सैय्यद एहसान रियाज़	कनिष्ठ शोध अध्येता (संविदा)	09711526540
90.	श्री अमित कुमार	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09716779183
91.	श्री मोईन उद्दीन	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09716678770
92.	पूरनमल गंगा	एम.टी.एस. (संविदा.)	08802545454

भाषा मन्दाकिनी परियोजना

93.	श्रीमती कीर्ति दीक्षित	कनिष्ठ शोध अध्येता (संविदा)	08447948886

सांख्ययोग परियोजना

94.	श्रीमती दीपिका राय	वरिष्ठ शोध अध्येता (संविदा)	09717236956
95.	श्री अविनाश पाण्डेय	वरिष्ठ शोध अध्येता (संविदा)	09210470279
96.	दिनेश चन्द्र मीणा	एम.टी.एस. (संविदा.)	09971148524

पुस्तकालय प्रभाग

97.	श्रीमती स्नेहलता उपाध्याय	पुस्तकालयाध्यक्ष	08860039999
98.	श्री सतीश शर्मा	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	09971777368
99.	श्री सन्दीप पोखरियाल	पुस्तकालय परिचारक (तदर्थ)	09868994220
100.	श्रीमती सरोज शर्मा	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09560130922

विक्रय प्रभाग

101.	श्री विश्वमोहन शर्मा	सहायक	09968074194
102.	श्री अशोक कुमार रशवाल	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09891971949

103. श्री सुनील कुमार	एम.टी.एस. (संविदा.)	09911249743
104. श्री राजीव कुमार	एम.टी.एस. (संविदा.)	08800369305
105. श्री नीरज	एम.टी.एस. (संविदा.)	

मुक्तस्वाध्यायपीठम्

106. डा. रमाकान्त पाण्डेय	निदेशक	09560035360
107. डा. सच्चिदानन्द तिवारी	उपनिदेशक, उपकुलसचिव (प्रभारी)	08802129002
108. श्री रमेश सिंह	सहाचार्य (संयोजक, शा.शि. एवं योग प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम)	09871532211
109. डा. जयप्रकाश नारायण	सहायकाचार्य (संयोजक, पालि-प्राकृत-प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम) परीक्षा प्रभारी, मु.स्वा.पी.	09999064314
110. डॉ. श्यामदेव मिश्र	सहायकाचार्य, ज्योतिष	
* डा. रत्नमोहन झा	सहायकाचार्य (संयोजक, शास्त्री एवं आचार्य पाठ्यक्रम)	09868241551
111. श्री वेंकटेश मूर्ति	सहायकाचार्य (संयोजक, प्राक्शास्त्री पाठ्यक्रम)	09868256044
112. डा. अजय कुमार मिश्र	सहायकाचार्य, (संयोजक, नाट्यशास्त्र प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम)	09968303243
113. डा. सुनीता गुप्ता	सहायकाचार्य (संयोजक, (अंग्रेजी-संस्कृत-अनुवाद शिक्षण पाठ्यक्रम)	09871579888
114. डा. प्रफुल्ल गड़पाल	सहायकाचार्य (संयोजक, (संस्कृत पत्रकारिता प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम, संपादक-संस्कृतवार्ता)	09891400819
115. डा. तङ्गल्लपल्लि महेन्द्र	सहायकाचार्य (संयोजक, संस्कृत-हिन्दी-भाषानुवाद प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम) पुस्तकालयाध्यक्ष, (मु.स्वा.पी.)	09555243989
116. डॉ. अभिजित दीक्षित	सहायकाचार्य (भाषा तकनीक) संविदा	08447948886

117. श्रीमती अनिता रानी	प्रवर श्रेणी लिपिक	09873321578
118. श्री राजीव कुमार सिंह	अवर श्रेणी लिपिक	09868798109
119. चन्द्रप्रकाश उप्रेती	कनिष्ठ शोधअध्येता (साहित्य)	07827714257
120. अनूप पाण्डेय	कनिष्ठ शोधअध्येता (साहित्य)	08287511891
121. उमाकान्त तिवारी	कनिष्ठ शोधअध्येता (ज्योतिष)	08860446807
122. श्री चंदन सिंह रावत	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09716989049
123. दीपक मुद्गल	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	08750118185
124. अमित सिंह	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	08285793987
125. श्री संजय कुमार शर्मा	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	
126. श्री रमाकान्त शर्मा	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	
127. श्री हर्षमणि पाठक	एम.टी.एस. (संविदा.)	09212462866

अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण अनुभाग

128. डा. रत्नमोहन झा	राष्ट्रीय संयोजक	09868241551
129. श्री दिनेश कुमार	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	07503414969
130. श्री इन्द्रबहादुर थापा	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	08527505804
131. श्री प्रकाश तिवारी	एम.टी.एस. (संविदा.)	

छात्रवृत्ति अनुभाग

* डॉ. पी.एन. वत्स	विशेष कार्याधिकारी	09810145220
* डॉ. छोटीबाई मीना	प्रभारी (छात्रवृत्ति)	09868639052
132. श्री राजकुमार कौशिक	अनुभाग अधिकारी	09953900415
133. श्रीमती अनिता नेगी	अवर श्रेणी लिपिक	09968658307
134. श्री लक्ष्मण झा	अवर श्रेणी लिपिक	09953183250
135. कु. मोनिका मल्होत्रा	अवर श्रेणी लिपिक (तदर्थ)	09811167204
136. श्री कृष्ण	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09871191995
137. कु. पूनम	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09971507049
138. श्री नितिन	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09278282027
139. कु० पिन्की	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09990914454
140. श्रीमती नीरज	ग्रुप सी	08826712961

पत्राचार अनुभाग

141. डा. मोहम्मद हनीफ खान	सहायकाचार्य, उपनिदेशक प्रभारी	09891068307
142. श्री दामोदर शर्मा	सहायक निदेशक	
143. डा. रानी दाधीच	अनुदेशक	08376884200
144. श्री भवानी शंकर शर्मा	अनुदेशक (तदर्थ)	09654553180
145. श्रीमती कुशल मल्होत्रा	कार्यालय सहायक	09211387307
146. श्री प्रवीण कुमार राय	प्रवर श्रेणी लिपिक	09968314717
147. सुश्री सुमित छाबड़ा	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09891155174
148. श्री अजीत सिंह	एम.टी.एस. (संविदा.)	09654919145

आदर्श योजना अनुभाग

149. श्री श्रीपति राय	अनुभाग अधिकारी	09717384677
150. श्री देवदत्त पटनायक	अनुभाग अधिकारी	07508548396
151. श्री राजीव कुमार धंड	सहायक	09818929740
152. श्रीमती हेमा ठाकुर	अवर श्रेणी लिपिक	09968319412
153. श्री विनोद कुमार	अवर श्रेणी लिपिक (तदर्थ)	08010537808
154. श्री दीपक सिंह रावत	एम.टी.एस. (संविदा.)	09990078636

योजना अनुभाग

155. श्री डी.वी. सिंह राजपूत	वरिष्ठ कार्यपालक (संविदा.)	09811033324
156. श्री मंगत सिंह	अनुभाग अधिकारी	09560764083
157. श्री बिमल कपूर	सहायक	09868227559
158. श्रीमती गंगा शर्मा	सहायक	09871108458
159. श्री रमेश चन्द्र	प्रवर श्रेणी लिपिक	08527906400
160. श्रीमती रामवती	ग्रुप सी	09971968097
161. श्री राज कुमार	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09013757500
162. श्रीमती शशि	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09716317990
163. श्री राधाकिशन	एम.टि.एस्. (संविदा.)	09868988707

सूचना का अधिकार प्रकोष्ठ (आर.टी.आई.)

164. डॉ. पी.एन. वत्स	केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी, न्यायालयीय मामले, मन्त्रालयिक पत्राचार एवं संसद प्रश्न	09810145220
165. श्री अमर सिंह	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	9990881337

आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (आई.क्यू.ए.सी.)

*	प्रो. सुदेश कुमार शर्मा	सदस्य सचिव	09414889043
*	डॉ. पी.एन. वत्स	प्रभारी, मुख्यालय	09810145220

पता एवं दूरभाष संख्या :

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

दिल्ली परिसर, 56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया,

डी-ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

ईपीएबीएक्स: 011-28524993, 28521994, 28524995

तार : संस्थान

e-mail : **rsks@nda.vsnl.net.in**

website **: www.sanskrit.nic.in**

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
के
परिसर

गंगानाथ-झा-परिसर, इलाहाबाद (उ. प्र.)

1. परिचय

गंगानाथ झा शोध-संस्थान की स्थापना 17 नवम्बर, 1943 ई. को महामना पं. मदनमोहन मालवीय, ले० गवर्नर आदित्यनाथ झा एवं उनके अनुयायियों, शिष्यों एवं विभिन्न पारिवारिक व्यक्तियों के द्वारा डा. गंगानाथ झा की द्वितीय पुण्यतिथि के अवसर पर किया गया था। बाद में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा इसका अधिग्रहण 1 अप्रैल, 1971 को अपने अंगीभूत विद्यापीठ के रूप में 'श्री गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ' के नाम से किया गया। सन् 2002 में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मानित विश्वविद्यालय बनने के पश्चात् इसका नामकरण 'श्री गंगानाथ झा परिसर, (मानित विश्वविद्यालय) इलाहाबाद' हुआ। यह परिसर एक ऐसा मान्यता-प्राप्त शोध-केन्द्र है जो संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं के शोध-कार्य हेतु समर्पित है। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) की विद्यावारिधि (पीएच.डी.) उपाधि हेतु शोधकार्य के लिए परिसर प्रतिवर्ष निश्चित संख्या में शोध छात्रों को पंजीकृत करता है। प्रविष्ट शोध-छात्र इस परिसर के किसी प्राध्यापक के मार्गदर्शन में शोध कार्य करते हैं तथा परिसर में उपलब्ध पुस्तकालय एवं पाण्डुलिपि अनुभाग की सुविधाओं का उपयोग करते हैं। पुस्तकालयों एवं पाण्डुलिपियों का उपयोग मात्र परिसर के छात्रों तक ही सीमित नहीं है, अपितु सभी विद्वानों तथा शोध छात्रों हेतु संदर्भ पुस्तकालय के रूप में सहयोग प्रदान करता है। यह संस्कृत तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति में अभिरुचि रखने वाले समाज के सभी वर्गों के विद्वानों एवं शोधार्थियों को पुस्तकालय की क्षमतानुसार उपयोग के लिए आमन्त्रित करता है।

परिसर के अध्यापक पंजीकृत छात्रों को शोध-कार्य में मार्ग-दर्शन करने के अतिरिक्त संस्थान द्वारा प्रदत्त विषयों पर अपना शोध-कार्य भी करते हैं। परिसर की शोध-परियोजना का कार्य न केवल वैयक्तिक अपितु सामूहिक रूप से भी किया जाता है।

राज्य सरकार तथा भारत सरकार (केन्द्र) के सहयोग से यह शोध संस्थान जिन उद्देश्यों के लिए कार्य करता है, वे इस प्रकार हैं–

- भारतीय प्राच्य विद्या में मौलिक शोध को प्रोत्साहन।
- संस्कृत के दुर्लभ ग्रन्थों का सम्पादन/प्रकाशन/अनुवाद।
- अन्ताराष्ट्रिय ख्याति की प्राच्यविद्यामयी शोध-पत्रिका का प्रकाशन।

◦ प्राच्यविद्याध्ययनोपयोगी विशाल पुस्तकालय की स्थापना।

◦ संस्कृत की पाण्डुलिपियों का संग्रह/संकलन/संरक्षण/सूचीकरण।

◦ शोध छात्रों को छात्रवृत्ति-प्रदान करना तथा उन्हें शोधकार्य करने की सुविधा प्रदान करना।

इस परिसर ने अपने प्रकाशन कार्यक्रमों के अतिरिक्त "वेदभाष्य-कोश" परियोजना को भी आरम्भ किया है।

1.1 पाण्डुलिपि संग्रहालय

परिसर में हस्तलिखित ग्रन्थों का एक विशाल भण्डार है। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली द्वारा 1971 ई. में अधिग्रहण से पूर्व यहाँ कुल 13000 हस्तलेख थे जो अब तक लगभग 60,000 हो गये हैं। ये प्राच्यविद्या के विविध अंगों (विषयों) तथा विभिन्न भाषाओं (हिन्दी, संस्कृत, बँगला, गुजराती, मराठी आदि) एवं लिपियों (मैथिली, बंगला, उड़िया, नेवारी, तेलुगु, तमिल, शारदा आदि) में हैं। काल की दृष्टि से यहाँ प्रायः 16वीं से 18वीं शताब्दी तक के ग्रन्थ हैं। इनका डिस्क्रिप्टिव कैटलॉग 13 खण्डों में प्रकाशित किया जा चुका है। शेष भागों का प्रकाशन कम्प्यूटर द्वारा किया जा रहा है।

पाण्डुलिपि-संग्रहालय के निम्नवत् कार्य हैं–

संग्रहण- संग्रहण का कार्य अर्थसापेक्ष परियोजनाधीन होता है जो समय-समय पर सम्पन्न होता है।

संरक्षण-सूचीकरण- संरक्षण एवं सूचीकरण का कार्य वर्तमान में अनेक योजनाओं के माध्यम से किया जा रहा है। जैसे- डॉक्यूमेण्टेशन, डाटाशीट्स चेकिंग, कम्प्यूटर-प्रविष्टि, प्रिजर्वेशन एवं कन्जर्वेशन इत्यादि।

सम्पादन/प्रकाशन- सम्पादन/प्रकाशन का दायित्त्व शैक्षणिक विभाग निर्वहन करता है।

उक्त संग्रहालय के चतुर्मुखी विकास हेतु भावी योजनाएं भी तैयार की गई हैं।

पाण्डुलिपि की वर्तमान योजनाएँ

■ 19 शोधच्छात्रों को शोध कार्य हेतु हस्तलेखों की छायाप्रति उपलब्ध कराई गई है। परिसर के शोधाधिकारियों एवं शास्त्र चूड़ामणि के आचार्यों को सम्पादन हेतु 13 हस्तलेखों की छाया प्रति उपलब्ध कराई गई।

■ परिसर द्वारा संग्रहीत समस्त हस्तलेखों के कैटलॉग निर्माण हेतु हस्तलेखों के विवरण को कम्प्यूटर में प्रविष्टि का कार्य द्रुतगति से चल रहा है। अवशिष्ट बंगाली लिपि के हस्तलेखों का विवरण तैयार किया जा रहा है।

■ परिसर में संगृहीत समस्त माईक्रोफिल्म्स के डिजिटाइजेशन का कार्य प्रस्तावित है। सम्प्रति कश्मीर से लाये गये हस्तलेखों के माईक्रोफिल्म्स में 68 निगेटिव फिल्म्स तथा

05 माईक्रोफिल्म्स की डीवीडी/सीडी, सी.आई.एल.आई.जी., एन.सी.ए., नई दिल्ली से बनवाई गई हैं।

1.2 पुस्तकालय

परिसर में विद्वानों तथा शोधार्थियों के उपयोग हेतु एक समृद्ध पुस्तकालय है। इसमें प्राच्यविद्या एवं विभिन्न विषयों से सम्बद्ध बड़ी संख्या में मुद्रित पुस्तकें संगृहीत हैं। छात्रों को सामयिक अनुसन्धानों की समुचित सूचना प्राप्त होती रहे इस दृष्टि से अनेक शोध-संस्थानों की शोध-पत्रिकाएँ नियमित मंगाई जाती हैं। ये एक अलग विभाग बनाकर संगृहीत हैं। छात्रों को सामयिक सांसारिक सूचनाएँ प्राप्त हो सकें तथा रोजगार के अवसर ज्ञात हो सकें इस बात का भी ध्यान रखा जाता है। संक्षेप में पुस्तकालय विवरण अधोऽङ्कित है –

पुस्तकालय सम्पत्ति

- पुस्तक – 50,285 दुर्लभसंदर्भ ग्रन्थ
- शोधप्रबन्ध – 1062
- संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी में विविध संस्थाओं द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिकाएँ एवं समाचारपत्र।

पुस्तकालय की वर्तमान योजनाएँ

- ई-पुस्तकालय निर्माण।
- दुर्लभपुस्तकों का प्रलेखीकरण।

पुस्तकालय की भावी योजनाएँ

- दुर्लभ जर्नल/शोध पत्रिका का प्रलेखीकरण।
- पुस्तकालय का कम्प्यूटराइजेशन।
- PDF Library बनाकर online करना।

2. शैक्षिक विभाग

गङ्गानाथ झा परिसर एक शोध-संस्थान है। इस परिसर का प्रमुख कार्य है-शोध एवं प्रकाशन। वर्तमान में यहाँ 1 आचार्य, 4 सहाचार्य तथा 3 सहायकाचार्य शोध छात्रों को विद्यावारिधि (पीएच.डी.) उपाधि हेतु मार्ग-निर्देशन करते हैं एवं परिसर के संग्रहालय में उपलब्ध अप्रकाशित दुर्लभ महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों का सम्पादन करते हैं।

सम्पादित ग्रन्थों का प्रकाशन संस्थान के लिए परिसर कराता है। इनके अतिरिक्त संस्थान द्वारा अनुमोदित शोध योजनाओं पर भी विद्वानों द्वारा कार्य सम्पादित किये जाते हैं। इस प्रकार शैक्षणिक अनुभाग की मुख्यत: दो प्रकार की गतिविधियाँ हैं– (1) शोध (2) प्रकाशन/सम्पादन।

2.1 शोधात्मक विवरण

2002 के बाद परिसर में अब तक शोध की दृष्टि से 2003, 2005, 2008, 2009, 2010, 2011 तथा 2012 में राष्ट्रीय स्तर पर प्राक्-अनुसन्धान-परीक्षा (Pre Research Test) का आयोजन कराया जा चुका है। इसके माध्यम से लगभग 148 शोधच्छात्रों का पंजीकरण हुआ। इसके पूर्व से पंजीकृत छात्रों को मिलाकर इस समय में लगभग 205 शोध छात्र पंजीकृत हैं।

3. परिसरीय गतिविधियाँ

1. संस्कृत दिवस समारोह का आयोजन
2. हिन्दी पखवाड़ा (प्रतिवर्ष 14 से 30 सितम्बर तक)
3. शिक्षा दिवस का आयोजन
4. अनेक राष्ट्रिय एवं अन्ताराष्ट्रिय संगोष्ठी का आयोजन

4. परिसरीय उपलब्धियाँ

1. 120 महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन।

2. 1943 से अब तक अनवरत **जर्नल आफ गंगानाथ झा परिसर** नामक शोध-पत्रिका के 67 अंक का प्रकाशन।

3. 133 शोधच्छात्रों को विद्यावारिधि (पीएच.डी.) शोधोपाधि वितरण।

4. अनेक ख्याति प्राप्त भारतीय/विदेशी विद्वानों का व्याख्यान।

5. अनेक शैक्षिक/सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन।

6. शोध-पत्रिका के साथ-साथ विशिष्ट विद्वानों के अभिनन्दन-ग्रन्थों का प्रकाशन।

7. परिसरीय शोधच्छात्रों/अधिकारियों/कर्मचारियों/ की गतिविधि से सम्बद्ध वार्षिक पत्रिका 'उशती' का नियमित प्रकाशन।

5. प्रकाशन

गङ्गानाथ झा परिसर में लगभग 60,000 हस्तलेख विभिन्न भाषा तथा लिपियों में संगृहीत एवं सुरक्षित हैं। इनमें से अप्रकाशित महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के उद्धार एवं प्रचार-प्रसार हेतु परिसरीय शोध-परियोजनाओं के अन्तर्गत शोध-अधिकारियों द्वारा उन्हें सम्पादित तथा प्रकाशित करने का कार्य किया जाता है। कभी-कभी पाण्डुलिपि पर शोध-कार्य हेतु इच्छुक शोधच्छात्रों तथा राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के शास्त्रचूड़ामणि योजनान्तर्गत नियुक्त विद्वानों से भी सम्पादन कार्य सम्पन्न कराया जाता है, जिन्हें परिसर अपने व्यय से प्रकाशित कराता है।

6. परिसरीय सदस्य

शैक्षिक

नाम	पद	दूरभाष संख्या
1. प्रो. सर्वनारायण झा	**प्राचार्य (प्रभारी)**	09452847910
साहित्य-विभाग		
2. प्रो. शैल कुमारी मिश्रा	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09936517021
3. डा. जनार्दन प्रसाद पाण्डेय 'मणि'	सहाचार्य	09450253332
4. डा. उदयनाथ झा	सहाचार्य	
5. डा. अपराजिता मिश्रा	सहायकाचार्य	09453137308
व्याकरण-विभाग		
6. डा. बनमाली बिश्वाल	सहाचार्य (व्याकरण, सांख्य-योग)	09335131775
7. डा. रामजी पाण्डेय	सहायकाचार्य	07860309308
8. डा. सुरेश पाण्डेय	सहायकाचार्य	09918482522
पुराणेतिहास-विभाग		
9. डा. शैलजा पाण्डेय	सहायकाचार्य	09451179728
मुक्तस्वाध्याय केन्द्र		
* डॉ. शैलजा पाण्डेय	समन्वयक	09451179728
10. श्री ब्रह्मानन्द मिश्र (संविदा)	डी.ई.ओ. कम लिपिक (संविदा)	09450407739
11. श्री आशीष कुमार द्विवेदी	आदेशपाल (ग्रुप 'डी') (संविदा)	09956470324
पुस्तकालय कर्मचारी		
12. श्री रामरूप	पुस्तकालयाध्यक्ष	09450591563
13. डा. अनिल कुमार सिंह	पुस्तकालय पण्डित	09450809130
14. श्रीमती अंजू मिश्रा	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	
15. डा. घनानन्द त्रिपाठी	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	09918117601
16. श्री सुखदेव ठाकुर	पुस्तकालय अटेन्डेन्ट	09336079647
17. सुश्री मंजू देवी	पुस्तकालय अटेन्डेन्ट	09936883487

पाण्डुलिपि-संग्रहालय कर्मचारी

18. डा. बीना मिश्रा	संग्रहालयाध्यक्ष	09335115221
19. डा. रामकिशोर झा	पाण्डुलिपि प्रतिलिपि सहायक	09839311212
20. श्री शैलेन्द्र पाण्डेय	पाण्डुलिपि पण्डित	09565317208
21. डा. संजय दूबे	पाण्डुलिपि पण्डित	07398732948

प्रशासन

23. श्री जयसिंह	अनुभाग अधिकारी	09935526883
24. श्री कृष्णानन्द पाठक	प्रवरश्रेणी लिपिक	05322569140
25. श्री विजय कुमार मिश्र	प्रवरश्रेणी लिपिक	09936087684
26. श्री इन्द्रराज	अवरश्रेणी लिपिक	09956627329
27. श्री मइयादीन भारतीय	ग्रुप सी	09936525805
28. श्री नन्द कुमार	ग्रुप सी	09792613442
29. श्री अर्जुन मण्डल	ग्रुप सी	09336573662
30. श्री रामभवन	माली	
31. श्री आनन्द कुमार	सफाई कर्मचारी	

7. पता एवं दूरभाष संख्या

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय,

गङ्गानाथ झा परिसर

चन्द्रशेखर आजाद पार्क, इलाहाबाद-211001, उत्तर प्रदेश

दूरभाष 0532-2460957

फैक्स 0532-2460956

email-**principal.ald@gmail.com**

rsksalld@gmail.com

श्रीसदाशिव-परिसर, पुरी (उड़ीसा)

1. परिचय

परम्परागत संस्कृत अध्ययन-अध्यापन में चिरकाल से सम्बद्ध, राज्य सरकार के अन्तर्गत संचालित पूर्ववर्ती सदाशिव संस्कृत कॉलेज पुरी का 15 अगस्त, 1971 को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के द्वारा अधिग्रहण किया गया तथा इसका नाम बदल कर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, पुरी रखा गया। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान को मानित विश्वविद्यालय का दर्जा मिल जाने पर अब यह राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) श्री सदाशिव परिसर पुरी के रूप में जाना जाता है।

परिसर के शैक्षिक क्रियाकलाप 4.78 एकड़ भूमि पर नव-निर्मित भवन में आरम्भ हो गए हैं। परिसर में पाठकों के लिए विभिन्न विषयों से सम्बद्ध लगभग 50,000 पुस्तकों, हस्तलिपियों और पत्रिकाओं से युक्त अति समृद्ध पुस्तकालय है।

यह परिसर साहित्य, नव्य व्याकरण, धर्मशास्त्र, पुराणेतिहास, सिद्धान्त ज्योतिष, फलित ज्योतिष, अद्वैत वेदान्त, सांख्य योग, नव्य न्याय, सर्वदर्शन आदि विभिन्न विभागों में प्राक् शास्त्री से आचार्य तक शिक्षण प्रदान करता है। परिसर विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) उपाधि हेतु शोध कार्य कराता है।

इन विषयों के अतिरिक्त संस्थान के पाठ्यक्रमों के अनुसार शास्त्री व प्राक्शास्त्री की कक्षाओं में अंग्रेजी, हिन्दी, उड़िया, इतिहास, गणित और कंप्यूटर शिक्षा जैसे आधुनिक विषयों का अध्यापन भी किया जा रहा है। पर्यावरण अध्ययन का ज्ञान भी इन कक्षाओं में प्रदान किया जाता है। परिसर में बी.एड. के समकक्ष शिक्षाशास्त्री (प्रशिक्षण) पाठ्यक्रम भी चलाया जाता है।

2. छात्रावास व्यवस्था

परम्परागत पाठ्यक्रम प्राक्शास्त्री, शास्त्री तथा आचार्य कक्षा के छात्रों के लिए छात्रावास की सुविधा दी जाती है। छात्रावास के नियम के तहत जरूरतमन्द छात्रों की स्थिति देखकर छात्रावास उपलब्ध कराया जाता है। छात्रावास अधीक्षक (वार्डन) तथा छात्रावास उपाधीक्षक के माध्यम से छात्रावास आवंटित किये जाते हैं।

सम्प्रति 10.5 एकड़ भूमि में पुरुष छात्रावास एवं क्रीडाप्राङ्गण निर्माणाधीन है, जिसमें 5 करोड़ से अधिक राशि व्यय होने हैं।

3. परिसर की गतिविधियाँ

श्री जगन्नाथ विश्वकोश प्रोजेक्ट (परियोजना)

संस्कृत के उन्नयन की योजना के अन्तर्गत पुरी परिसर के लिए श्री जगन्नाथ विश्वकोश प्रोजेक्ट की स्वीकृति दी गई है। प्रोजेक्ट के सदस्य इस प्रकार हैं-

1. प्रो. अतुल कुमार नन्द - सचिव, (चेयरमैन), अध्यक्ष
2. डॉ. सुकान्त कुमार सेनापति - सदस्य
3. डॉ. एन.सी. साहू - सदस्य
4. श्री पी.सी.महापात्र - सदस्य
5. श्री डी.पी. दास महापात्र - सदस्य

इनके अतिरिक्त प्रोजेक्ट फेलो और चतुर्थवर्गीय कर्मचारी भी सहयोगी हैं।

परिसरीय पत्र-पत्रिकाएँ

इस परिसर में प्रतिवर्ष 'पौर्णमासी' पत्रिका का प्रकाशन होता है। इससे परिसर के छात्रों, अध्यापकों एवं कर्मचारियों के सर्जनात्मक लेखन कला का विकास होता है। पत्रिका के वार्षिक प्रतिवेदन के कालम में परिसर के अनेक क्रियाकलापों का विवरण दिया जाता है। पत्रिका में संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी तथा उड़िया इन चार भाषाओं में लिखे लेख होते हैं। इसके अतिरिक्त अलग-अलग विभागों के अपनी-अपनी पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होती हैं।

संस्कृत दिवस

श्रावण पूर्णिमा को प्रत्येक वर्ष 'संस्कृत दिवस' मनाया जाता है। इस कार्यक्रम में सम्मानित अतिथियों द्वारा प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् को सम्मानित भी किया जाता है।

अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्र

संस्कृतेतर छात्रों तथा संस्कृत के कमजोर छात्रों के लिए अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्र द्वारा संस्कृत संभाषण का अभ्यास कराया जाता है। केन्द्र का प्रभार इस प्रकार होता है -

केन्द्राध्यक्ष - डॉ. जी. गंगन्ना, प्राचार्य

केन्द्र संयोजक - डॉ. सुकान्त कुमार सेनापति

वाणीविलास-परिषद्

25 अक्टूबर 2008 को परिसर में वाणीविलास-परिषद् की स्थापना की गई। इस परिषद् का मुख्य उद्देश्य थे-

* विविध प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए छात्रों को प्रेरित करना।

* छात्रों में आत्मविश्वास पैदा करना।

* भाषा और शास्त्र संवर्धन।

* छात्रों को शास्त्र तथा अन्य शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित करना।

4. परिसर सदस्यों के नाम

1. **प्रो. जी. गंगन्ना**	प्राचार्य	06752-222952 09437022952

अद्वैत वेदान्त विभाग

2. डॉ. सिएच.एन.वी प्रसाद राव	सहाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	08895342862
3. डा. शम्भूनाथ महालिक	सहायकाचार्य	09583967968
4. डा. भगवान् सामन्तराय	सहायकाचार्य	07873084263
5. श्री दयानन्द पाणिग्रही	सहायकाचार्य (संविदा)	09861514273

धर्मशास्त्र विभाग

6. प्रो. अतुल कुमार नन्द	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09437022952
7. प्रो. खगेश्वर मिश्र	आचार्य	06752-233240(नि.)
8. डा. ललित कुमार साहू	सहाचार्य	06752-229963 (नि.)
9. डा. प्रियरंजन रथ	सहायकाचार्य (संविदा)	09437549649

ज्योतिष विभाग

10. डॉ. हंसधर झा	सहाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	08895346065
11. डॉ. विश्वरंजन पति	सहायकाचार्य	08895347478
12. डॉ. विजयलक्ष्मी महापात्र	सहायकाचार्य (संविदा)	09777147567
13. डॉ. सत्यस्वरूप बाजपेयी	सहायकाचार्य (संविदा)	09777398315
14. श्री अरूण कुमार	सहायकाचार्य (संविदा)	08093404940

नव्य व्याकरण विभाग

15. प्रो. सी.एल. सिसिलि	सहाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09539469700
16. डॉ. (श्रीमती) अनुपमा पृष्टी	सहाचार्य	06752-222764 (नि.)

17. डॉ. दुर्गाचरण षडङ्गी	सहाचार्य	09437467267
18. डॉ. उमेशचंद्र मिश्र	सहायकाचार्य	07873408945
19. श्री दिपेश विनोद कतिरा	सहायकाचार्य (संविदा)	07735592553
20. डॉ. बी.बी. रायगुरु	सहायकाचार्य (संविदा)	09861430324

नव्य न्याय विभाग

21. डा. महेश झा	सहायकाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09437180777
22. डा. गणपति शुक्ल	सहायकाचार्य	08895553670
23. डॉ. पीताम्बर मिश्र	सहायकाचार्य (संविदा)	07873827806
24. डॉ. श्यामसुन्दर ए	सहायकाचार्य (संविदा)	09449542389

पुराणेतिहास विभाग

25. डा. (श्रीमती) मिनति रथ	सहाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	227439 (नि.)
26. डा. मखलेश कुमार उपाध्याय	सहायकाचार्य	
27. डॉ. राधामणि प्रतिहारी		09238647449, 08093321216
28. डॉ. कृष्णचन्द्र कवि	सहायकाचार्य (संविदा)	

साहित्य विभाग

29. डॉ. सुशान्त कुमार राज	सहायकाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09090857743
30. डा. कृपाशंकर शर्मा	सहायकाचार्य	08895553609
31. डा. राघवेन्द्र पाठक	सहायकाचार्य (संविदा)	09437513158
32. डॉ. वसन्त कुमार मुद्रा	सहायकाचार्य (संविदा)	09878907081
33. डॉ. नवीन कुमार प्रधान	सहायकाचार्य (संविदा)	
34. डॉ. सुदर्शन चिपलुणकर	सहायकाचार्य (संविदा)	09692920245

सांख्ययोग विभाग

35. श्री अशोक कुमार मीणा	सहायकाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09776302245
36. डा. (श्रीमती) सुकान्ती बारिक	सहायकाचार्य (संविदा)	09178767978
37. डॉ. विकासिनी गुमानसि	सहायकाचार्य (संविदा)	09861170963
38. डॉ. पंकज कुमार तिवारी	सहायकाचार्य (संविदा)	08093467845

सर्वदर्शन विभाग

39. श्री के. रघुनाथन्	सहाचार्य	
40. डा. सुकान्त कुमार सेनापति	सहाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09937427194
41. श्री नन्दीघोष महापात्र	सहायकाचार्य (संविदा)	08093185139

42 डॉ. पवन कुमार व्यास	सहायकाचार्य (संविदा)	08594916414

शिक्षाशास्त्री विभाग

43. प्रो. सुदेश कुमार शर्मा	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09414889043
44. डा. (श्रीमती) निर्मला पाणिग्रही	सहायकाचार्य	09937370774
45. डा. रमाकान्त मिश्र	सहायकाचार्य	
46. डा. वृन्दावन पात्र	सहायकाचार्य	07735627250
47. डा. बी.पी.एम. श्रीनिवास	सहायकाचार्य	09596217212
48. डॉ. भरत कुमार पण्डा	सहायकाचार्य (संविदा)	07205094959
49. डॉ. कौशलेश शर्मा	सहायकाचार्य (संविदा)	07735094294
50. डॉ. ओमनारायण मिश्रा	सहायकाचार्य (संविदा)	09040516073
51. डॉ. जितेन्द्र कुमार	सहायकाचार्य (संविदा)	09555329117

आधुनिक विभाग

52. डा. शरत चन्द्र शर्मा	सहाचार्य, विभागाध्यक्ष (अंग्रेजी)	09090054864
53. डा. (श्रीमती) केतकी महापात्रा	सहायकाचार्य (हिन्दी)	09437417576
54. डा. नृसिंह चरण साहु	सहायकाचार्य (उड़िया)	251588 (नि.)
55. श्री पूर्ण चन्द्र महापात्र	सहायकाचार्य (इतिहास)	223078 (नि.)
56. श्री दुर्गाप्रसाद दास महापात्र	सहायकाचार्य (इतिहास)	224158 (नि.)
57. डा. प्रमोद कुमार दलाई	सहायकाचार्य (संविदा, उड़िया)	09861103662
58. श्रीमती रश्मि मिश्रा	सहायकाचार्य (संविदा, अंग्रेजी)	09438148946
59. श्री सुशान्त कुमार शतपथी	सहायकाचार्य (अंश., सी.कम्प्यूटर ट्रेनर)	09437101266
60. श्री विश्वनाथ मिश्र	सहायकाचार्य (अंश., जू.कम्प्यूटर ट्रेनर)	09438672022

कार्यालय कर्मचारी

61. श्री जितेन्द्र कुमार	अनुभाग अधिकारी	09555329117
62. श्री केदारनाथ दास	अवर आशुलिपिक	09861190915
63. श्री सुरेन्द्र कुमार महापात्र	प्रवर श्रेणी लिपिक	09778536416
64. श्री बिजय कुमार जेना	प्रवर श्रेणी लिपिक	09437308262
65. श्री देवीप्रसाद दास महापात्र	प्रवर श्रेणी लिपिक	224158 (नि.)

66. श्री पूर्णचन्द्र मिश्र	अवर श्रेणी लिपिक	09668448091
67. श्री भ्रमरबर बेहेरा	दफतरी	09853486986
68. श्री लिङ्गराज बरीक	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	06752-229736
69. श्रीमती राधारानी देई	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	
70. श्री कण्ठनारायण दास	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	08280056635
71. श्री सन्तोष कुमार महान्ती	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	09778646386
72. श्री प्रताप चन्द्र बेहरा	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	09853486986
73. श्री लाल बहादुर माझी	चौकीदार	09658590551
74. श्री हरेक बहादुर थापा	चौकीदार	07894527988
75. श्री भगवान महापात्र	चौकीदार	09861363650
76. श्री लक्ष्मी देई	चौकीदार	09777527073
77. श्रीमती बसन्ती नायक	सफाई कर्मचारी	
78. श्री श्रीधर नायक	सफाई कर्मचारी	

पुस्तकालय कर्मचारी

79. डा. वेणुधर महापात्र	सहायक पुस्तकालय ग्रेड-2	09090559268
80. श्री भगीरथी बारीक	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	09040200244
81. श्री पुरुषोत्तम काठुआ	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	09090009306
82. श्री गोपीनाथ षडङ्गी	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	06752-320404

डाटा इन्ट्री आपरेटर

83. श्री जोनसन	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09437499838
84. श्री गङ्गाधर मिश्र	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09861017350
85. श्री प्रताप कुमार मेकप	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09861372228
86. श्रीमती सुमित्रा पात्रा	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा.)	09237966966

मुक्तस्वाध्याय विभाग

* डॉ. सुकान्त कुमार सेनापति	समन्वयक	09937427094
* डॉ. ललित कुमार साहु	सह समन्वयक	09237218160
87. श्री पूर्णचन्द्र महापात्र	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	09583691660

महिला छात्रावास

*	डॉ. अनुपमा पृष्टी	अध्यक्ष	09238686390
*	डॉ. विजयलक्ष्मी महापात्र	उपाध्यक्ष	09777147567
88.	श्रीमती निर्लिप्ता पटनायक	मेट्रन	09658426553
89.	श्रीमती इन्द्राणी पण्डा	मेट्रन	
90.	श्रीमती सन्ध्यारानी मोहन्ती	मेट्रन	07377769860
91.	विनीता प्रजापति	मेट्रन	09338606232

5. पता एवं दूरभाष संख्या :

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय,

श्री सदाशिव परिसर,

पुरी-752001, उड़ीसा

फोन नं.: 06752-223439

e-mail : **sadashivacampus@ortel.net**

principalpuri2009@gmail.com

श्रीरणवीर-परिसर, जम्मू (जम्मू-कश्मीर)

1. परिचय

कश्मीर की धरा पर कल्हण, बिल्हण, मम्मट, अभिनवगुप्त आनन्दवर्धन, भामह तथा क्षेमेन्द्र सदृश प्रकाण्ड विद्वान हुए हैं जिनकी रचनाओं से संस्कृत साहित्य समृद्ध हुआ है।

उसी पावन भूप्रदेश जम्मू-कश्मीर राज्य के संस्थापक महाराजा गुलाब सिंह के सुपुत्र महाराज श्री रणवीर सिंह जी को भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत के प्रति दृढ़ अनुराग था। उन्होंने संस्कृत के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार के लिए मन्दिरों, संस्कृत पाठशालाओं, औषधालयों और पुस्तकालयों आदि की स्थापना की थी। उन्होंने श्री रघुनाथ संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना सन् 1838 ई. में की, जिसमें न केवल जम्मू-कश्मीर के अपितु भारत के अन्य राज्यों तथा नेपाल देश के कई छात्रों ने अध्ययन करके उपाधियाँ प्राप्त कीं।

संस्कृत आयोग की संस्तुति को ध्यान में रखते हुए तत्कालीन शिक्षा-मंत्रालय ने जम्मू-कश्मीर राज्य में संस्कृत का एक केन्द्र स्थापित करने का निर्णय लिया था। परिणामस्वरूप महाराजाधिराज स्व. श्री रणवीर सिंह जी के द्वारा स्थापित श्री रघुनाथ संस्कृत महाविद्यालय का सन् 1 अप्रैल 1971 ई. को अधिग्रहण कर इसका नाम 'श्रीरणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ' जम्मू रखा गया।

सन् 2002 ई. में प्रो. वी. आर. पंचमुखी जी की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा नामित समिति ने जम्मू के श्रीरणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), श्रीरणवीर परिसर, नाम घोषित किया। उसके दूसरे दिन परिसर के सभी अध्यापकों/ प्राध्यापकों की उपस्थिति में प्रो. प्रियतम चन्द्र शास्त्री, कार्यकारी प्राचार्य प्रो. केवल कृष्ण शास्त्री तथा प्रो. विश्वमूर्ति शास्त्री के आचार्यत्व में एवं प्रो. यशपाल खजूरिया की देख-रेख में कोट-भलवाल, जम्मू में प्रो. वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री जी, कुलपति रा.सं.सं., नई दिल्ली के कर कमलों द्वारा श्री रणवीर परिसर के नूतन भवन का शिलान्यास हुआ।

तत्कालीन शिक्षा मंत्री माननीय श्री अर्जुन सिंह जी के निर्देशानुसार माननीय डॉ. कर्ण सिंह ने 18 मार्च 2007 को परिसर के नए भवन का उद्घाटन किया। उस समय इस नए परिसर के प्रथम प्राचार्य के रूप में प्रो. विश्वमूर्ति शास्त्री ने पदभार ग्रहण किया। नई दिल्ली में संस्थान के दीक्षान्त समारोह (दिनांक 12.09.2009) के अवसर पर कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी जी एवं भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्री

श्री कपिल सिब्बल जी ने जम्मूस्थ श्री रणवीर परिसर के पुरुष तथा महिला छात्रावासों का इन्टरनेट के माध्यम से उद्घाटन किया तथा दिनांक 27.02.2010 को परिसर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर छात्रावासों के शिलापट्टों का अनावरण भी किया गया।

सन् 2009 में इस परिसर में शिक्षाचार्य (M.Ed.) कक्षा चलाने के लिए अपनी अनुमति दी गई जिससे जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, पंजाब तथा हरियाणा के छात्रों को लाभ मिल रहा है। सत्र 2010-2011 से वेद विभाग प्रारम्भ किया गया जिससे परिसरीय विभागों में एक नूतन विभाग का शुभारम्भ हुआ।

इस परिसर के प्रथम प्राचार्य डॉ. अनन्त मराल शास्त्री थे तथा क्रमशः डॉ. दयानन्द भार्गव, डॉ. जे. गांगुली, डॉ. मण्डन मिश्र, डॉ. अनन्त राम शास्त्री (कार्यवाहक), डॉ. मुरलीधर पाण्डेय, डॉ. जगन्नाथ पाठक, डॉ. राघव प्रसाद चौधरी, डॉ. राम किशोर शुक्ल, डॉ. प्रियतम चन्द्र शास्त्री (कार्यवाहक), प्रो. जी. गंगन्ना और प्रो. विश्वमूर्ति शास्त्री एवं प्रो. यशपाल खजूरिया कार्यवाहक प्राचार्य रहे। वर्तमान में प्रो. एम. चन्द्रशेखर परिसर के कार्यवाहक प्राचार्य हैं।

इस परिसर में प्राक् शास्त्री, शास्त्री, आचार्य, शिक्षा शास्त्री (बी.एड.), शिक्षाचार्य (एम.एड.) एवं विद्यावारिधि (पीएच.डी.) के अध्यापन की सुविधा उपलब्ध है, इसके अतिरिक्त अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्र तथा मुक्तस्वाध्याय केन्द्र के माध्यम से भी अध्यापन कार्य चल रहे हैं।

2. छात्रावास व्यवस्था

परिसर में महिला तथा पुरुष छात्रावास की व्यवस्था है। इस परिसर में लगभग 60 छात्राओं के लिए महिला छात्रावास तथा 120 छात्रों के लिए पुरुष छात्रावास उपलब्ध हैं।

3. परिसर की गतिविधियाँ

संस्थान परिसर में वर्ष के अन्त में शैक्षिक तथा क्रीड़ा स्पर्धाएँ आयोजित की जाती हैं। उनमें भाग लेना सभी छात्रों के लिए अनिवार्य होता है। अखिल भारतीय संस्कृत वाक्स्पर्धा, अखिल भारतीय नाट्य स्पर्धा (कौमुदी महोत्सव) तथा युवा महोत्सव (Youth Festival) के लिए भी परिसर के छात्रों को चुनकर भेजा जाता है।

4. परिसरीय उपलब्धियाँ

सत्र 2009-2010 से शिक्षाचार्य (एम.एड्) तथा वेद विभाग का शुभारम्भ परिसर की एक बड़ी उपलब्धि है। सत्र 2010-11 से मुक्तस्वाध्याय केन्द्र का सफल संचालन किया जा रहा है तथा अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण भी चल रहा है। सत्र 2011-12 में पार्किंग, 3 बैडमिंटन कोर्ट, खेलकूद मैदान का निर्माण करवाया गया। परिसर में सत्र 2013-2014 से बौद्धदर्शन विभाग का शुभारम्भ होगा।

5. विभागीय परिषद्

छात्रों के भाषा कौशल का समुचित विकास करने के लिए परिसर में व्याकरण परिषद्, साहित्य परिषद्, वाग्वर्धिनी परिषद् और ज्योतिष परिषद् तथा सरस्वती परिषद् गठित की गई है। हर माह के प्रत्येक शुक्रवार को प्रत्येक विभाग में परिषदीय गोष्ठियाँ आयोजित की जाती हैं, जिनमें विद्वान् अध्यापकों के निर्देशन में पूर्व निर्धारित विषय पर छात्र भाषण देते हैं। यहाँ सभी विभागाध्यक्ष एवं प्राध्यापक इनका निर्देशन करते हैं।

6. परिसरीय सदस्य

क्र.सं. सदस्य	पद	दूरभाष सं.
1. प्रो. एम. चन्द्रशेखर	**प्राचार्य (प्रभारी)**	094191171594
साहित्य विभाग		
2. डा. वी.एन. गिरि	सहाचार्य, विभागाध्यक्ष	08713080593
3. डा. सूर्यमणि रथ	सहाचार्य	09796272927
4. डा. सतीश कुमार कपूर	सहायकाचार्य	09419117304
5. सुश्री नीतू शर्मा	सहायकाचार्य (संविदा)	09464491051
6. डॉ. तेजनाथ पौडेल	सहायकाचार्य (संविदा)	08716037219
व्याकरण विभाग		
7. डा. हरिनारायण तिवारी	सहाचार्य, विभागाध्यक्ष	09906075134
8. डा. सच्चिदानन्द शर्मा	सहायकाचार्य	09419317078
9. डॉ. हरिशंकर पाण्डेय	सहायकाचार्य (संविदा)	08716037260
10. डॉ. जयश्री दाश	सहायकाचार्य (संविदा)	08716037266
ज्योतिष विभाग		
11. डॉ. प्रभात कुमार महापात्र	सहाचार्य, विभागाध्यक्ष	09419260757
12. डा. चन्द्रमौलि रैना	सहायकाचार्य	09419194230
13. डा. रामदास संगोत्रा	सहायकाचार्य	09419103606
14. डॉ. निगम पाण्डेय	सहायकाचार्य (संविदा)	08716037204
15. डॉ. रतनकुमार पाण्डेय	सहायकाचार्य (संविदा)	08716037677
दर्शन विभाग		
16. डॉ. सावित्री शतपथी	सहायकाचार्य	09419267982
17. डॉ. ज्योतिप्रकाशनन्द	सहायकाचार्य (संविदा)	09796083015
18. श्री कृष्णमुरारिमणि त्रिपाठी	सहायकाचार्य (संविदा)	09086165226

19. श्री आशीष कुमार	सहायकाचार्य (संविदा)	09419268320

वेद विभाग

20. डॉ. अरुण कुमार मिश्र	सहायकाचार्य (संविदा)	09622021075

आधुनिक विभाग

21. श्रीमती निर्मल गुप्ता	सहायकाचार्य, डोगरी विभागाध्यक्ष	09419137212
22. डॉ. सुरेश सिंह राठौड़	सहायकाचार्य, हिन्दी (तदर्थ)	09928344566
23. डॉ. योगेन्द्र कुमार दीक्षित	सहायकाचार्य,राजनीतिविज्ञान(संविदा)	08716037618
24. सुश्री चंचल गर्ग	सहायकाचार्य, इतिहास (संविदा)	09419275319
25. श्री गोपाल वर्मा	सहायकाचार्य अंग्रेजी (संविदा)	094119357591

संगणक विभाग

26. श्रीमती मीनाक्षी बावा	संगणकाध्यापिका (संविदा)	09419103810
27. श्री विशाल महाजन	संगणकाध्यापक (संविदा)	09469097589

शारीरिक शिक्षा विभाग

28. डा. राजेन्द्र लाल	सहायकाचार्य (संविदा)	09418143800

शिक्षाशास्त्र विभाग

29. डा. जगदीश राज शर्मा	सहाचार्य, विभागाध्यक्ष	09419213464
30. डा. नगेन्द्र नाथ झा	सहाचार्य	09797581211
31. डा. श्री गोविन्द पाण्डेय	सहायकाचार्य	09419171548
32. डा. विजयपाल कछवाह	सहायकाचार्य	9419260594
33. डॉ. मदन कुमार झा	सहायकाचार्य (संविदा)	09419261035
34. डॉ. ऋषिराज	सहायकाचार्य (संविदा)	08716037087
35. डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी	सहायकाचार्य (संविदा)	09460867107
36. श्री मनीषकुमारचाण्डाक	सहायकाचार्य (संविदा)	09806165369
37. डॉ. विद्याधर प्रभला	सहायकाचार्य (संविदा)	09441855655

कार्यालय कर्मचारी

38. श्री मोहन लाल	अनुभाग अधिकारी (वित्त एवं प्रशा.)	09469141194
39. श्री प्रेमचन्द्र शर्मा	सहायक	09018373162
40. श्री रोमेश चन्द्र	सहायक	09469504041
41. श्री गुरुप्रसाद	प्रवर श्रेणी लिपिक	09086165301

42. श्री सव्यसाची शर्मा	अवर श्रेणी लिपिक (तदर्थ)	09797522481
43. श्री योगेश शर्मा	डाटा इन्ट्री आपरेटर (संविदा)	09906214300
44. श्री नत्था राम	दफ्तरी	09858633148
45. श्री बाबू राम	ग्रुप सी	09858525045
46. श्रीमती कृष्णा देवी	ग्रुप सी	08803138360
47. श्री चन्द्रमणि शर्मा	ग्रुप सी	09906184257
48. श्री ओंकारनाथ शर्मा	ग्रुप सी	
49. श्री कुलदीप कुमार	चौकीदार	09419109431
50. श्री विजय कुमार	चौकीदार	09797337630
51. श्री टेक चंद	चौकीदार (तदर्थ)	09596913780
52. श्री बोध राज	ग्रुप सी	09906160015
53. श्री बिशन कुमार	बिजली कर्मचारी (संविदा)	09622058521
54. श्री राज मोहम्मद	ग्रुप सी	09622215017
55. श्री काश मोहम्मद	सफाई कर्मचारी (संविदा)	09697186347
56. श्री विजय	सफाई कर्मचारी (संविदा)	09858637925
57. श्री रोमिक पजगोत्रा	माली (संविदा)	09906300883
58. श्री जय कुमार	माली (संविदा)	
59. श्रीमती ममता	सफाई कर्मचारी (संविदा)	

मुक्त स्वाध्याय केन्द्र

* डॉ. सतीश कुमार कपूर	समन्वयक	09419117304
60. सुश्री गोमती शर्मा	डाटा इन्ट्री ऑपरेटर (संविदा)	
61. श्री पंकज शर्मा	परिचारक (संविदा)	09596802062

पुस्तकालय कर्मचारी

62. श्रीमती श्रेष्ठा जामवाल	सह पुस्तकालयाध्यक्षा	09622064046
63. श्री दीपक मूलसु	डाटा इन्ट्री ऑपरेटर (संविदा)	
64. श्री प्रशस्त शर्मा	ग्रुप सी	09858050431
65. श्री राजीव डोगरा	परिचारक (संविदा)	09596704617

महिलाछात्रावास परिचारिका

66. श्रीमती श्रेष्ठा देवी	(संविदा)
67. श्रीमती आशा रानी	

7. पता एवं दूरभाष संख्या

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय,

श्री रणवीर परिसर,

कोट भलवाल, जम्मू-181122, जम्मू व कश्मीर

दूरभाष: 0191-2623533, टेलीफैक्स: 0191-2623090

email: **ranbir.jmu@gmail.com**

गुरुवायूर्-परिसर, पुरनाट्टुकरा, (केरल)

1. परिचय

यह परिसर संस्थान द्वारा 16 जुलाई, 1979 को अधिग्रहण से पूर्व साहित्य दीपिका संस्कृत विद्यापीठ के नाम से जाना जाता था। अधिग्रहण के पश्चात् इसे केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, गुरुवायूर के रूप में जाना जाने लगा। 7 मई 2002 से संस्थान को मानित विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त होने पर इसे राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गुरुवायूर परिसर नाम दिया गया। इसका मुख्य परिसर पुरनाट्टुकरा क्षेत्र में एक शिक्षा परिसर में स्थित है जो अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों एवं सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों से घिरा हुआ है। यह 14 एकड़ की आबंटित भूमि में बना हुआ है जो त्रिचूर रेलवे स्टेशन से 11 किलोमीटर की दूरी पर गुरुवायूर मन्दिर को जाने वाले मार्ग पर है। यह नेदुमाबस्सेरी अन्तर्राष्ट्रीय विमान-पत्तन से 61 किलोमीटर दूर स्थित है। लोक निर्माण विभाग द्वारा प्रथम चरण में इस सुन्दर भवन का निर्माण किया गया है, जिसमें बालक-बालिकाओं हेतु छात्रावास, कर्मचारी आवास, पुस्तकालय तथा अतिथि गृह शामिल हैं। मुख्य भवन में शैक्षिक ब्लॉक, प्रशासनिक ब्लॉक, प्रेक्षागृह, क्रीडाक्षेत्र भवन, अतिथि-गृह, बालक व बालिकाओं के छात्रावास तथा आवास-गृह सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त, परिसर के पास पावर्टी में 50 सेन्ट सीमा भूमि पर निर्मित एक अन्य केन्द्र भी है। यह मुख्य केन्द्र से 15 किलोमीटर की दूरी पर है। यह एक मंजिला भवन है जिसमें दो बड़े हॉल, कमरे, एक प्रशासनिक कक्ष तथा आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न दस श्रेणी कक्ष हैं। इसका उपयोग मुक्तस्वाध्याय पीठ, अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण, संस्कृत शिक्षा-प्राप्ति हेतु पत्राचार पाठ्यक्रम एवं हस्तलिपि संग्रहण केन्द्र के रूप में किया जा रहा है। पहले के गुरुवायूर साहित्य दीपिका संस्कृत विद्यापीठ के संस्थापक के नाम पर इसका नामकरण 'पी.टी. कुरियाकोसे स्मृति भवन' किया गया है।

परिसर में प्राक्-शास्त्री, शास्त्री, आचार्य और शिक्षा शास्त्री (बी.एड्.) कक्षाओं का अध्यापन होता है। प्रारंभ से शास्त्री स्तर तक के छात्रों हेतु परिसर में कम्प्यूटर शिक्षा एवं अन्य आधुनिक विषयों की शिक्षा-सुविधा भी उपलब्ध है। यहाँ शोध-कार्य भी किया जाता है जिसके उपरान्त विद्यावारिधि (पीएच.डी) की उपाधि मिलती है इसके अतिरिक्त परिसर में खेलकूद एवं राष्ट्रीय सेवा योजना की भी समुचित व्यवस्था है। परिसर में वाग्वर्धिनी परिषद्, वाक्यार्थ परिषद्, व्याख्यानमाला तथा राष्ट्रीय व अन्ताराष्ट्रिय संगोष्ठी का आयोजन किया जाता है।

2. परिसर में छात्रावास-व्यवस्था

परिसर में पुरुष तथा महिला छात्रावास उपलब्ध हैं। इनमें उपलब्धता के आधार पर नियमित विद्यार्थियों के लिए स्थान कल्पित किया जाता है।

3. परिसर की गतिविधियाँ

1. वाग्वर्धिनी परिषद्, 2. वाक्यार्थ परिषद्, 3. एक्टेंशन लेक्चर सीरीज, 4. राष्ट्रीय तथा अन्ताराष्ट्रीय सेमिनार, 5. क्रीडा अभ्यास एवं स्पर्धाये, 6. फाईन आर्टस्, 7. पाण्डुलिपि संग्रह।

4. परिसर के सदस्य

शैक्षणिक विभाग

1.	**प्रो. च.ल.न. शर्मा**	**प्राचार्य (प्रभारी)**	09446037208

व्याकरण विभाग

2.	प्रो. (श्रीमती.) वी.के. शैलजा	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09446761837
3.	डा. (श्रीमती) प्रसन्ना उन्नीथन	सहायकाचार्य	09447289660
4.	डा. ललिता चन्द्रन	सहायकाचार्य	09020686173
5.	डा. विजयलक्ष्मी राधाकृष्णन्	सहायकाचार्य	09744702807
6.	डॉ. नन्दकिशोर तिवारी	सहायकाचार्य	09418404576

साहित्य विभाग

7.	प्रो. के.पी. केशवन्	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष	08281046511
8.	डा. के. कृष्णन् नम्बूदिरि	सहाचार्य	09745087544
9.	डा. ई.एम. राजन	सहाचार्य	09446619381
10.	डा. (श्रीमती) पी. इन्दिरा	सहाचार्य	09961495557
11.	डा. के विश्वनाथन	सहायकाचार्य	09846138470
12.	डा. पी.वी. श्रीदेवी	सहायक आचार्य	09446458638

अद्वैत वेदान्त विभाग

13.	डॉ. महाबलेश्वर पी. भट्ट	सहाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09040705660
14.	डा. एस्. सुब्रह्मण्यन् शर्मा	सहाचार्य	09447859340
15.	श्री श्रीकर जी. एन.	सहायकाचार्य (संविदा.)	
16.	श्री राधाकान्त पण्डा	सहायकाचार्य (संविदा.)	09995854660

न्याय विभाग

17. डा. के.ई. मधुसूदनन	सहाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09746642830
18. डॉ. आर. बालामुरुगन	सहायकाचार्य	08714496779
19. डा. एन.आर. श्रीधरन	सहायकाचार्य	09495331830
20. डा. ओ.आर. विजयराघवन	सहायकाचार्य	08547323607

ज्योतिष विभाग

21. श्री रामकृष्ण पेजत्ताय	सहायकाचार्य (संविदा.)	09744866632

शिक्षाशास्त्र विभाग

22. डा. के.के. षैन	सहायकाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09605717592
23. डा. के. गिरिधर राव	सहायकाचार्य	09605716362
24. डा. सुशान्तकुमार राय	सहायकाचार्य (संविदा.)	09388629483
25. डा. वेणुगोपाल राव	सहायकाचार्य (संविदा.)	09605729697
26. श्री सुशान्त होता	सहायकाचार्य (संविदा.)	08943556057
27. श्री के.के. तिवारी	सहायकाचार्य (संविदा.)	09895813460

शारीरिक शिक्षा एवं योग विभाग

28. श्री सुधीर के. आर.	अतिथि प्राध्यापक	09744704466

शोध एवं प्रकाशन विभाग

29. डा. एस. सुब्रह्मण्य शर्मा	सहाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09447859340

आधुनिक विषय विभाग

30 डॉ. एस.वी. रमणमूर्ति	सहाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09895767633
31. श्रीमती के.ए. जेस्सी	सहायकाचार्य (मलयालम)	0487-2204808
32. श्रीमती एम.के. शीबा	सहायकाचार्य, अंग्रेजी (संविदा)	09847159405
33. डॉ. संजय कुमार मिश्र	सहायकाचार्य, हिन्दी (संविदा)	07736953910
34. डॉ. अरविन्द सिंह गौर	सहायकाचार्य, इतिहास (संविदा)	08893060168

कम्प्यूटर शिक्षा विभाग

35. श्रीमती मणिचित्रा पी.एस.	अतिथि प्राध्यापक	09446816013
36. श्रीमती निशा विनोद	अतिथि प्राध्यापक	09809333213

मुक्त स्वाध्याय केन्द्र, पावर्टि केन्द्र (पी.टी. कुरियॉकोस स्मृति भवन)

37. डॉ. ई.पी. श्रीदेवी	समन्वयक	09496519744

38.	श्री जयसूर्या के.	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा)	09745809456
39.	श्री निखिल के.सी.	परिचारक मु.स्व.पी. (संविदा)	09447771176

5. कार्यालयीय कर्मचारी

प्रशासन

40.	श्री के.एम. भास्करन	तकनीकी प्रयोगशाला सहायक	09446060742
41.	श्री के.एम. रविन्द्रन्	अवर आशुलिपिक	09846586727
42.	श्री ई.ए. फ्रांसिस प्रकाश	प्रवर श्रेणी लिपिक	09846646987
43.	श्री जोशी. सी. आर.	प्रवर श्रेणी लिपिक	09895605532
44.	श्रीमती विजया कुमारी	प्रवर श्रेणी लिपिक	08129136842
45.	श्री पी.पी. मेरीदास	स्टाफ कार परिचालक	09447642415
46.	श्री एम.के. मोहनन्	ग्रुप सी.	09847399486
47.	श्रीमती वी. एस. शान्ता	ग्रुप सी.	09447309850
48.	श्री के.जे. गोपी	ग्रुप सी.	0487-2309286
49.	श्री ए. राधाकृष्णन्	ग्रुप सी.	09846589286
50.	श्री विनीश पी.वी.	परिचारक (दैनिक)	09567678403
51.	श्रीमती जोरलीन जोशी	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा)	09544962005
52.	श्रीमती रंजीता आर. नायर	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा)	09847605734
53.	श्रीमती अजीता के. पी.	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा)	09446461246
54.	श्री थामस एन्टोनी चित्तीलापील्ली	मैटरॉन, पुरुष छात्रावास	09496215769
55.	मिस. सुजाता पी.	मैटरॉन, महिला छात्रावास	09447196244
56.	श्रीमती मेरी एन्टोनी	मैटरॉन, महिला छात्रावास	09633288575

लेखा विभाग

57.	श्रीमती पी.बी. राधा	सहायक एवं अनुभाग अधिकारी (प्रभारी)	07293831932
58.	श्रीमती सी.एस. इन्दिरा	प्रवर श्रेणी लिपिक	0487-2695090
59.	श्री. पी.ए. मोहनन्	अवर श्रेणी लिपिक (तदर्थ)	09447351970

60. श्री पी. के. सुब्रन	ग्रुप सी	09539829199
61. श्री वी. शिवशंकरन	वित्त सलाहाकार (संविदा)	09446789967

पुस्तकालय

62. श्री राऊतमाले आनन्द शिवराम	पुस्तकालयाध्यक्ष	09495636305
63. श्री विक्रम जीत	पुस्तकालय सहायक	08891849504
64. श्री. पी.एस. राधाकृष्णन्	अवर श्रेणी लिपिक (तदर्थ)	09995267373
65. श्री एम.टी. कन्नन	ग्रुप सी	09645145105

6. पता एवं दूरभाष संख्या

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय,

गुरुवायूर् परिसर,

पो. पुरनाटुक्करा, त्रिश्शूर-680551, केरल

दूरभाष: 0487-2307208, टेलीफैक्स: 0487-2307608

email: **rss.guruvayoor@gmail.com**

जयपुर-परिसर, जयपुर (राजस्थान)

1. परिचय

राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगरी जयपुर में राजस्थान संस्कृत अकादमी की अनुशंसा एवं राज्य सरकार के अनुरोध पर भारत सरकार द्वारा राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के अन्तर्गत 13 मई, 1983 को केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना की गई। विद्यापीठ के शैक्षणिक शोध एवं प्रकाशन कार्यों को उत्कृष्ट एवं सुव्यस्थित रूप देने की दृष्टि से स्व. आचार्य प्रो. रामचन्द्र द्विवेदी की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया था। इसमें जोधपुर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. दयानन्द भार्गव, उदयपुर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. मूलचन्द पाठक तथा राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर के निदेशक डॉ. पद्म पाठक, संस्कृत शिक्षा राजस्थान सरकार के निदेशक सदस्य के रूप में सम्मिलित किये गये। ज्ञातव्य है कि इस संस्था के शुभारम्भ एवं विकास में डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी (प्रथम प्राचार्य), डॉ. सतीशचन्द्र कीलावत (विशेष कार्य अधिकारी), डॉ. आर. महादेवन्, डॉ. रामकिशोर शुक्ल, डॉ. हिन्द केसरी तथा प्रो. अर्कनाथ चौधरी, प्रो. वासुदेव शर्मा तथा डॉ. जि.गङ्गन्ना की महती भूमिका रही। वर्तमान में परिसर में डॉ. प्रकाश पाण्डेय प्राचार्य हैं।

परिसर में प्राक्शास्त्री, शास्त्री, आचार्य, शिक्षाशास्त्री, शिक्षाचार्य तथा विद्यावारिधि के अध्यापन की सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

वर्तमान में यह संस्था निम्नलिखित विभागों में कार्य कर रही है-

(क) शोध एवं प्रकाशन विभाग -

इसके अन्तर्गत साहित्य, व्याकरण, धर्मशास्त्र, जैनदर्शन, ज्योतिष, सर्वदर्शन, शिक्षाशास्त्र आदि विषयों पर १३७ छात्र शोध कर रहे हैं जिनमें १८ छात्र कनिष्ठ शोधवृत्ति (JRF) प्राप्त कर रहे हैं।

राजस्थान में आज भी हजारों हस्तलिखित ग्रन्थ और दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ विद्यमान हैं जिनके संग्रहण, संरक्षण, सम्पादन व प्रकाशन से संस्कृत के इतिहास में अनेक नये पृष्ठ जुड़ सकते हैं। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए जयपुर परिसर ने पं. गोपीनाथ दाधीच की रचना माधवस्वातन्त्र्यम्, भट्ट मथुरानाथ शास्त्री की रचनायें 'गीर्वाणगिरागौरवम्' तथा 'प्रबन्धपारिजात', पं. खड्गनाथ मिश्र की रचना 'शाब्दबोधादिवादपंचकप्रकाश', डॉ. हिन्द केसरी सम्पादित 'तन्त्रप्रदीप' एवं प्रो. रामचन्द्र द्विवेदी सम्पादित 'न्यायकुसुमांजलि' की प्राचीन टीका जैसे ग्रन्थों का प्रकाशन कार्य पूर्ण किया है। इस परम्परा में परिसर के प्राध्यापकों एवं शोधछात्रों ने भी अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन कर प्रकाशन कराया है। उसी कड़ी में मुख्यालय द्वारा पं. मधुसूदन ओझा के 'व्याकरण विनोद' एवं ठाकुर संग्राम सिंह की 'बाल शिक्षा' ग्रन्थ का

प्रकाशन हुआ है। डा. रमाकान्त पाण्डेय के सम्पादकत्व में 'मञ्जुनाथ ग्रन्थावली' (पाँच भाग) तथा 'कच्छवंश महाकाव्य' का प्रकाशन संस्थान मुख्यालय द्वारा किया गया है। इस प्रकार परिसर ने राजस्थान में प्रणीत साहित्य के प्रकाशन में बहुमूल्य योगदान दिया है।

परिसर से जयन्ती (वार्षिक) तथा परिसर सन्देश (त्रैमासिक) पत्रिकाओं का प्रकाशन भी हो रहा है।

(ख) परिसर में संचालित विभाग

परिसर में प्राक्शास्त्री से विद्यावारिधि तक की कक्षाओं हेतु प्राचीन शास्त्रों के अन्तर्गत व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, जैन दर्शन, सर्वदर्शन, शिक्षाशास्त्र एवं आधुनिक विषय विभागों में अध्ययन-अध्यापन किया जा रहा है। परिसर में शास्त्रीय विषयों एवं शिक्षाशास्त्र विषय में विद्यावारिधि (पीएच.डी) करने की भी सुविधा उपलब्ध है। परिसर के अनेक छात्र शास्त्रीय शलाका परीक्षाओं नाट्यस्पर्धाओं एवं भाषण प्रतियोगिताओं में अखिल भारतीय स्तर पर अनेक पुरस्कारों एवं पदकों को प्राप्त कर चुके हैं।

शिक्षाशास्त्र विभाग का मुख्य उद्देश्य संस्कृत शिक्षण की आधुनिकतम तकनीकों का प्रशिक्षण देकर अच्छे अध्यापक तैयार करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए छात्र-छात्राओं को शिक्षा शास्त्री (बी.एड.) एवं शिक्षाचार्य (एम.एड.) के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। अखिल भारतीय स्तर पर चयन परीक्षा के आधार पर दोनों पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिया जाता है।

आधुनिक विषय विभाग के अन्तर्गत विज्ञान हिन्दी साहित्य, राजनीति एवं अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन अध्यापन प्राक्शास्त्री एवं शास्त्री स्तर पर किया जा रहा है। परिसर में स्नातक स्तर पर कम्प्यूटर व पर्यावरण विज्ञान अनिवार्य विषय है। आचार्य में केवल शास्त्रीय विषय पढ़ाये जाते हैं।

(ग) परिसर में विद्यमान प्रयोगशालाएँ -

(अ) मनोविज्ञान प्रयोगशाला- परिसर के शिक्षाशास्त्र विभाग में विविध उपकरणों से सुसज्जित मनोविज्ञान प्रयोगशाला है, जिसमें परम्परागत संस्कृत छात्राध्यापकों छात्राध्यापिकाओं को विविध मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का अभ्यास करवाया जाता है ताकि वे छात्रों से सम्बन्धित समस्याओं का निवारण कर अपने शिक्षण में नवाचारों का अनुसरण कर सकें।

(आ) शैक्षिक तकनीकी व भाषा प्रयोगशाला— शिक्षाशास्त्र विभाग में शैक्षिक-तकनीकी प्रयोगशाला भी विविध नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित है जिसमें भावी अध्यापकों को ओवर हैड प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर पर पावर पॉइन्ट प्रजेन्टेशन, स्लाइड प्रोजेक्टर आदि का प्रयोग करते हुए संस्कृत शिक्षण को प्रभावी बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। भाषा प्रयोगशाला के माध्यम से श्रवण व भाषण कौशलों का विकास किया जाता है।

(इ) कम्प्यूटर प्रयोगशाला- संस्थान परिसर के स्नातकों को कम्प्यूटर की अनिवार्य शिक्षा देने हेतु एक कम्प्यूटर प्रयोगशाला है।

(ई) व्यायामशाला- वर्ष 2010 में संस्थान परिसर में जिम (व्यायामशाला) का निर्माण किया गया है। शारीरिक स्वास्थ्य हेतु छात्र नि:शुल्क व्यायामशाला का उपयोग कर सकते हैं।

2. परिसर में छात्रावास व्यवस्था

परिसर में पुरुष तथा महिला छात्रावास की व्यवस्था उपलब्ध हैं। नियमित छात्र-छात्राओं को स्थान पर उपलब्धता के आधार पर छात्रावास में स्थान दिया जाता है।

3. परिसर की गतिविधियाँ

(क) शैक्षिक एवं सहशैक्षिक प्रवृत्तियाँ

1. शास्त्रीय व्याख्यान माला

परिसर में विभिन्न शास्त्रीय व्याख्यानमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष संस्कृत क्षेत्र में विशिष्ट ख्याति प्राप्त विद्वानों के व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं। अब तक इसके अन्तर्गत डॉ. सीताराम शास्त्री, पद्मभूषण आचार्य पट्टाभिराम शास्त्री, आचार्य बदरी नाथ शुक्ल, डॉ. विद्यानिवास मिश्र, डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी, डॉ. हर्षनाथ मिश्र, पं. रामप्रसाद त्रिपाठी, पं. कुलमणि मिश्र, डॉ. करुणापति त्रिपाठी, प्रो. जयमन्त मिश्र एवं डॉ. रामकरण शर्मा आदि के व्याख्यान आयोजित किये जा चुके हैं। इस शृंखला में काशी के मूर्धन्य नैयायिक पं. वशिष्ठ त्रिपाठी के द्वारा न्यायशास्त्र पर 21 दिनों की एक व्याख्यानमाला का भी आयोजन किया गया। सत्र 2007-08 में आचार्य रामचन्द्र पाण्डेय के व्याख्यान का आयोजन किया गया। परिसर के रजत जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय अखिल भारतीय साहित्य शास्त्रीय विद्वत्गोष्ठी एवं कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। पं. मधुसूदन ओझा स्मृति व्याख्यान के अन्तर्गत पिछले सत्र में प्रो. अशोक अक्लूजकर, (प्रोफेसर ब्रिटिश कोलम्बिया युनिवर्सिटी, कनाडा) का विशेष व्याख्यान हुआ। परिसर में पण्डित राजोत्तर अलंकार शास्त्र, नागेशोत्तर व्याकरण शास्त्र, ईश्वरविलास में जयपुर वर्णन, आधुनिक संस्कृत साहित्य : समस्याएं और सम्भावनाएं, 21वीं सदी के प्रथम दशक में संस्कृत परम्पराओं का विकास जैसे विषयों पर संगोष्ठियां आयोजित की गईं।

इक्कीस दिवसीय व्याकरण शिक्षण कार्यशाला में अष्टाध्यायी का अध्यापन डॉ. पुष्पा दीक्षित द्वारा तथा इक्कीस दिवसीय वेदान्त शास्त्रीय कार्यशाला में वेदान्त परिभाषा का अध्यापन प्रो. पारसनाथ द्विवेदी द्वारा कराया गया। डॉ. कमल वाशिष्ठ द्वारा नाट्य कार्यशाला में व्याख्यान दिये गए। रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में जयपुर परिसर से सेवानिवृत्त एवं प्रारम्भ से कार्यरत प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों का सम्मान किया गया।

2009-10 के सत्र में अन्त:परिसरीय युव समारोह, अखिल भारतीय संस्कृत वाक्स्पर्धा तथा शलाका परीक्षा का आयोजन 27 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक परिसर में किया गया। जिसमें दसों परिसरों तथा 16 राज्यों के लगभग 700 छात्रों एवं 100 से अधिक विद्वानों ने सहभागिता की।

सत्र 2012-13 में 49 सह शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिनमें संस्थान के कुलपति और कुलसचिव सहित देश के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों के विभिन्न शास्त्रीय एवं नवीन समसामयिक विषयों पर व्याख्यान आयोजित हुए। प्रो. हरिराम आचार्य, प्रो. रामानुजदेवनाथ, प्रो. कृष्णचन्द्रचतुर्वेदी, प्रो. उमेश शास्त्री, प्रो. विभा उपाध्याय, प्रो. एस.एल. जैन, प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल आदि विद्वानों ने अपने व्याख्यान द्वारा परिसर के छात्रों, प्राध्यापकों एवं अन्य जिज्ञासुओं को लाभान्वित किया।

2. प्राकृत-अध्ययन एवं शोध केन्द्र-

इस केन्द्र के अन्तर्गत प्राकृत भाषा एवं साहित्य के अध्ययन तथा अनुसन्धान को प्रोत्साहित करने के लिये विविध योजनाओं पर कार्य कराया जा रहा है। इस विभाग में प्राकृत विकास अधिकारी एवं वरिष्ठ-कनिष्ठ अनुसन्धाता कार्य कर रहे हैं।

3. परियोजना विभाग-

परियोजना के अन्तर्गत डॉ. रमाकान्त पाण्डेय द्वारा राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की वित्तीय स्वीकृति से राजस्थान के संस्कृत साहित्य पर परियोजना कार्य आरम्भ किया गया है जिसे वर्तमान में प्रो. अर्कनाथ चौधरी के मार्गदर्शन में संचालित किया जा रहा है।

4. सांध्यकालीन पाठ्यक्रम

(क) फलित ज्योतिष परिचय पाठ्यक्रम तथा

(ख) भारतीय वास्तुशास्त्र परिचय पाठ्यक्रम

उक्त दोनों पाठ्यक्रम तीन माह के लिए आयोजित किए जाते हैं। यह सशुल्क पाठ्यक्रम सायंकालीन कक्षाओं के माध्यम से संचालित होते हैं। ये पाठ्यक्रम सत्र में दो बार आयोजित किये जाते हैं। इन लोकप्रिय पाठ्यक्रमों में अधिकतम 45 शिक्षार्थियों को प्रवेश दिया जाता है।

5. अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्र-

चतुर्विध कौशल के विकास हेतु परिसर में प्रति वर्ष प्रथमा दीक्षा एवं द्वितीया दीक्षा पाठ्यक्रमों का आयोजन त्रैमासिक दो चक्रों के माध्यम से किया जा रहा है।

6. राष्ट्रीय सेवा योजना

इस परिसर में उक्त योजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिसमें गत तीन वर्षों में छात्रों द्वारा साक्षरता, रक्तदान, पर्यावरण संरक्षण, सफाई आदि की दिशा में अनेक कार्य किये गये हैं। इस योजना में श्रेष्ठ छात्रों का चयन कर उन्हें पुरस्कृत किया जाता है।

7. योग शिविर

वर्ष 2009 से नियमित रूप से संस्थान परिसर में एक सप्ताह के लिए योगशिविर संचालित किया जा रहा है। इसमें महर्षि पतञ्जलि योगपीठ के प्राध्यापकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है। यह प्रशिक्षण पूर्णत: नि:शुल्क है।

8. पुस्तकालय-

परिसर में महामहोपाध्याय मधुसूदन ओझा ग्रन्थालय नाम से पुस्तकालय विद्यमान है। जिसमें विभिन्न विषयों पर आधारित 27000 से अधिक ग्रन्थ उपलब्ध हैं।

4. परिसरीय उपलब्धियाँ

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा माह अक्टूबर 2012 में भोपाल परिसर में पञ्चम अन्त:परिसरीय युवमहोत्सव में जयपुर परिसर द्वारा 16 स्वर्णपदक, 18 रजतपदक एवं 9 कांस्यपदक सहित प्रथम स्थान के साथ विजय-वैजयन्ती प्राप्त किया गया। इस परिसर के छात्रों का नवम्बर 2012 में जयपुर में आयोजित राज्य-स्तरीय चयनस्पर्धाओं में छात्रों का वर्चस्व रहा। दिसम्बर 2012 में बिलासपुर में आयोजित अखिलभारतीय अन्तर्विश्वविद्यालय मुक्केबाजी प्रतियोगिता में इस परिसर के 6 मुक्केबाजों का दल सम्मिलित हुआ। जनवरी 2012 में पुरी में आयोजित 'ग्लोरी फेस्टिवल' 2013 में पांच छात्रों के दल ने भाग लिया जिसमें एक छात्र को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। जनवरी 2013 को महारानी महिला विश्वविद्यालय में आयोजित वाद-विवाद स्पर्धा में 1 प्रथम एवं 1 तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। जनवरी 2013 को जयपुर में श्रीदिगम्बरजैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय में संस्कृतशास्त्रीय स्पर्धा में जैन-बौद्ध भाषण प्रतियोगिता में इस परिसर के छात्रों ने प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अन्त: परिसरीय नाट्यस्पर्धा में इस वर्ष परिसर को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ तथा परिसर की छात्रा अन्तिम बाला जैन को सर्वश्रेष्ठ नायिका पुरस्कार प्राप्त हुआ।

फरवरी 2013 को राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति में आयोजित प्रतिभा समारोह में परिसर को दो रजत पदक प्राप्त हुए। मार्च 2013 को गरली में आायोजित अखिल भारतीय शलाका परीक्षा एवं शास्त्रीय स्पर्धाओं में 04 पदक परिसरीय छात्र व 03 पदक बाह्य महाविद्यालयों के द्वारा प्राप्त कर राजस्थान में तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। मार्च 2013 में आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत विश्वविद्यालय गुवाहाटी में इस परिसर के छात्रों द्वारा 20 पदक प्राप्त किये गये जिसमें कुमारी रेणुका आचार्य प्रथमवर्ष ने तीन स्वर्ण एवं एक रजत पदक प्राप्त किया।

5. परिसर के सदस्य

1.	**डा. प्रकाश पाण्डेय**	**प्राचार्य**	0141-2761236 (का.)
साहित्य विभाग			
2.	डॉ. रामकुमार शर्मा	सहाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09462864307
3.	डॉ. किशोर कुमार दलाई	सहायकाचार्य	09460455407
4.	डॉ. उमाकान्त चतुर्वेदी	सहायकाचार्य	09414888050
5.	डॉ. हरीश चन्द्र तिवाड़ी	सहायकाचार्य	09785533878
व्याकरण विभाग			
6.	प्रो. अर्कनाथ चौधरी	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09413561390
7.	प्रो. शिवकान्त झा	आचार्य	09352682044
8.	डॉ. कमलचन्द योगी	सहाचार्य	09824368482
9.	डॉ. ललित कुमार त्रिपाठी	सहाचार्य	09413694322
10.	डॉ. विष्णुकान्त पाण्डेय	सहाचार्य	09414606724
ज्योतिष विभाग			
11.	प्रो. इन्द्रमणि दास	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09928693729
12.	डॉ शुभस्मिता मिश्रा	सहायकाचार्य	09413840157
13.	डॉ विजेन्द्र कुमार शर्मा	सहायकाचार्य	09785236530
14.	श्री रामेश्वर दयाल शर्मा	सहायकाचार्य (संविदा)	09983597721
15.	श्री प्रवेश व्यास	सहायकाचार्य (संविदा)	09694504940
16.	डॉ. नीरज त्रिवेदी	सहायकाचार्य (संविदा)	09680745904
धर्मशास्त्र विभाग			
17.	प्रो. भगवती सुदेश	आचार्य एवं विभागाध्यक्षा	09414889076
18.	डॉ. सिद्धार्थ शंकर दास	सहायकाचार्य (संविदा)	08233893302
19.	डॉ. श्रीमती कृष्णा शर्मा	सहायकाचार्य (संविदा)	09314255155
जैनदर्शन विभाग			
20.	प्रो. श्रीयांश कुमार सिंघई	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09509846622
21.	डॉ. कमलेश कुमार जैन	सहाचार्य	09887605319
22.	डॉ. आनन्द कुमार जैन	सहायकाचार्य (संविदा)	09571660887

शिक्षाशास्त्र विभाग

23.	प्रो. (श्रीमती) संतोष मित्तल	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09413586550
24.	प्रो. सोहनलाल पाण्डेय	आचार्य	09414457029
25.	डॉ. वाई. एस. रमेश	सहाचार्य	09468843973
26.	डॉ. बत्तीलाल मीणा	सहायकाचार्य	09414345294
27.	डॉ. पवन कुमार	सहायकाचार्य	09571216994
28.	डॉ. दरियाव सिंह	सहायकाचार्य	09462865033
29.	श्री गोरांग बाघ	सहायकाचार्य	09530274431
30.	डॉ. शीशराम	सहायकाचार्य	09829999632
31.	डॉ. विजय कुमार दाधीच	सहायकाचार्य (संविदा)	09772006777
32.	श्री परमेश कुमार शर्मा	सहायकाचार्य (संविदा)	08385945895
33.	डॉ. हरिओम शर्मा	सहायकाचार्य (संविदा)	09414288818

शारीरिक शिक्षा विभाग

34.	डॉ. ओमप्रकाश भडाना	सहाचार्य	09413193936

सर्वदर्शन विभाग

35.	प्रो. वैद्यनाथ झा	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष	08955634298
36.	डॉ.(श्रीमती) सत्यम कुमारी	सहाचार्य	09785737971
37.	श्री प्रदीप कुमार साहू	सहायकाचार्य (संविदा)	09509277159

आधुनिक विषय विभाग

38.	डॉ. सीमा अग्रवाल	सहायकाचार्य (राजनीतिविज्ञान)	09530386363
39.	डॉ. विनी शर्मा	सहायकाचार्य(राजनीतिविज्ञान,संविदा)	09351507647
40.	डॉ. सुभाष चन्द्र	सहायकाचार्य (हिन्दी) (संविदा)	09928846874
41.	डॉ. राजेश कुमार शुक्ला	सहायकाचार्य (हिन्दी) (संविदा)	08290925773
42.	श्रीमती रुचि शर्मा	सहायकाचार्य (अंग्रेजी) (संविदा)	09461624823
43.	डॉ. फरवट सिंह	सहायकाचार्य (अंग्रेजी) (संविदा)	09929590627
44.	श्रीमती नमिता मित्तल	सहायकाचार्य (कम्प्यूटर) (संविदा)	09413444921
45.	श्री मोहित झालानी	सहायकाचार्य (कम्प्यूटर) (संविदा)	09829799949
47.	श्री प्रदीप मिश्र	सहायकाचार्य (कम्प्यूटर) (संविदा)	09602354433

प्राकृत-अध्ययन शोध केन्द्र

48.	डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जैन	विकास अधिकारी	09461016260
49.	डॉ. तारा डागा	वरिष्ठ शोध अध्येता	09351250238
50.	डॉ. सुदर्शन मिश्र	वरिष्ठ शोध अध्येता	07597184515
51.	डॉ. सुमत कुमार जैन	वरिष्ठ शोध अध्येता	09024764349
52.	श्री पुलक गोयल	वरिष्ठ शोध अध्येता	09314591397
53.	रामनरेश जैन	वरिष्ठ शोध अध्येता	

पुस्तकालय विभाग

54.	डॉ. अवधेश कुमार कौशिक	पुस्तकालयाध्यक्ष	09414981677
55.	श्री श्याम सुन्दर पाण्डेय	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	09649690073
56.	श्री सुरेन्द्र सिंह नरूका	ग्रुप सी	08769733308

स्वाध्याय केन्द्र

*	प्रो. अर्कनाथ चौधरी	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09413561390
57.	श्री मनमोहन दाधीच	डाटा एन्ट्री ऑपरेटर	09829528744
58.	श्री ताराचन्द शर्मा	आदेश पालक	08955805430

कार्यालय कर्मचारी

59.	श्री महेन्द्र कुमार शर्मा	अनुभाग अधिकारी	09414321297
60.	श्री रामजीलाल मीणा	सहायक	07568841108
61.	श्री शशिकान्त मुद्गल	सहायक	0141-2411329
62.	डॉ. लोकेश कुमार गुप्ता	वरिष्ठ आशुलिपिक	09829200336
63.	श्री शंकर जयकिशन	वरिष्ठ लिपिक	09829960131
64.	श्री अशोक कुमार शर्मा	वरिष्ठ लिपिक	09784238627
65.	श्री गिरधर गोपाल पोपली	वरिष्ठ लिपिक	09829566679
66.	श्री द्वारका प्रसाद माहूर	कनिष्ठ लिपिक	09414040811
67.	श्री हरशिव मीणा	कनिष्ठ लिपिक	09928140185
68.	श्री विजय नेतरीवाल	कनिष्ठ लिपिक	
69.	सुश्री श्वेता सिंह	कनिष्ठ लिपिक (तदर्थ)	09828565410
70.	श्री बाबूलाल शर्मा	ग्रुप सी	09414973951

71. श्री हजारी लाल शर्मा	ग्रुप सी	09875124160
72. श्री परमेश्वर दयाल शर्मा	ग्रुप सी	09413843871
73. श्री सीताराम शर्मा	ग्रुप सी	09352754637
74. श्री रतन सिंह	ग्रुप सी	09825521906
75. श्री राजेश कुमार शर्मा	ग्रुप सी	09460258494
76. श्री जसवन्त कुमार	ग्रुप सी	09001236080
77. श्री कन्हैया लाल	सफाई कर्मचारी	07742609571
78. श्री श्रवण सिंह	चौकीदार (तदर्थ)	09602582091
79. डॉ. रविकान्त मणि	प्रयोगशाला सहायक (तकनीकि)	09414970993
80. श्री श्याम सुन्दर पाण्डेय	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	09649690073
81. श्री सुरेन्द्र सिंह नरूका	ग्रुप सी	08769733308
82. श्री महेश कुमार शर्मा	वित्त परामर्शक	0141-2763922

संविदागत कार्यालय कर्मचारी

83. श्री राजेश कुमार शर्मा	डाटा एन्ट्री ऑपरेटर	09928837575
84. श्री रामप्रसाद जाजोरिया	डाटा एन्ट्री ऑपरेटर	09694839124
85. श्री दुलाराम सैनी	डाटा एन्ट्री ऑपरेटर	08946974486
86. श्रीमती लक्ष्मी मीणा	मैट्रेन (महिला छात्रावास)	08503897579
87. श्रीमती रीना मिश्रा	मैट्रेन (महिला छात्रावास)	09529216487
88. सुश्री नेहा पालीवाल	मैट्रेन (महिला छात्रावास)	09460814686
89. श्री देवनारायण मीणा	माली	09799079466
90. श्री आशीष कुमार शर्मा	पम्प ऑपरेटर कम इलैक्ट्रीशियन	08387958146

6. पता एवं दूरभाष संख्या :

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय,

जयपुर परिसर,

त्रिवेणी नगर गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302018, राजस्थान

दूरभाष नं.: 0141-2761115 (का.)

0141-2761236 (प्रा.) 0141-2760686

email: **principaljp.in@gmail.com**

लखनऊ-परिसर, लखनऊ (उ. प्र.)

1. परिचय

मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार के अधीन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में दिनांक 2 अगस्त 1986 को केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ के रूप में इस परिसर की स्थापना हुई। उसी समय से यह संस्था अध्ययन-अध्यापन, शोध, प्रकाशन एवं संस्कृत के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में अग्रसर रहा है। मई 2002 में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मानित विश्वविद्यालय के रूप में अधिसूचित होने के पश्चात् यह विद्यापीठ, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, लखनऊ परिसर के नाम से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर है। लखनऊ अन्य शास्त्रीय विद्याओं के साथ-साथ प्राच्यविद्या का भी केन्द्र है। भारतीय संस्कृति का विकास, राष्ट्रिय एकता एवं सर्वधर्म समन्वय आदि की दृष्टि से अवध क्षेत्र के इस नगर में इस तरह के संस्कृत संस्थान का होना विशिष्ट महत्त्व रखता है। सम्प्रति यह संस्थान गोमतीनगर के विशालखण्ड में दस एकड़ भूमि के परिसर में पुष्पित एवं पल्लवित है।

इस परिसर में प्राक्शास्त्री (इण्टरमीडिएट), शास्त्री (बी.ए.), आचार्य (एम.ए.) और शिक्षाशास्त्री (बी.एड्.) पाठ्यक्रमों के अध्ययन-अध्यापन तथा विद्यावारिधि (पीएच्. डी.) हेतु शोध की व्यवस्था है। उपर्युक्त पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त इस परिसर में आम जनता के लिये साप्ताहिक एवं पाक्षिक संस्कृत शिविर, त्रैमासिक अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण, त्रैमासिक ज्योतिष परिचय पाठ्यक्रम और त्रैमासिक वास्तुशास्त्र परिचय पाठ्यक्रम जैसे आकर्षक पाठ्यक्रम भी चलाए जाते हैं।

छात्रों के सर्वतोमुखी विकास की दृष्टि से परम्परागत शास्त्रों के साथ-साथ अन्तर-स्नातक एवं स्नातक स्तर में अनिवार्य रूप से हिन्दी एवं अंग्रेजी और वैकल्पिक विषय के रूप में राजनीतिशास्त्र एवं अर्थशास्त्र भी पढ़ाए जाते हैं।

अद्यतन संगणक युग में छात्र अपने प्राचीन शास्त्रीय ज्ञान को संगणक यंत्र के माध्यम से अधिक उपयोगी बना सके इस दृष्टि से स्नातक स्तर तक की कक्षाओं में संगणक का प्रायोगिक ज्ञान जैसे Operating System (DOS, WINDOWS, UNIX, LINUX etc.) MS OFFICE, C LANGUAGE आदि का भी अध्यापन किया जाता है।

शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिये जहां एक ओर क्रीडा की व्यवस्था है, वहीं दूसरी ओर योगासन और प्राणयाम भी सिखाया जाता है।

इस परिसर में अपने-अपने शास्त्रों के निष्णात विद्वान शिक्षक पारंपरिक ज्ञान विज्ञान को अद्यतन तकनीकी के माध्यम से अध्यापन के लिये सदैव तत्पर रहते हैं। अध्ययन-अध्यापन एवं शोध का माध्यम संस्कृत है।

परिसर में निम्नलिखित प्रभाग क्रियाशील हैं:-

अ. संगणक केन्द्र

परिसर में आधुनिक संगणक यन्त्रों (COMPUTERS) से सुसज्जित एक संगणक केन्द्र है, जिसमें अन्तर-स्नातक एवं स्नातक कक्षाओं के छात्रों को प्रोग्रामिंग एवं अप्लिकेशन की शिक्षा दी जाती है।

आ. मनोविज्ञान प्रयोगशाला

परिसर के शिक्षाशास्त्र विभाग में सभी उपकरणों से सुसज्जित एक मनोविज्ञान प्रयोगशाला है। इसमें प्रशिक्षार्थियों (छात्राध्यापकों) को पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रयोग करवाए जाते हैं ताकि परम्परागत शास्त्रज्ञान और मनोवैज्ञानिक आधुनिक तकनीकी का तुलनात्मक अध्ययन कर इस क्षेत्र में अधिकाधिक कार्य कर सकें।

इ. शैक्षिक तकनीकी प्रयोगशाला

परिसर के शिक्षाशास्त्र विभाग में अपेक्षित उपकरणों से सुसज्जित एक शैक्षिक तकनीकी प्रयोगशाला भी है। इस प्रयोगशाला में छात्राध्यापकों को OHP एवं Slides प्रोजेक्ट, टेप रिकार्डर, TV आदि के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाता है।

ई. पालि–अध्ययन केन्द्र

यह केन्द्र मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार के सौजन्य से इस परिसर में संचालित है। इसमें त्रिपिटक के पालि ग्रन्थों तथा प्राकृत ग्रन्थों की संस्कृतच्छाया कार्य के अतिरिक्त एतत्सम्बन्धी शोध एवं रचनात्मक कार्य हो रहे हैं।

2. परिसर में छात्रावास सुविधाएँ

परिसर में पुरुष तथा महिला छात्रावास की व्यवस्था उपलब्ध हैं। नियमित छात्र-छात्राओं को स्थान उपलब्धता के आधार पर छात्रावास में स्थान दिया जाता है।

1. पुरुष छात्रावास – परिसर में 180 छात्रों के लिये तीन मंजिला पुरुष छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है।

2. महिला छात्रावास – परिसर में 63 छात्राओं के लिये आवासीय व्यवस्था उपलब्ध है।

3. परिसरीय गतिविधियाँ

सम्प्रति इस परिसर में मुख्य रूप से ज्योतिष, व्याकरण, साहित्य एवं बौद्ध दर्शन विषय में अध्ययन-अध्यापन एवं शोध कार्य चल रहे हैं। इसके अतिरिक्त राष्ट्रिय अध्यापक

शिक्षा परिषद् (NCTE) के मानदंडों एवं स्वीकृति के अनुसार संस्कृत के स्नातकों को शिक्षा शास्त्री (बी.एड.) अर्थात् शिक्षक प्रशिक्षण (Teacher's Training) दिया जाता है।

अध्ययन के साथ–साथ छात्र-छात्राओं में प्राचीन पद्धति से शास्त्रार्थ करने, किसी भी शास्त्रीय विषय पर व्याख्यान देने, शलाका परीक्षा, अन्त्याक्षरी आदि में दक्षता के लिये प्रति सप्ताह शुक्रवार को 2.00 बजे से वाग्वर्धिनी सभा आयोजित की जाती है। इस सभा में प्राचार्य पदेन अध्यक्ष होते हैं।

4. परिसर की उपलब्धियाँ

4.1 छात्रों की उपलब्धियाँ

इस परिसर के छात्रों ने पूर्ण अनुशासित होकर अपने–अपने शास्त्रों का अध्ययन करते हुए राष्ट्रिय स्तर पर आयोजित अखिल भारतीय शैक्षिक एवं सांस्कृतिक स्पर्धाओं में अनेक पुरस्कार प्राप्त किये हैं। क्रीड़ा एवं कुश्ती के क्षेत्र में भी यहाँ के छात्रों को उल्लेखनीय सफलता मिली है। प्राच्य विद्याओं के अध्ययन एवं शोध के क्षेत्र में यह परिसर अग्रसर है।

4.2 शिक्षकों की उपलब्धियाँ

परिसर में कार्यरत सभी शिक्षक अपने–अपने क्षेत्र के सुप्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित विद्वान् हैं। यहाँ के शिक्षकों को विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है साथ ही शिक्षकों की अनेक कृतियां भी विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत हुई हैं। परिसर के युवा शिक्षक भी अपनी कार्य कुशलता, मेधा, श्रम, निष्ठा और अनुशासन के माध्यम से सफलता के पथ पर अग्रसर हैं। लखनऊ परिसर के अध्यापक समूह की ओर से 'ज्ञानायनी' पत्रिका का त्रैमासिक तथा विशेषांक नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है जिसके प्रकाशक तथा सम्पादक प्रो. शिशिर कुमार पाण्डेय हैं। छात्रों के लेखन क्षमता के विकास हेतु परिसरीय पत्रिका **'गोमती'** का भी प्रकाशन किया जाता है।

5. परिसर के सदस्य

1.	**प्रो. सुरेन्द्र झा**	**प्राचार्य**	09452936169

व्याकरण विभाग

2.	प्रो. सुरेन्द्र पाठक	आचार्य एवं अध्यक्ष	09450466200
3.	डा. धनीन्द्र कुमार झा	सहाचार्य	09450501036
4.	डा. भारत भूषण त्रिपाठी	सहाचार्य	07499392926
5.	डा. ब्रज भूषण ओझा	सहायकाचार्य	09827563940
6.	श्री यदुवीर स्वरूप ब्रह्मचारी	सहायकाचार्य (संविदा)	08765363323

साहित्य विभाग

7.	प्रो. रामलखन पाण्डेय	आचार्य एवं अध्यक्ष	09532100121
8.	डा. गज़ाला अंसारी	सहायकाचार्य	09453178887
9.	डा. पवन कुमार	सहायकाचार्य	09415521230
10.	डा. माला चन्द्रा	सहायकाचार्य	

बौद्धदर्शन विभाग

11.	प्रो. विजय कुमार जैन	आचार्य एवं अध्यक्ष	09415789445
12.	डा. अवधेश कुमार चौबे	सहाचार्य	09454280537
13.	डा. गुरचरण सिंह नेगी	सहायकाचार्य	09936253373

ज्योतिष विभाग

14.	डा. मदन मोहन पाठक	सहाचार्य एवं अध्यक्ष	09455437066
15.	डा. अमित कुमार शुक्ल	सहायकाचार्य	09473691508
16.	डॉ. ज्योति प्रसाद दास	सहायकाचार्य (संविदा)	07897518522
17.	डा. उमेश कुमार पाण्डेय	सहायकाचार्य (संविदा)	09450114522
18.	डॉ.(श्रीमती) चन्द्रश्री पाण्डेय	सहायकाचार्य (संविदा)	09455738065

शिक्षाशास्त्र विभाग

19.	प्रो. लोकमान्य मिश्र	आचार्य एवं अध्यक्ष	09451170646
20.	डा. लक्ष्मी निवास पाण्डेय	सहाचार्य	09335277923
21.	डा. अवनीश अग्रवाल	सहाचार्य	09451244456
22.	डा. बच्चा भारती	सहाचार्य	09455033411
23.	डा. देवी प्रसाद द्विवेदी	सहाचार्य	09455037183
24.	डॉ. कुलदीप शर्मा	सहायकाचार्य	09610422233
25.	श्री कलिका प्रसाद शुक्ल	सहायकाचार्य (संविदा)	07408980569

शारीरिक शिक्षा विभाग

26.	डा. गजेन्द्र प्रकाश शर्मा	सहाचार्य	09452964785

आधुनिक विभाग

27.	प्रो. शिशिर कुमार पाण्डेय	आचार्य एवं अध्यक्ष (हिन्दी)	09415280494

28.	श्री जगन्नाथ झा	सहायकाचार्य (राजनीति शास्त्र)	09452756328
29.	डा. एस. पी. सिंह	सहायकाचार्य (अर्थशास्त्र)	09919716979
30.	श्रीमती कविता बिसारिया	क. सहायकाचार्य (अंग्रेजी)	09454288841

स्वाध्याय केन्द्र

*	डा. लक्ष्मी निवास पाण्डेय	समन्वयक	09335277923
31.	श्री विनोद कुमार सुनार	डाटा इन्ट्री ऑपरेटर (संविदा)	08081376952
32.	श्री राजू मोर्या	ग्रुप डी (संविदा)	

संगणक विभाग

33.	डॉ. प्रमिला बहादुर	सहायकाचार्य (अतिथि)	08004213389

शोध एवं प्रकाशन विभाग

34.	डा. रामबहादुर दूबे	सहायकाचार्य	09415427947

पालि-प्राकृत परियोजना

35.	श्री मोहन मिश्र	वरिष्ठ शोध अध्येता (पालि)
36.	श्री राहुल अमृतराज	वरिष्ठ शोध अध्येता (पालि)
37.	श्री वेद व्यास पाण्डेय	वरिष्ठ शोध अध्येता (पालि)
38.	श्री जसवंत खंडोर	वरिष्ठ शोध अध्येता (पालि)
39.	श्री संतोष प्रियदर्शी	वरिष्ठ शोध अध्येता (पालि)
40.	श्री प्रिंस कुमार जैन	कनिष्ठ शोध अध्येता (पालि)
41.	सुश्री प्रियंका द्विवेदी	कनिष्ठ शोध अध्येता (पालि)
42.	श्री प्रदीप द्विवेदी	कनिष्ठ शोध अध्येता (पालि)
43.	श्री प्रदीप शर्मा लुईटेल	कनिष्ठ शोध अध्येता (पालि)
44.	सुश्री पत्रिका जैन	कनिष्ठ शोध अध्येता (प्राकृत)

डाटा इन्ट्री आपरेटर

45.	श्रीमती अमिता द्विवेदी	व्याकरण प्रोजेक्ट
46.	श्री विकास चन्द्र जैन	बौद्धदर्शन प्रोजेक्ट
47.	श्री प्रशान्त श्रीवास्तव	ई-ग्रन्थालय प्रोजेक्ट (पुस्तकालय)

पुस्तकालय

48.	श्री राघवेन्द्र नाथ त्रिपाठी	सहा.पुस्तकालयाध्यक्ष	09621872021
49.	श्री रजनीकान्त चतुर्वेदी	लाइब्रेरी अटेण्डेण्ट	09450362219

प्रशासनिक एवं लेखा अनुभाग

50.	श्री संतराम चौधरी	वित्तीय सलाहकार (संविदा)	09450123107
51.	डा. विजय शंकर ओझा	कनिष्ठ आशुलिपिक	09450619397
52.	डा. (श्रीमती) उर्मिला तिवारी	सहायक	09450096263
53.	श्री राजेश कुमार मिश्र	सहायक	08765587110
54.	श्री काशीनाथ द्विवेदी	प्रवर श्रेणी लिपिक	09415578522
55.	श्री सहदेव	ग्रुप सी	
56.	श्री तारकेश्वर चौबे	ग्रुप सी	09450654109
57.	श्री रामबदन राम	ग्रुप सी	09450447649
58.	श्री कन्हैयालाल	ग्रुप सी	09452376858
59.	श्री महेश चन्द्र शर्मा	ग्रुप सी	07376546581
60.	श्री मुकेश कुमार	ग्रुप डी	09026431736
61.	श्री सुशील कुमार निगम	चौकीदार	09450654219
62.	श्री सहजराम	चौकीदार	09451897052
63.	श्री गोपाल किशोर मेहरोत्रा	चौकीदार	0522-2333023

6. पता एवं दूरभाष संख्या :

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय,

लखनऊ परिसर,

विशाल खण्ड-4 गोमती नगर, लखनऊ-226010 (उत्तर प्रदेश)

फोन नं. 0522-2393748, 0522-2304063

फैक्स नं. 0522-2302993, 0522-2992668 (प्रा. आवास)

email: **rkslucknow@yahoo.com**

राजीव-गान्धी-परिसर, शृंगेरी (कर्णा.)

1. परिचय

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने श्री राजीव गाँधी केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना अपने अंगीभूत एकक के रूप में शृंगेरी में 13 जनवरी, 1992 को की। मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार की उपस्थिति में दिनांक 05.03.92 के शुभ दिन भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम श्री आर. वेंकटरमण के हाथों इस परिसर का उद्घाटन हुआ। संस्थान के मानित विश्वविद्यालय के रूप में घोषित होने के पश्चात् इसका पुनः नामकरण राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) श्री राजीव गाँधी परिसर-शृंगेरी हो गया। परिसर हेतु राज्य सरकार द्वारा शृंगेरी में 10.2 एकड़ भूमि प्रदान की गयी है जो कर्नाटक राज्य के चिकमगलूर जिले में स्थित है। यह परिसर मंगलूर से 110 कि.मी., बंगलौर से 350 कि.मी., उडुपी से 90 कि.मी. और शिमोगा से 110 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। शिमोगा बंगलौर से रेल मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। परिसर साहित्य, व्याकरण, अद्वैत वेदान्त, मीमांसा और नव्य न्याय, ज्यौतिष की आचार्य एवं शास्त्री स्तर पर, शिक्षा-शास्त्री (बी.एड) और प्राक् शास्त्री की इण्टर स्तर पर शिक्षा प्रदान कर रहा है। यहाँ शोध कार्य भी होता है जिसको सम्पन्न करने पर शोध छात्र को विद्यावारिधि (पी-एच्.डी) की उपाधि प्रदान की जाती है। शास्त्री स्तर तक आधुनिक विषयों तथा कम्प्यूटर का शिक्षण भी दिया जाता है। CBCS कोर्स भी साहित्य, व्याकरण, वेदान्त, मीमांसा, नव्यन्याय, ज्योतिषशास्त्रों में विशेषरूप से आयोजित है।

2. परिसर में छात्रावास सुविधाएँ

परिसर में पुरुष तथा महिला छात्रावास की व्यवस्था है। नियमित छात्र-छात्राओं को स्थान उपलब्धता के आधार पर छात्रावास में स्थान दिया जाता है।

3. परिसर की गतिविधियाँ

1. वाक्यार्थ परिषद्, 2. श्रीशारदा विशिष्ट व्यायानमाला, 3. वाग्वर्धिनी परिषद्, 4. स्पर्धिष्णु परिषद्, 5. राजीव गांधी इंटरनेशलन मेमोरियल लेक्चर, 6. श्री श्री श्री भारतीतीर्थ महास्वामी शास्त्रार्थ सभा, 7. अनुसन्धाता संगोष्ठी, 8. प्रकाशन, 9. पाण्डुलिपियों का संरक्षण, 10. मुक्तस्वाध्याय केन्द्र, 11. कम्प्यूटर केन्द्र, 12. मनोविज्ञान प्रयोगशाला, 13. शैक्षणिक तकनीकी प्रयोगशाला, 14. भाषा शिक्षण प्रयोगशाला, 15. परिसर की वेबसाइट, 16. भारत हेरीटेज एण्ड कल्चरल केन्द्र, 17. वज्रिनी व्यायामशाला, 18. ई-टेक्स्ट प्रोजेक्ट, 19. आन्तरिकगुणवत्ता-प्रत्यायनसमिति, 20. छात्र-संरक्षक-शिक्षकसमिति तथा 21. छात्रचर-सङ्घः।

4. परिसर की उपलब्धियाँ

1. **शिक्षकों की उपलब्धियाँ**- इस परिसर के अध्यापक अपने-अपने शास्त्रीय विषयों में पूर्णतः दक्ष तथा विशेषज्ञता से परिपूर्ण है। उन्होंने अनेक मठों से अपनी विद्वत्ता के लिए सम्मान प्राप्त किया है। अनेक शिक्षकों ने विभिन्न संस्थाओं से 'युव विद्वान' का पुरस्कार प्राप्त किया है।

2. **छात्रों की उपलब्धियाँ**- इस परिसर के छात्र बहुत ही अनुशासित तथा पारंपरिक शास्त्रीय विषयों में संलग्न रहते हैं। अनेक विद्यार्थियों ने समय-समय पर राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर स्पर्धाओं में तथा शलाका परीक्षाओं में अनेक पुरस्कार प्राप्त किये। परिसर के विद्यार्थियों ने संस्थान द्वारा आयोजित युव महोत्सव में प्रथम स्थान प्राप्त करके विजय वैजयंती भी पाई है। संस्थान की परीक्षाओं में अब तक **34** छात्रों ने **स्वर्ण पदक** प्राप्त किये हैं। यहाँ के छात्रों ने अनेक प्रवेश परीक्षाओं में उत्तम स्थान प्राप्त किये हैं। पारंपरिक शास्त्रीय विषयों की शिक्षा में यह परिसर प्रसिद्ध है।

5. परिसर के सदस्यों के नाम

1.	**डॉ. एन्. आर्. कण्णन्**	**प्राचार्य**	08265-250258(का.) 08265-251616(नि.) 08265-251763(फैक्स.)

अद्वैत वेदान्त विभाग

2.	डॉ. आर्. प्रतिभा	सहाचार्य व अध्यक्ष	
3.	डॉ. गणेश ईश्वर भट्ट	सहायकाचार्य	09448906454 08387-262760
4.	श्री गणपति वि. हेगडे	सहायकाचार्य (संविदा)	09482944911 08904232611
5.	श्रीमती गायत्री देवी जि.	सहायकाचार्य (संविदा)	09901843378

मीमांसा विभाग

6.	डॉ. सुब्राय वी. भट्ट	सहाचार्य व विभागाध्यक्ष	09449160458
7.	डॉ. सूर्यनारायण भट्ट	सहायकाचार्य	09449541822
8.	श्री. एस्. वेङ्कटेश तातार्य	सहायकाचार्य	09481834681

साहित्य विभाग

9.	डॉ. (श्रीमती) एस्. राधा	सहाचार्य व अध्यक्ष	
10.	डॉ. राघवेन्द्र भट्ट	सहायकाचार्य	09448971469

11. डॉ. चन्द्रकला आर्. कोण्डी	सहायकाचार्य	09241095021
12. डॉ. रामचन्द्र जोईस्	सहायकाचार्य	09448798827
13. डॉ. कोम्पेल्लि विनयकुमार	सहायकाचार्य (संविदा)	09482608866

व्याकरण विभाग

14. डॉ. सी.एस्.एस्.एन्. मूर्ति	सहाचार्य व अध्यक्ष	08147459987
15. डॉ. चन्द्रशेखर भट्ट	सहायकाचार्य	09448836941
16. डॉ सी.एच्. कृष्णानन्तपद्मनाभम्	सहायकाचार्य	09449759129
17. श्री विनायकरजत	सहायकाचार्य (संविदा)	09480005819

न्याय विभाग

18. डॉ. नवीन होल्ला	सहायकाचार्य व विभागाध्यक्ष	09448931079
19. श्री आर्. नवीन	सहायकाचार्य (संविदा)	09500144945
20. डॉ. कुञ्जविहारी द्विवेदी	सहायकाचार्य (संविदा)	09845473741

फलित ज्योतिष विभाग

21. डॉ. ईश्वर भट्ट	सहाचार्य व विभागाध्यक्ष	09448344641
22. श्री मुरलीकृष्ण टि.	सहायकाचार्य (संविदा)	09449982214
23. श्री अनिलकुमार	सहायकाचार्य (संविदा)	09483081085

शिक्षा-शास्त्र विभाग

24. प्रो. ए.पी. सच्चिदानन्द	आचार्य व अध्यक्ष	09449160891
25. डॉ. चन्द्रकान्त	सहायकाचार्य	09481652069
26. डॉ. रामचन्द्रालु बालाजी	सहायकाचार्य	09448618043
		08265-251663
27. डॉ. हरिप्रसाद के.	सहायकाचार्य	09481223990
28. डॉ. सोमनाथ साहू	सहायकाचार्य	09008211174
29. डॉ. गणेश टि. पण्डित	सहायकाचार्य	09743058177
		09481651366
30. डॉ. वेङ्कटरमण भट्ट	सहायकाचार्य	09483288784

शारीरिक शिक्षा विभाग

31. श्री रामचन्द्र एच्.डि.	पी.इ.टी. (अतिथि)	09916886575

आधुनिक विभाग

32. डॉ. रेखाकुमारी पाण्डे	सहायकाचार्य, हिन्दी	09480482073 08265-250390
33. श्रीमती एस्. कविता	सहायकाचार्य, कन्नड़ (संविदा)	09449941190
34. श्री एम्.ए. प्रभाकर	सहायकाचार्य, इतिहास (संविदा)	09482493905
35. श्री विनय एम्.एस्.	सहायकाचार्य, अंग्रेजी (संविदा)	09449725830
36. श्री के.वी. शशिधर	कम्प्यूटर. (अतिथि)	09482566624
37. श्री रवीश एन्.	कम्प्यूटर. (अतिथि)	09449319813

कार्यालय कर्मचारी

38. श्री योगेश चोलक	सहायकग्रन्थालयाध्यक्ष	07795309290
39. श्री गुरुराज भट्ट	प्रवर श्रेणी लिपिक	
40. श्री एस्.आर्. चन्द्रशेखर	अवर श्रेणी लिपिक	
41. श्रीमती एस्. मञ्जुला	अवर श्रेणी लिपिका (तदर्थ)	
42. श्री एम्.एम्. रफीक	ग्रन्थालय परिचर	
43. श्रीमती जयम्मा	सफाई कर्मचारी	
44. श्री दिनेश एस्.	ग्रुप् सि.	09035782086
45. श्री एच्. कुमार	ग्रुप् सि.	09481578337
46. श्री एस्. शिवण्ण	ग्रुप् सि.	
47. श्रीमती सिद्दम्मा	ग्रुप् सि.	09448266717
48. श्रीमती टि.एन्. सावित्री	मेट्रोन्	
49. श्रीमती एस्.एस्. उमादेवी	टाईपिस्ट-क्लर्क (संविदा)	
50. कुमारी सुगुणा एन्	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा)	09480646523
51. श्री एच्.एस्. उमेश	छात्रावास परिचर (संविदा)	
52. श्रीमती तिम्मम्मा	सफाई कर्मचारी (संविदा)	

स्वाध्याय केन्द्र

* डा. चन्द्रकान्त	समन्वयक	09481652069
53. श्री पृथ्वीराज के.आर्.	डॉटा एंट्री आपरेटर	09480739077
54. श्री सन्दीपकुमार एम्.आर्.	ग्रुप डी	09481623376

6. पता एवं दूरभाष संख्या :

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय,

राजीव गाँधी परिसर,

मेणसे, शृंगेरी-577139, चिकमगलूर (कर्नाटक)

फोन : 08265-250258

फैक्स : 08265-251763

08265-251616 (आर.)

email: **principla_rgc@hotmail.com**

श्रीवेदव्यास-परिसर, बलाहार (हि. प्र.)

1. परिचय

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मन्त्रालयाधीन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली के अन्तर्गत अन्य प्रदेशों की भांति देवभूमि हिमाचल प्रदेश में भी संस्कृत विद्यापीठ स्थापित करने का निश्चय किया गया। इस कार्य को क्रियान्वित करने की दृष्टि से हिमाचल प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह, केन्द्रीय शिक्षा राज्यमंत्री श्रीमुहीराम सैकिया, प्रदेश के शिक्षामंत्री श्री नारायणचन्द पाराशर व संस्थान के निदेशक डॉ. कमलाकान्त मिश्र की उपस्थिति में दिनांक 16 सितम्बर 1997 को राजकीय कन्या उच्च विद्यालय गरली के एक भाग में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ का शुभारम्भ किया गया।

अनवरत प्रयास के बाद भवन निर्माण हेतु हिमाचल प्रदेश सरकार के माध्यम से 2-63-18 हैक्टेयर भूमि गरली और प्रागपुर के समीप बलाहर ग्राम में विद्यापीठ को प्राप्त हुई। भूमि उपलब्धि के बाद लगभग चौदह करोड़ रूपयों के अनुदान से परिसर के शैक्षणिक भवन तथा प्रशासनिक भवन भव्य रूप से निर्मित हो गयें हैं। गत वर्ष से परिसर नवीन भवन में चल रहा है। इस परिसर में प्राक्शास्त्री से आचार्य तक की कक्षाएँ चलती हैं। परिसर में व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष, वेदान्त तथा दर्शन विभाग के माध्यम से शास्त्रीय विषयों का अध्यापन कार्य चल रहा है। यहां हिन्दी, अंग्रेजी, इतिहास तथा अर्थशास्त्र जैसे आधुनिक विषयों के साथ कम्प्यूटर-शिक्षा की भी समुचित व्यवस्था है। संस्थान मुख्यालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय स्तर पर प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण तथा चयनित छात्रों को विद्यावारिधि (Ph.D.) उपाधि हेतु व्याकरण, साहित्य, ज्यौतिष, वेदान्त तथा दर्शन विषयों में शोध की भी व्यवस्था है। एतदर्थ परिसर में एक समृद्ध पुस्तकालय स्थापित है।

दूरस्थशिक्षा प्रणाली द्वारा प्राक्शास्त्री, शास्त्री तथा आचार्य कक्षाओं के अध्यापन के लिए मुक्तस्वाध्यायपीठम् (Institute of Distance Education) नई दिल्ली का अध्ययन केन्द्र भी शुरू किया गया है। इसके अर्न्तगत व्याकरण, साहित्य एवं ज्यौतिष विषयों के अध्ययन की व्यवस्था है। वर्तमान में 41 छात्र इस मुक्त स्वाध्याय केन्द्र में अध्ययन कर रहे हैं।

परिसर का मुख्य भवन **भरतभवनम्** तथा शैक्षणिक भवन **तक्षशिला-भवनम्** के नाम से अंकित है। आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित इस परिसर के सभा मण्डप एवं उद्यान पर्यटकों के लिए दर्शनीय स्थल भी माने जाने लगे है।

इस परिसर को आदर्श परिसर बनाने के उद्देश्य से क्रीडा, भाषण, वाद-विवाद तथा शास्त्रार्थ आदि शैक्षणिक गतिविधियों द्वारा छात्रों के लिए विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है।

इस परिसर में छात्राओं की संख्या अधिक होने के कारण महिला-संस्कृताध्ययन केन्द्र की स्थापना की गई है जिसके द्वारा हिमाचल प्रदेश के पर्वतीय दूर-दराज के गांवों के रहने वाली महिलाओं को इस परिसर की विशेष गतिविधियों तथा संस्कृत शिक्षा की उपयोगिता की जानकारी देकर उन्हें संस्कृत विधा के प्रति आकृष्ट करने का प्रयत्न किया जा रहा है। सत्र 2012-13 से शिक्षाशास्त्र का शुभारम्भ हो गया है। परिसर के अन्दर विशेष प्रकार के क्रीडा स्थल एव सभा भवन के निर्माण का कार्य चल रहा है, ताकि भविष्य में युवा समारोह आदि विशेष कार्यक्रम अपने परिसर में ही आयोजित हो सके।

2. परिसर की विविध योजनाएँ-

* महिला संस्कृत अध्ययन केन्द्र

परिसर में स्त्री शिक्षा के महत्त्व को समझते हुए महिलाओं को संस्कृत-शिक्षा प्रदान करने के लिए यह केन्द्र सुचारू रूप से कार्य कर रहा है। इसमें न केवल परिसर में, अपितु परिसर के बाहर भी गाँवों में महिलाओं को संस्कृत साहित्य, विशेषत: गीता, व्रत-कथाएं, दैनिक-आचार से सम्बन्धित नियम इत्यादि विषयों का ज्ञान दिया जाता है। आधुनिक ज्ञान को सुदृढ़ करने के लिए कम्प्यूटर-शिक्षण का प्रबन्ध किया गया है। इस अध्ययन केन्द्र में महिलाओं के लिए तीन महीनों के प्रशिक्षण के साथ ही निम्न विषयों में प्रमाणपत्रीय-पाठ्यक्रम (Certificate Course) की भी व्यवस्था की गयी है यथा-

1. संगणकशिक्षण
2. योग प्रशिक्षण
3. गृहविज्ञान
4. भारतीय महिलाओं का जीवन विन्यास इत्यादि।

संस्कृत साहित्य में उपलब्ध महिलाओं के चरित्र-चित्रण के ज्ञान को सामान्य तथा विद्वान् जनों में सम्प्रेषित करने के लिए 'सत्यवती' नामक त्रैमासिकी पत्रिका का सम्पादन भी किया जाता है।

* व्याख्यानमाला

छात्रों के अध्ययन तथा विषय के ज्ञान के संवर्धन की दृष्टि से विभिन्न विषयों के मर्मज्ञ विद्वान् पण्डितों को व्याख्यान हेतु इस परिसर में समय-समय पर बुलाया जाता है।

* शोध प्रशिक्षण कार्यशाला

आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् विभिन्न विषयों में शोध कार्य की व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए शोध-कार्यशाला तथा शोध सम्बन्धित व्याख्यान आयोजित किए जाते हैं, जिसमें शोध-विज्ञान के कुशल विद्वान बुलाए जाते हैं।

* प्रतियोगिता परीक्षा प्रस्तुति प्रशिक्षण

संस्कृत शिक्षा से आजीविका अर्जन को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं जैसे- NET, C-TET तथा B.Ed. Ph.D इत्यादि का प्रशिक्षण समय-समय पर परिसर के प्राध्यापकों तथा आमन्त्रित विद्वानों के द्वारा छात्रों को दिया जाता है।

3. परिसर द्वारा प्रदत्त सुविधाएं-

1. **छात्रावास**- परिसर का छात्रावास भवन निर्माणाधीन है। इसलिए निकटस्थ प्रागपुर में पुरुष छात्रावास तथा गरली में महिला छात्रावास किराए पर लिया गया है। दोनों छात्रावासों में छात्र/छात्राओं के रहने तथा भोजन की व्यवस्था सुलभ रूप से उपलब्ध करायी जाती है।

2. **भोजनालय**- परिसर में जलपान तथा भोजन के लिए 'अन्नपूर्णामन्दिरम्' नामक भोजनालय की व्यवस्था है, जो परिसर द्वारा सञ्चालित किया जाता है। इसमें अत्यन्त कम मूल्य में छात्र/छात्राओं को यथा समय समुचित भोजन मिलता है।

3. यातायात व्यवस्था

पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण यह परिसर मुख्य मार्ग से अधिक दूर है। छात्रों एवं अध्यापकों की असुविधा को ध्यान में रखते हुए माननीय कुलपति जी के विशेष अनुग्रह से इस परिसर को एक कार तथा 49 सीट वाली एक बस की व्यवस्था हो गई है, जिसके द्वारा परिसर सामान्य व्यय से सुबह-शाम छात्र/छात्राओं को परिसर पहुँचाने तथा परागपुर और गरली तक मुख्य सड़क मार्ग पर उन्हें छोड़ने का दायित्व लेता है।

4. परिसर के सदस्यों के नाम

1.	**प्रो. हरेकृष्ण महापात्र**	**प्राचार्य (प्रभारी)**	09816400536

ज्यौतिष विभाग

2.	डॉ. पी.वी.बी.सुब्रह्मण्यम	सहायकाचार्य	09805034336
3.	डॉ. विष्णु कुमार निर्मल	सहायकाचार्य	09816616776
4.	डॉ. हरिनारायण धर द्विवेदी	सहायकाचार्य	09805576583

5. डॉ. मनोज श्रीमाल	सहायकाचार्य (संविदा)	08894646447
6. श्री नरेश कुमार	सहायकाचार्य (संविदा)	09816259797

व्याकरण विभाग

7. प्रो. यशपाल खजूरिया	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09419130095
8. डॉ. के.बी. सोमयाजुलु	सहाचार्य	09692046726
9. डॉ. श्रीधर मिश्र	सहाचार्य	09805031464
10. डॉ. मधुकेश्वर भट्ट	सहायकाचार्य	09805072827
11. श्री भानु शर्मा	सहायकाचार्य (संविदा)	09816836684

साहित्य विभाग

12. डॉ. विजयपाल शास्त्री	सहाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09418735253
13. डॉ. सुज्ञानकुमार माहान्ति	सहायकाचार्य	08894655026
14. डॉ. राधावल्लभ शर्मा	सहायकाचार्य (संविदा)	09625392591
15. श्री विपिन कुमार झा	सहायकाचार्य (संविदा)	08627997726

वेदान्त विभाग

16. डॉ. आर. के. बर्मन	सहाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09418075061
17. डॉ. गौरप्रिया दाश	सहायकाचार्या	08894678030
18. श्री संवित् महापात्र	सहायकाचार्य (संविदा)	09816388780
19. श्रीमती श्रद्धाजंलि महापात्र	सहायकाचार्य (संविदा)	09816647471

शिक्षा शास्त्र विभाग

20. प्रो. फतेह सिंह	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09816259988
21. डॉ. गणेश शंकर विद्यार्थी	सहायकाचार्य	09805048310
22. डॉ. अशोक कुमार कछवाह	सहायकाचार्य	08627938393
23. डॉ. सागरिका नन्द	सहायकाचार्य (संविदा)	09805052334
24. डॉ. जितेन्द्र रायगुरु	सहायकाचार्य (संविदा)	09805011231
25. डॉ. दयानिधि शर्मा	सहायकाचार्य (संविदा)	08679712805
26. डॉ. विचित्र रञ्जन पण्डा	सहायकाचार्य (संविदा)	09816019871

शारीरिक शिक्षा विभाग

27. डॉ. संजय मनकोटिया	सहायकाचार्य (संविदा)	09418006535

आधुनिक विभाग

28. डॉ. रामनारायण ठाकुर	सहायकाचार्य (संविदा) इतिहास	09817276517
29. श्री संदीप कुमार	सहायकाचार्य (संविदा) हिन्दी	08988002042
30. श्रीमती मोनिका शर्मा	अतिथि प्राध्यापिका (संविदा) अर्थशास्त्र	09418526071
31. कु. शशिबाला	सहायकाचार्य (संविदा) अंग्रेजी	09882131372
32. कु. वन्दना	अतिथि प्राध्यापिका (संविदा) पर्यावरण विज्ञान	09736799379

कम्प्यूटर विभाग

33. श्री अमित वालिया	अतिथि प्राध्यापक (संविदा)	09459060900
34. श्री राकेश कुमार	अतिथि प्राध्यापक (संविदा)	09459070757

स्वाध्याय केन्द्र

* डॉ. पी.वी.बी. सुब्रह्मण्यम्	(समन्वयक)	09805034336
35. श्री प्रमोद कुमार	सङ्गणक सहायक-कम लिपिक	09816119997
36. श्री सन्दीप कुमार	ग्रुप डी (संविदा)	09805306827

महिला अध्ययन केन्द्र

* डॉ. गौरप्रिया दाश	समन्वयक	08894678030
* डॉ. मधुकेश्वर भट्ट	सह समन्वयक	09805072827
37. श्रीमती सुनीता देवी	सङ्गणक सहायिका (संविदा)	09816069926
38. श्रीमती उपमा शर्मा	ग्रुप डी (संविदा)	09805701363

कार्यालय कर्मचारी

39. श्री सर्वेश्वर रथ	अनुभाग अधिकारी	09816635704
40. कु. अनुराधा	सहायक	01970245894
41. श्री सम्पूर्णानन्द नौड़ियाल	निजी सहायक (प्राचार्य)	09625134464
42. कु. मीना	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	09805033980
43. श्रीमती अंजू गोस्वामी	प्रवर लिपिक	09816677246
44. श्री जगदीश कुमार	प्रवर लिपिक	09816699753
45. श्री अमित कश्यप	अवर लिपिक (तदर्थ)	09817478876

46. श्री अनिल कुमार	अवर लिपिक (तदर्थ)	09459292459
47. श्री प्यारेलाल	अवर लिपिक (तदर्थ)	09459436336
48. श्री रत्न चन्द	ग्रुप सी	08894114411
49. श्री संतोष कुमार	ग्रुप सी	09816439261
50. श्रीमती स्वागना देवी	ग्रुप डी(पुस्तकालय)	09816800668
51. श्री हरबंस लाल	ग्रुप डी	09418676037
52. श्री राजेश कुमार	ग्रुप डी (तदर्थ)	09816150483
53. श्री मंजीत सिंह	ग्रुप डी (दैनिक.)	08894519518
54. श्रीमती राजकुमारी	ग्रुप डी (दैनिक.)	09805483841
55. श्री मुकेश कुमार	चौकीदार (संविदा)	08894017757
56. श्री संजीव कुमार	चौकीदार (संविदा)	09736991598
57. श्री रविन्द्र कुमार	चौकीदार (संविदा)	09882180528
58. श्री कुशल कौण्डल	चौकीदार (संविदा)	08988032509
59. श्री जसबिन्दर	इलैक्ट्रीशियन (संविदा)	09882112153
60. श्री टेक चन्द	इलैक्ट्रीशियन हैल्पर (संविदा)	09418331582
61. श्री अजय शर्मा	सङ्गणक सहायक (संविदा)	08628833269
62. श्री सुरेन्द्र कुमार	सङ्गणक सहायक (संविदा)	09817991683
63. श्री सन्तोष राणा	मैट्रन (संविदा)	09817452862
64. श्रीमती सीमा देवी	मैट्रन (संविदा)	08894226261
65. श्री विनोद कुमार	माली (संविदा)	08894020601
66. श्री सुभाष चन्द्र	माली (संविदा)	09817275996
67. कु. ज्योति पटियाल	डी.ई.ओ., पुस्तकालय (संविदा)	09625087488
68. श्री अजय सिंह	सामूहिक भोजनालय कार्यकर्ता (संविदा)	09817455565
69. श्री दिगवाल सिंह	सामूहिक भोजनालय कार्यकर्ता	09816454096
70. श्री साहिल कुमार	सामूहिक भोजनालय सहायक	8091406176
71. श्री बलदेव सिंह	चौकीदार (संविदा)	09816869971
72. श्री पवन कुमार	चौकीदार (संविदा)	09816065261
73. श्री प्रवीण कुमार	चौकीदार (संविदा)	09459779800

74. श्रीमती आंचला कुमारी	सफाई कर्मचारी (संविदा)	09418586482
75. श्री देवराज	सफाई कर्मचारी (संविदा)	09805942012
76. श्री गगन कुमार	सफाई कर्मचारी (संविदा)	09418568029
77. श्रीमती अनीता कुमारी	सफाई कर्मचारी (संविदा)	08894242725

5. पता एवं दूरभाष संख्या :

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय,

श्री वेदव्यास परिसर, गरली

बलाहार, काँगड़ा–177108, (हिमाचल प्रदेश)

दूरभाष/फैक्स 01970–245409

email: **principal.garli@gmail.com**

भोपाल-परिसर, भोपाल (म. प्र.)

1. परिचय

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के भोपाल परिसर की स्थापना वर्ष 2002 में मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में हुई थी। मध्यप्रदेश के तत्कालीन महामहिम राज्यपाल भाई महावीर जी ने 16 सितम्बर 2002 को इसका औपचारिक उद्घाटन किया था। इस परिसर के निर्माण हेतु मध्यप्रदेश शासन ने बागसेवनिया में 10 एकड़ भूमि निःशुल्क प्रदान की, जिस पर शैक्षिक, प्रशासनिक, पुस्तकालय एवं प्रेक्षागार निर्माण हेतु तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय श्री अर्जुन सिंह जी ने 19 सितम्बर 2005 को शिलान्यास किया। मई 2010 से परिसर की सभी शैक्षिक गतिविधियाँ इस नवनिर्मित अपने भवन में प्रारंभ हो गई हैं। अपने परिसर में द्वितीय चरण के अन्तर्गत पुरुष छात्रावास, कन्या छात्रावास, अतिथि गृह एवं आवासीय गृह निर्माण हेतु स्वीकृति प्राप्त हो गयी है तथा निर्माण कार्य की प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है।

इस परिसर में पाठ्यक्रम के अन्तर्गत शास्त्र-अध्यापन, प्रशिक्षण एवं शोध विभाग संचालित हैं। शास्त्रीय अध्ययन में प्राक्शास्त्री, शास्त्री एवं आचार्य की कक्षाओं का अध्यापन होता है जिनमें साहित्यशास्त्र, व्याकरणशास्त्र एवं ज्योतिषशास्त्र के साथ शास्त्री स्तर तक हिन्दी, अंग्रेजी राजनीतिशास्त्र कम्प्यूटर विज्ञान एवं पर्यावरण की शिक्षा भी दी जाती है। प्रशिक्षण विभाग में शिक्षाशास्त्र (बी.एड) का पाठ्यक्रम संचालित है। शोध विभाग में साहित्यशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, शिक्षाशास्त्र एवं संस्कृतविद्या की अन्य धाराओं में विद्यावारिधि (पी-एच.डी) उपाधि हेतु शोध-छात्र अनुसंधान कर रहे हैं।

2. परिसर में छात्रावास व्यवस्था

संस्थान परिसर में वैधानिक रूप से प्रविष्ट छात्रों एवं छात्राओं को छात्रावास प्रबन्ध समिति द्वारा निर्धारित योग्यता अनुसार पुरुष/महिला छात्रावास में एक शिक्षा सत्र के लिए स्थान दिया जाता है तथा कक्षा में उत्तीर्ण होने पर पुनः समय बढ़ाया जाता है।

3. परिसरीय गतिविधियाँ

3.1 संविद्-विकास-परिषद्-

विद्यार्थियों की वाक्क्षमता, शास्त्रीय पाण्डित्य एवं प्रतिपादन सामर्थ्य के विकास के लिए परिसर में प्रति शुक्रवार संविद् विकास परिषद् का आयोजन होता है, जिसमें विद्यार्थी साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष, शिक्षाशास्त्र एवं अन्य संबंधित प्राच्य विद्याओं के अधीत गहन सिद्धांतों की चर्चा एवं व्याख्या करते हैं।

3.2 शास्त्रमीमांसा समिति-

शास्त्र चर्चा के माध्यम से प्राध्यापकों में शास्त्रीय तेजस्विता के विकास के लिये शास्त्रमीमांसा समिति का संघटन किया गया है। शिक्षकों के संकल्पानुसार प्रतिमास आरम्भिक शुक्रवार को शास्त्रमीमांसा समिति का आयोजन किया जाता है, जिसमें पूर्व निर्धारित विषय पर प्राध्यापकों द्वारा शास्त्रचर्चा प्रस्तुत की जाती है। सत्रान्त में **शास्त्र मीमांसा** पत्रिका में शोध निबन्धों का प्रकाशन किया जाता है।

3.3 शास्त्रार्थ प्रशिक्षण-

परिसर में विभिन्न शास्त्रों के मार्मिक एवं दुरूह पक्षों के परिष्कार हेतु विद्यार्थियों को शास्त्रार्थ का प्रशिक्षण दिया जाता है, जिसमें किसी शास्त्र के विशिष्ट सिद्धांत पर पूर्वपक्ष एवं उत्तरपक्ष के साथ शास्त्रसम्मत एवं प्रामाणिक तर्क उपस्थापित होते हैं। उसके अन्त में सैद्धांतिक निष्कर्ष तक पहुंचा जाता है।

3.4 शलाका एवं कंठपाठ-

अध्येताओं की स्मृति, मेधा एवं अवबोधन शक्ति के परीक्षण हेतु विभिन्न शास्त्रों एवं काव्यों पर आधारित शलाका एवं कंठपाठ का अभ्यास कराया जाता है। शलाका परीक्षा में स्मृति, मेधा एवं अवबोधन तीनों का परीक्षण होता हैं जबकि कंठपाठ में केवल स्मृति का ही परीक्षण होता है।

3.5 विस्तार व्याख्यानमाला-

परिसर में प्रत्येक शिक्षासत्र के मध्य विभिन्न शास्त्रों में विस्तार व्याख्यानमाला का आयोजन होता है, जिसमें विभिन्न शास्त्रों के विशिष्ट एवं पारंगत विद्वानों का व्याख्यान होता है, इससे विद्यार्थियों को अपने अधीत शास्त्रों के विस्तार हेतु मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

3.6 प्रादेशिक वाक्स्पर्धा-

भोपाल परिसर में अधिराज्यीय वाक्स्पर्धा का आयोजन किया जाता है, जिसमें मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्यों के पारम्परिक संस्कृत विद्यार्थियों की निर्धारित आठ शास्त्रों में प्रतियोगिताएं आयोजित होती हैं। उनमें प्रतिशास्त्र एवं प्रतिराज्य विजेता छात्रों का राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान मुख्यालय के द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित अखिल भारतीय वाक्स्पर्धा के लिए चयन किया जाता है। इस कार्यक्रम में शास्त्रीय शलाका, काव्य शलाका, कंठपाठ एवं श्लोकान्त्याक्षरी की प्रतियोगितायें भी आयोजित होती हैं।

3.7 क्रीडा एवं योगासन-

परिसर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के शारीरिक एवं आध्यात्मिक विकास हेतु विभिन्न शारीरिक क्रियाओं, योग एवं क्रीडा का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रतिवर्ष विजेता छात्रों का अखिल भारतीय युव महोत्सव हेतु चयन किया जाता है और उन्हें पुरस्कृत किया जाता है।

3.8 नाट्याभिनय एवं कलाएं-

परिसर में विद्यार्थियों को पारम्परिक नाट्य तथा शास्त्रीय अभिनय कला का प्रशिक्षण दिया जाता है और ग्रीष्मावकाश में संस्थान के सहयोग से अन्य संस्थाओं में आयोजित प्रशिक्षण कार्यशाला में प्रशिक्षण हेतु प्रेषित किया जाता है। प्रशिक्षित विद्यार्थियों के द्वारा संस्कृत नाटकों का रूपायन किया जाता है एवं उन्हें कौमुदी महोत्सव और युवमहोत्सव के अन्तर्गत आयोजित नाट्य प्रतियोगिताओं में प्रस्तुत किया जाता है।

3.9 नाट्यशास्त्रानुसन्धान केन्द्र-

2011 में नाट्यशास्त्रानुसन्धान केन्द्र की स्थापना हुई है। पारम्परिक एवं समकालीन भारतीय रंगकर्म पर अनुसन्धान, प्रयोग, नाट्य प्रशिक्षण, अभिनय, संगीत सन्दर्भों का प्रयोग एवं गवेषणा आदि कार्य केन्द्र में प्रचलित है। केन्द्र में अनुसन्धाता, नाट्यकलाकार, वादक, गायक, संयोजक कार्यरत है। 10 से अधिक संस्कृत नाट्य का मंचन भारत के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र के द्वारा किया गया।

3.10 भारतीय ज्योतिष परिचय पाठ्यक्रम-

भारतीय फलित ज्योतिष में रुचि रखने वाले साधारण शिक्षितों के लिए भारतीय ज्योतिष परिचय का त्रैमासिक पाठ्यक्रम परिसर के द्वारा संचालित है। इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करके किसी भी उम्र का कोई भी व्यक्ति फलित ज्योतिष के सामान्य सिद्धान्तों का परिचय प्राप्त कर सकता है। इसकी कक्षायें सायंकालीन होती हैं, जिसमें रूपये 1000/- मात्र पंजीकरण शुल्क देय है। समाचार पत्रों के माध्यम से इस पाठ्यक्रम में प्रवेश की सूचना प्रसारित की जाती है।

3.11 संस्कृत अन्तर्जाल परियोजना-

परिसर में संस्कृत के प्राचीन शास्त्रों को अन्तर्जाल में संस्थापित करने हेतु संस्कृत अन्तर्जाल-परियोजना प्रचलित है। विभिन्न संस्कृत ग्रंथों को टंकित करके अन्तर्जाल में स्थापित करना इस परियोजना का मुख्य कार्य है। इस योजना के अन्तर्गत परिसर के द्वारा 'साहित्य दर्पण' ग्रंथ का अन्तर्जाल में स्थापन हो चुका है।

परिसर द्वारा Who is who के अन्तर्गत 'संस्कृत विद्वत् परिचायिका' का प्रथम भाग प्रकाशित हो चुका है तथा द्वितीय भाग शीघ्र प्रकाशित होने वाला है। उसे अन्तर्जाल में भी स्थापित किया जायेगा।

3.12 शब्दकोश-परियोजना-

क्षेत्रीय बोली एवं उपबोली शब्दकोश परियोजना के अन्तर्गत परिसर में अभी 'बुन्देली' एवं 'मालवी बोली संस्कृत शब्दकोश' का निर्माण चल रहा है, जिसका यथाशीघ्र प्रकाशन होगा।

3.13 संगोष्ठी एवं कार्यशालाएँ-

परिसर में विभिन्न शास्त्रों पर राष्ट्रिय एवं क्षेत्रीय शोध संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं का आयोजन होता है। शास्त्रीय ज्ञान का आदान-प्रदान, शोध तथा वैदुष्य का विकास करना संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं का मुख्य उद्देश्य होता है।

4. परिसर प्रकाशन

क्र.	पत्रिका/पुस्तक का नाम	वर्ष
1.	राष्ट्री 1 से 7 अंक	2005-2012
2.	शास्त्र मीमांसा (शोध पत्रिका) अंक-3	2012
3.	भोजराज पञ्चाङ्ग अंक-3	2013
4.	सिद्धान्तरत्नाकरेण भूषिता वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (द्वितीयो भाग:) सम्पादक: टिप्पणीकारश्च प्रो. आजादमिश्र: 'मधुकर:'	2009
5.	शिक्षाशोध-कुसुमाञ्जलि:	2013

5. परिसर के सदस्यों के नाम

1.	**प्रो. आजाद मिश्र**	**प्राचार्य**	0755-2418043
साहित्य विभाग			
2.	प्रो. विद्यानन्द झा	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09907383236
3.	डॉ. सनन्दन कुमार त्रिपाठी	सहायकाचार्य	09691942394
4.	डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सिंहदेव	सहायकाचार्य	09406516435
5.	सुश्री मोहिनी अरोरा	सहायकाचार्य	09893228681
6.	डॉ. संगीता गुन्देचा	सहायकाचार्य	09425674851
व्याकरण विभाग			
7.	डॉ. सुबोध शर्मा	सहाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	
8.	डॉ. प्रदीप कुमार पाण्डेय	सहायकाचार्य	09406542991
9.	डॉ. कैलाशचन्द्र दाश	सहायकाचार्य	09301051858
10.	डॉ. नरेश कुमार पाण्डेय	सहायकाचार्य	
ज्योतिष विभाग			
11.	प्रो. वासुदेव शर्मा	आचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09829292387
12.	डॉ. भारत भूषण मिश्र	सहाचार्य	08085876897

13. डॉ. अशोक थपलियाल	सहायकाचार्य	09589275975
14. डॉ. अवधेश कुमार श्रोत्रिय	सहायकाचार्य (संविदा)	09907379415
15. डॉ. आशीष चौधरी	सहायकाचार्य (संविदा)	
16. डॉ. नीलमाधव	सहायकाचार्य (संविदा)	

शिक्षाशास्त्र विभाग

17. डॉ. वेदनारायण चौधरी	सहाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09977014476
18. डॉ. प्रभादेवी चौधरी	सहाचार्य	09977014476
19. डॉ. जे. भानुमूर्ति	सहाचार्य	09424469215
20. श्री नीलाभ तिवारी	सहायकाचार्य	09827221055
21. श्रीमती लीना तिवारी	सहायकाचार्य	09827221055
22. डॉ. डमरुधर पति	सहायकाचार्य (संविदा)	
23. डॉ. ताताराम	सहायकाचार्य (संविदा)	
24. डॉ. नितिन जैन	सहायकाचार्य (संविदा)	09907424875
25. श्री रमण मिश्र	सहायकाचार्य (संविदा)	

शारीरिक शिक्षा विभाग

26. डॉ. विमल प्रसाद मोहन्ती	सहाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09437281276
27. श्री विवेक कुमार सिंह	सहायकाचार्य (अतिथि)	07489898854

आधुनिक विषय विभाग

28. डॉ. अर्चना दुबे	सहायकाचार्य, हिन्दी	9827591905
29. डॉ. अवनी शर्मा	सहायकाचार्य (संविदा) अंग्रेजी	
30. डॉ. अर्चना चौहान	सहायकाचार्य (संविदा) राजनीतिशास्त्र	
31. डॉ. मंजू सिंह	अतिथि अध्यापिका इतिहास	
संगणक सुमित सक्सेना	सहायकाचार्य, कम्प्यूटर (संविदा)	9425443107
33. श्रीमती निरुपमा सिंहदेव	सहायकाचार्य, कम्प्यूटर (संविदा)	9424870664

पुस्तकालय

34. श्रीमती मणि शर्मा	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	9993166638
35. श्री संतोष कनौजिया	सहायक	9302367625
36. श्रीमती भारती	सहायक	

परियोजना

37.	श्री संजय द्विवेदी	समन्वयक (संविदा)	09893375477
38.	श्री विष्णु प्रसाद मीणा	कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता	9039994649
39.	श्री सुरेन्द्र प्रसाद तिवारी	कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता	8120440005
40.	श्री मांगीलाल चौहान	कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता	9039550138
41.	श्री आशीष चौधरी	कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता	8349581447
42.	मुहम्मद नसीम अंसारी	डाटा इन्ट्री आपरेटर (संविदा)	

नाट्य अनुसंधान केन्द्र

*	श्री संजय द्विवेदी	समन्वयक (संविदा)	09893375477
43.	श्रीमती क्षमा कपूरे	गायिका	
44.	श्री मनोज पाटीदार	तबलावादक	
45.	श्री हरीश	कलाकार	
46.	श्री मयंक मिश्र	कलाकार	
47.	श्रीमती निवेदिता	अभिनेत्री	
48.	श्री पुनीत संज्ञा	वरिष्ठ शोध अध्येता	
49.	श्री देवेन्द्र पाठक	वरिष्ठ शोध अध्येता	
50.	श्री कुलदीप भट्ट	डाटा इन्ट्री आपरेटर (संविदा)	

स्वाध्याय केन्द्र

*	डॉ. धर्मेन्द्रसिंह देव	समन्वयक	09406516435
51.	श्री महेन्द्र कुमार	डाटा इन्ट्री आपरेटर (संविदा)	
52.	श्री सुरेन्द्र प्रसाद रिछारिया	एम.टी.एस. (संविदा)	7566693922

कार्यालय कर्मचारी

53.	श्री विनोद अरोड़ा	अनुभाग अधिकारी	
54.	श्री संजय कुमार मिश्रा	प्रवर लिपिक	
55.	श्री नवनीत चतुर्वेदी	प्रवर लिपिक	9827283480
56.	श्री चोखाराम	कनिष्ठ आशुलिपिक	
57.	सुश्री नम्रता भटनागर	अवर लिपिक	9893813918

58.	श्री द्वारका प्रसाद कुशवाह	ग्रुप सी	9755413378
59.	श्री प्रेमशंकर	ग्रुप सी	9039789928
60.	श्री बंसत नायक	ग्रुप सी	9893176482
61.	श्री रमेश अधिकारी	ग्रुप सी	9752123526
62.	श्री अजीत सिंह	ग्रुप सी	9179296793
63.	श्री कमलेश भौंरेले	एम.टी.एस. (संविदा)	9329552012

6. पता एवं दूरभाष संख्या :

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय,

भोपाल परिसर,

संस्कृत मार्ग, बागसेवनिया, भोपाल-462043 (म.प्र.)

दूरभाष 0755-2418043

फैक्स 0755-2418003

email: **rsks_bhopal@yahoo.com**

के. जे. सोमैया-संस्कृत-विद्यापीठ, मुम्बई (महाराष्ट्र)

1. परिचय

संस्कृत पारम्परिक विद्या में नवाचारों एवं नवोन्मेषों का समन्वय करते हुए शास्त्रीय आर्ष परम्परा के प्रचार-प्रसार हेतु क.जे. सोमैया ट्रस्ट द्वारा किये गये सत्सङ्कल्प एवं सत्प्रयास के परिणामस्वरूप 2002 में भारत की आर्थिक राजधानी मुम्बई (महाराष्ट्र) में इस विद्यापीठ की स्थापना की गई। यह विद्यापीठ मुम्बई के प्रसिद्ध स्थल विद्याविहार (घाटकोपर-पूर्व) में स्थित है। के.जे.सोमैया ट्रस्ट ने सोमैया विद्याविहार में ही महन्मूल्यक एक एकड़ भूमि विद्यापीठीय भवन निर्माण के लिए उपलब्ध करायी है। यहाँ भवन-निर्माण से पूर्व की सकल औपचारिकताएँ पूर्ण हो चुकी हैं। वर्तमान में वित्त की स्वीकृति प्रत्याशित है। स्वीकृति मिलते ही केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के द्वारा टेण्डर आदि की प्रक्रिया शुरू होने वाली है।

इस समय सोमैया विद्याविहार परिसर में ही विद्यापीठ का प्रशासनिक कार्य और पुस्तकालय पॉलिटेक्निक बिल्डिंग में एवम् अध्ययन-अध्यापन, प्रशिक्षण, शोध आदि कार्य चाणक्य भवन तथा सुरुचि (कला भवन) में चल रहा है।

दिनाङ्क 21 जनवरी 2013 को माननीय श्री पल्लम राजु, मानव संसाधन विकास मन्त्री, भारत सरकार के करकमलों से विद्यापीठ भवन-निर्माण का औपचारिक उद्घाटन सम्पन्न हुआ है। मुम्बई विद्यापीठ पारम्परिक एवम् आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ अनुभव एवं ऊर्जा का मणिकाञ्चन संयोग है।

2. पाठ्यक्रम

1. प्राक्शास्त्री (द्विवर्षीय), 2. शास्त्री (त्रिवर्षीय), 3. आचार्य (द्विवर्षीय), 4. शिक्षाशास्त्री (एकवर्षीय), 5. विद्यावारिधि (पी-एच्.डी.), 6. अनौपचारिक संस्कृत प्रशिक्षण, 7. भारतीय ज्योतिष प्रमाणपत्र।

मुख्य रूप से यहाँ व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष एवं शिक्षाशास्त्र इन चार विषयों का अध्ययन एवं अध्यापन होता है।

3. छात्रावास-सुविधा

विद्यापीठ परिसर में पारम्पारिक शास्त्रीय अध्ययनार्थ दूर से आनेवाले छात्र-छात्राओं के लिए निःशुल्क छात्रावास की व्यवस्था है। जहाँ कम मूल्य पर स्वास्थ्यप्रद भोजन भी

उपलब्ध होता है।

4. परिसरीय गतिविधियाँ तथा कार्यक्रम

4.1 विशिष्ट केन्द्र -

संस्थान के द्वारा मुम्बई विद्यापीठ में निम्नलिखित दो विशिष्ट केन्द्र स्थापित हैं–

1. व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र, 2. संस्कृत में वैज्ञानिक परम्परा पर केन्द्रित संग्रहालय।

इनमें से प्रथम केन्द्र संचालन हेतु संस्कृत डी.टी.पी. पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है, जिसका आरम्भ 2013-14 सत्र से होने वाला है। द्वितीय संस्कृत वैज्ञानिक संग्रहालय का उद्घाटन माननीय डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति द्वारा दि. 02 फरवरी, 2013 को सम्पन्न हुआ है।

4.2 विशाल क्रीडा प्रांगण -

सोमैया ट्रस्ट द्वारा निर्मापित सोमैया विद्याविहार परिसर में सुसज्जित क्रीडा प्राङ्गण है, जो विद्यापीठीय क्रेडिक गतिविधियों के लिए ट्रस्ट के सौजन्य से नि:शुल्क उपलब्ध रहता है।

4.3 आधुनिक ज्ञानविज्ञानोपलब्धि -

विद्यापीठ जहाँ स्थित है, उस परिसर में सोमैया ट्रस्ट द्वारा संचालित अनेकों आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से सम्बद्ध महाराष्ट्र के प्रसिद्ध महाविद्यालय हैं। जैसे-इन्जीनियरिंग, मैनेजमेण्ट, पॉलिटेक्निक, साइन्स, आर्टस् एण्ड कामर्स आदि। इन महाविद्यालयों में प्रतियोगी परीक्षाओं से चयनित सुयोग्य हजारों छात्र एवं विद्वान् प्राध्यापक रहते हैं, जिनका लाभ सहज रूप से विद्यापीठीय इच्छुक छात्र एवं गवेषकों को मिलता है। इन महाविद्यालयों की प्रयोगशाला एवं पुस्तकालय की सुविधा भी छात्रों के लिए नि:शुल्क उपलब्ध है।

4.4 शैक्षणिक एवं शोधविभाग -

यहाँ व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष, शिक्षाशास्त्र, शोध एवं प्रकाशन, मुक्तस्वाध्याय, अनौपचारिक संस्कृत प्रशिक्षण, भारतीय फलित ज्योतिष प्रमाणपत्र विभाग कार्यरत हैं।

4.5 परियोजना -

क) ई-टेक्स्ट परियोजना के अन्तर्गत शब्दकौस्तुभ एवं व्यक्तिविवेक ग्रन्थ पर कार्य चल रहा है।

ख) विद्यापीठीय शिक्षाशास्त्र विभाग के प्राध्यापक डॉ. एस्.एल्. सीताराम शर्मा एवं डॉ. मन्था श्रीनिवास के द्वारा अभी तक कुल 1500 ग्रन्थों का ई-ग्रन्थालय में समावेश किया है।

4.6 संगोष्ठियाँ व सम्मेलन -

संस्थान की स्वीकृति से राष्ट्रिय शास्त्रीय संगोष्ठी आयोजित की जाती है। वर्ष 2011-12 एवं 2012-13 में क्रमशः साहित्य एवं व्याकरणशास्त्रीय राष्ट्रिय संगोष्ठी आयोजित की गयी, जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त भारतीय विद्वानों का समागम होता रहा है। 2012-13 में ही आन्तरिक गुणवत्ता प्रत्यायन समिति के द्वारा पृथक्तया साहित्य-ज्योतिष तथा शिक्षाशास्त्र में भी राष्ट्रिय संगोष्ठी सफलतया आयोजित की गयी है।

4.7 व्याख्यानमाला -

शास्त्र के प्रतिनिधि विद्वानों के द्वारा वर्षभर शास्त्रीय तत्त्वाभिलिप्सु छात्र, गवेषक एवम् अध्यापकों के लिए समय-समय पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया जाता है, जिसमें व्याख्यानोत्तर प्रश्नोत्तर का आयोजन भी होता है।

4.8 शोधपाठ्यक्रम का संचालन -

विद्यापीठीय गवेषकों के लिए संस्थान द्वारा स्वीकृत शोध-पाठ्यक्रम का अध्यापन एवं परीक्षा स्थानीय विषयविशेषज्ञ विद्वानों के द्वारा संचालित होता है।

4.9 संस्कृत डी.टी.पी. पाठ्यक्रम -

विद्यापीठ में व्यावसायिक प्रशिक्षण योजना के अन्तर्गत एक संस्कृत डी.टी.पी. पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है, जिसका प्रशिक्षण 2013-14 से शुरु होगा।

4.10 जनसामान्य को संस्कृत से जोड़ने हेतु गतिविधियाँ -

मुम्बई के नागरिकों को संस्कृत भाषा एवं उसके ज्ञान-विज्ञान से जोड़ने के लिए वर्षभर कई गतिविधियाँ विद्यापीठ में चलती हैं, जिसमें संस्कृत विज्ञान प्रदर्शनी, अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण एवं भारतीय फलित ज्योतिष पाठ्यक्रम मुख्य हैं। गतवर्ष संस्कृत कविसम्मेलन का भी आयोजन हुआ।

4.11 प्रतियोगिताओं का आयोजन -

मुम्बईनगरीय एवम् उपनगरीय विद्यालयीय प्रतियोगिता, महाराष्ट्र-गोवा प्रान्तीय प्रतियोगिता और विद्यापीठीय विभागशः प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है। इसमें विजेता प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र एवं पुरस्कार वितरित किये जाते हैं। शैक्षणिक प्रतियोगिताओं के साथ-साथ क्रीडा एवं योग प्रतियोगिताओं का भी आयोजन होता है। उक्त प्रतियोगिताओं में चयनित छात्र राष्ट्रिय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में महाराष्ट्र-गोवा राज्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।

4.12 प्रशिक्षण कार्यक्रम -

विद्यापीठ के अनुभवी प्राध्यापकों द्वारा छात्रों के सर्वविध विकास हेतु क्रमिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाता है। इसके अन्तर्गत शास्त्रार्थ, शलाका, भाषण, वादविवाद, समस्यापूर्ति, गीत-संगीत, नृत्य-वाद्य आदि ललितकला प्रशिक्षण एवं नाट्य प्रशिक्षण मुख्य

हैं। नाटक एवं नृत्य के लिए बाह्य विशेषज्ञ भी छात्रों को प्रशिक्षण देते हैं।

4.13 कम्प्यूटर लैब –

पारम्परिक छात्र एवं शिक्षाशास्त्र के छात्राध्यापकों के लिए आधुनिक सुविधा से सम्पन्न दो कम्प्यूटर लैब स्थापित हैं, जहाँ सभी छात्र योग्य प्रशिक्षक के अधीन अपने संगणकीय ज्ञान का विस्तार करते हैं।

4.14 स्वास्थ्य संरक्षण कार्यशाला –

आयुर्वेद, आधुनिक चिकित्सा विज्ञान एवं योग के ख्यातिप्राप्त व्यावसायिक प्रशिक्षकों के द्वारा विद्यापीठ के सभी छात्रों, कर्मचारियों एवं प्राध्यापकों के स्वास्थ्य संरक्षण हेतु कार्यशाला का आयोजन होता है, जिसमें संतुलित आहार, व्यायाम, प्राणायाम, आसन, ध्यान एवं सम्यक् दिनचर्या का प्रशिक्षण दिया जाता है।

4.15 नवागन्तुक छात्रों के लिए विशेष कार्यक्रम –

नये प्रवेशप्राप्त छात्र, जिनकी पृष्ठभूमि संस्कृत की नहीं रही है, उनके लिए सत्र के आरम्भ में संस्कृत शिविर दस दिनों का अनुष्ठित किया जाता है तथा उनके लिए अलग से भी संस्कृत वातावरण उपलब्ध कराया जाता है।

4.16 प्रायोजित कार्यक्रम –

संस्थान के निर्देशानुसार वर्षभर अनेकों कार्यक्रम विद्यापीठ में आयोजित होते हैं, जिनमें संस्कृत सप्ताह, हिन्दी पखवाड़ा, विवेकानन्द जयन्ती एवं वार्षिक समारोह मुख्य हैं। इनके अतिरिक्त गुरुपूर्णिमा, शिक्षकदिवस, शिक्षादिवस, सत्रान्तसमारोह, सौप्रस्थानिक आदि कार्यक्रम भी आयोजित होते हैं।

4.17 सामूहिक परिभ्रमण –

शिक्षाशास्त्र विभागीय शैक्षणिक यात्रा के अतिरिक्त अवकाश के दिनों में विद्यापीठ में पारिवारिक सौहार्द एवं सामञ्जस्य को दृढ़ता प्रदान करने के लिए वर्ष में एक बार सामूहिक-परिभ्रमण किया जाता है, जिसमें किसी सांस्कृतिक व ऐतिहासिक स्थल पर विद्यापीठ के कर्मचारी एवं प्राध्यापक, प्राचार्य की अध्यक्षता में यात्रा करते हैं।

5. विद्यापीठीय उपलब्धि

1. अपना भवन नही होने के कारण यद्यपि मुम्बई विद्यापीठ में छात्रों की संख्या अधिक नहीं हैं, फिर भी छात्रों का प्रायः शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम आता है। संख्या कम होने के कारण प्राध्यापकों द्वारा व्यक्तिशः छात्रों पर ध्यान दिया जाता है, फलस्वरूप उनकी मेधा में विलक्षण विकास होता है। वर्ष 2012-13 में आचार्य तृतीय सत्रार्थ परीक्षा में मोनिका बोल्ला को कुल मिलाकर 96 प्रतिशत अङ्क आए हैं। दो पत्रों में तो शत-प्रतिशत अङ्क हैं। विदुषी नामक छात्रा को व्याकरण में शत-प्रतिशत अङ्क आए हैं।

2. मुम्बई विद्यापीठ में जो प्राध्यापक कार्यरत हैं, उनके शोधलेख राष्ट्रिय एवम् अन्तर्राष्ट्रिय पत्र-पत्रिकाओं में वर्षभर प्रकाशित होते रहते हैं। कई विद्वानों के द्वारा लिखित ग्रन्थ राष्ट्रिय स्तर पर ख्यातिप्राप्त हैं, जो कि राष्ट्रभर में अध्ययन, अध्यापन एवं गवेषण के उपयोग में लाए जाते हैं। मुक्त स्वाध्याय पीठ की पाठ्यपुस्तक निर्माण योजना में मुम्बई विद्यापीठ के कई प्राध्यापकों ने पाठ-लेखन एवं सम्पादन का कार्य किया है।

6. परिसर प्रकाशन

1. अतिदेशसूत्रविमर्शः ले.रा. रामरूप मिश्र, सम्पादक-डॉ. बोधकुमार झा
2. राष्ट्रिय वार्षिक शोध पत्रिका- "विद्यारश्मिः" (ISSN युक्त)
3. सचित्र परिसर वृत्त पत्रिका- "विद्याश्रीः" (अर्द्धवार्षिकी)

7. परिसर के सदस्यों के नाम

1.	**प्रो. प्रकाशचन्द्र**	**प्राचार्य (प्रभारी)**	09892171085

व्याकरण विभाग

2.	डॉ. बोधकुमार झा	सहाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	07666032480
3.	डॉ. अशोकचन्द्र गौड शास्त्री	सहाचार्य	08454870698
4.	डॉ. माधवदत्त पाण्डेय	सहायकाचार्य (संविदा)	09819279411
5.	डॉ. नवीनकुमार मिश्र	सहायकाचार्य (संविदा)	09430209620

साहित्य विभाग

6.	डॉ. (श्रीमती) सी. शान्ता	सहायकाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09495030770
7.	डॉ. स्वर्गकुमार मिश्र	सहायकाचार्य (संविदा)	09702548292
8.	डॉ. राकेशकुमार जैन	सहायकाचार्य (संविदा)	09322668435
9.	डॉ. धनंजय मिश्र	सहायकाचार्य (संविदा)	08454048363

ज्योतिष विभाग

10.	डॉ. उपेन्द्र भार्गव	सहायकाचार्य (संविदा) एवं विभागाध्यक्ष	08454940355
11.	श्री भरत गर्ग	सहायकाचार्य (संविदा)	09819365171
12.	डॉ. सुभाषचन्द्र मिश्र	सहायकाचार्य (संविदा)	09867860455

शिक्षाशास्त्र विभाग

13. डॉ. मदनमोहन झा	सहाचार्य एवं विभागाध्यक्ष	09004904059
14. डॉ. देवदत्त सरोदे	सहायकाचार्य	09969573593
15. डॉ. वी.एस.वी.भास्कर रेड्डी	सहायकाचार्य	09594683339
16. डॉ. आर.गायत्री मुरलीकृष्ण	सहायकाचार्य	09594666560
17. श्री वाचस्पतिनाथ झा 'मणि'	सहायकाचार्य (संविदा)	09503263142
18. श्री सोमाशी लक्ष्मी सीताराम शर्मा	सहायकाचार्य (संविदा)	08108350830
19. डॉ. मन्था श्रीनिवासु	सहायकाचार्य (संविदा)	07666668950

आधुनिक विभाग

20. डॉ. श्रीमती श्वेता सूद	सहायकाचार्य (संविदा) अंग्रेजी	09967786364
21. डॉ. श्रीमती गीता दूबे	सहायकाचार्य (संविदा) हिन्दी	09867827234
22. डॉ. रंजयकुमार सिंह	सहायकाचार्य (संविदा) राजनीतिशास्त्र	09869801897

स्वाध्याय केन्द्र

* डॉ. देवदत्त सरोदे	समन्वयक	09969573593
23. श्रीमती मनीषा एम. शिंदे	डाटा एन्ट्री आपरेटर (संविदा)	09757063460
24. श्री अरुण येटकर	एम.टी.एस. (संविदा)	09967544230

शारीरिक शिक्षा विभाग

25. श्री शंकर बाबुराव आन्धले	सहायकाचार्य (संविदा)	09867832123

संगणक विभाग

26. श्री संतोष जाधव	सहायकाचार्य (संविदा)	09870249449
27. डॉ. एन.एन. जोशी	शास्त्रचूडामणि	09324513304

पुस्तकालय

28. श्रीमती मीना पी. सोसा	दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी	09699569005
29. श्री संदीप पाण्डेय	डाटा एन्ट्री आपरेटर	08286565240

परियोजना

30. श्री मनोहर येरम	डाटा एन्ट्री आपरेटर	09702857097

31. कु. प्रज्ञा पाठक	डाटा एन्ट्री आपरेटर	09821438122

कार्यालीय कर्मचारी

32. श्रीमती वी.एस. सीतालक्ष्मी	अनुभाग अधिकारी	09108416265
33. श्री सुमनलाल शर्मा	सहायक	09702178276
34. चौ. मदनमोहन पटनायक	वरिष्ठ लिपिक	08108718139
35. श्री वामदेव मिश्र	कनिष्ठ लिपिक	09594520428
36. श्री ईसम सिंह	ग्रुप सी	08108602900
37. श्री लोकपाल सिंह	दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी	09768254946

26. पता एवं दूरभाष संख्या :

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय,
के.जे. सोमैया विद्यापीठम्,
एस.आई.एम.एस.आर. भवन, विद्या विहार,
मुम्बई-400077, (महाराष्ट्र)
दूरभाष 022-21025452
फैक्स 022-21025452
email: **rsksmumbai@yahoo.com**

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
के प्रवेशादि
विषयक सामान्य नियम

1. प्रवेश के नियम व पाठ्यक्रम

संस्थान में अध्यापन व्यवस्था

संस्थान निम्नलिखित परीक्षाओं के पाठ्यक्रम की नि:शुल्क अध्यापन व्यवस्था करता है। परीक्षा राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली द्वारा ली जाती है, जिनमें उत्तीर्ण छात्रों को संस्थान मुख्यालय से ही प्रमाणपत्र तथा उपाधियाँ दी जाती हैं।

	परीक्षा नाम	आयु सीमा	समकक्षता
1.	प्राक्शास्त्री (द्वि वर्षीय पाठ्यक्रम)		उच्च माध्यमिक (इण्टरमीडियट)
2.	शास्त्री (त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम/6 सेमेस्टर)		बी.ए.
3.	आचार्य (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम/4 सेमेस्टर)		एम.ए.
4.	शिक्षाशास्त्री (एक वर्षीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम)	20 वर्ष (न्यूनतम) (1-10-2013 तक)	बी.एड्.
5.	शिक्षा आचार्य (एक वर्षीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम)	23 वर्ष (न्यूनतम) (1-10-2013 तक)	एम.एड्.
6.	विद्यावारिधि (द्विवर्षीय अनुसन्धान)		पी-एच.डी.

ये सभी पाठ्यक्रम राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार के द्वारा मान्यता प्राप्त हैं।

● प्राक्शास्त्री (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम)

प्राक्शास्त्री में प्रवेशार्थ नियम —

1. प्राक्शास्त्री में प्रवेश हेतु संबद्ध परिसर द्वारा प्रवेश परीक्षा आयोजित की जायेगी, जिसमें पूर्वमध्यमा परीक्षोत्तीर्ण छात्र अथवा विधिवत् स्थापित किसी बोर्ड से संस्कृत विषय लेकर सैकण्डरी या दशम कक्षा उत्तीर्ण छात्र प्राक्शास्त्री पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु सम्मिलित हो सकते हैं।
2. यह पाठ्यक्रम दो वर्षों में सम्पन्न होता है, प्रत्येक वर्ष में छ: छ: पत्र होते हैं तथा एक पत्र अलग से संगणक शिक्षण का होता है।

प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष का पाठ्यक्रम —

	पत्र	विषय/ग्रन्थ/पाठ्यांश
1.	प्रथम पत्र	व्याकरण (अनिवार्य)
2.	द्वितीय पत्र	साहित्य (अनिवार्य)
3.	तृतीय पत्र	अंग्रेजी (अनिवार्य)
4.	चतुर्थ पत्र	हिन्दी/हिन्दी (ऐच्छिक)/बंगला/उड़िया/नेपाली/डोगरी/मलयालम/कन्नड़/गुजराती/मराठी/मणिपुरी
5.	पञ्चम पत्र	राजनीति शास्त्र/अर्थशास्त्र/इतिहास/समाजशास्त्र/जीवविज्ञान/गणित/भूगोल
6.	षष्ठ पत्र	वेद/व्याकरण/साहित्य/ज्यौतिष/दर्शन
7.	सप्तम पत्र	कम्प्यूटर।

● शास्त्री (त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम)

शास्त्री में प्रवेशार्थ नियम —

क. शास्त्री पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिये प्रवेश परीक्षा होगी, जिसमें सम्मिलित होने के लिए निम्नलिखित परीक्षाओं में से किसी एक में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है –

1. उत्तर मध्यमा
2. प्राक्शास्त्री
3. अथवा मान्यता प्राप्त किसी संस्कृत विश्वविद्यालय या संस्कृत परिषद् से परम्परागत प्रणाली से उत्तीर्ण की गई इन्टरमीडिएट समकक्ष परीक्षा।
4. संस्कृत विषय सहित उच्च माध्यमिक/इण्टरमीडिएट परीक्षा।
5. महर्षि सान्दीपनि वेदविद्या प्रतिष्ठान की वेदविभूषण परीक्षा।
6. शास्त्री पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए चुने गये भाषा/ आधुनिक विषय, उत्तरमध्यमा/ (बारहवीं कक्षा संस्कृत विषय सहित) तक पढ़े हुए होने चाहिए।

ख. शास्त्री परीक्षा त्रिवर्षीय (6 सेमेस्टर) में सम्पन्न होती है। प्रत्येक वर्ष में छः छः पत्र होते हैं। एक पत्र संगणक पाठ्यक्रम का अलग से होता है।

शास्त्री का पाठ्यक्रम —

	पत्र	विषय
1.	प्रथम पत्र	व्याकरण (अनिवार्य)
2.	द्वितीय पत्र	अंग्रेजी (अनिवार्य)
3.	तृतीय पत्र	हिन्दी/बंगला/उड़िया/नेपाली/डोगरी/मलयालम/कन्नड़/मणिपुरी (ऐच्छिक)

४. चतुर्थ पत्र राजनीतिशास्त्र/दर्शन/इतिहास/अर्थशास्त्र/समाजशास्त्र/हिन्दीसाहित्य/ अंग्रेजी साहित्य (ऐच्छिक)

5. पञ्चम पत्र नव्यव्याकरण/प्राचीन-व्याकरण/साहित्य/सर्वदर्शन/सिद्धान्तज्यौतिष/ फलितज्यौतिष/नव्यन्याय/न्याय वैशेषिक/मीमांसा/अद्वैतवेदान्त/ धर्मशास्त्र/विशिष्टाद्वैतवेदान्त/सांख्ययोग/पौरोहित्य/शुक्लयजुर्वेद/ काश्मीरशैवदर्शन/रामानन्दवेदान्त/जैनदर्शन/पुराणेतिहास/बौद्धदर्शन (इनमें से कोई एक विषय)

6. षष्ठ पत्र नव्यव्याकरण/प्राचीन-व्याकरण/साहित्य/सर्वदर्शन/सिद्धान्तज्यौतिष/ फलितज्यौतिष/नव्यन्याय/प्राचीनन्याय वैशेषिक/मीमांसा/अद्वैतवेदान्त/ धर्मशास्त्र/विशिष्टाद्वैतवेदान्त/सांख्ययोग/पौरोहित्य/शुक्लयजुर्वेद/ काश्मीरशैवदर्शन/रामानन्दवेदान्त/जैनदर्शन/पुराणेतिहास/बौद्धदर्शन (इनमें से कोई एक विषय)

7. सप्तम पत्र कम्प्यूटर

टिप्पणी: शास्त्री तृतीय वर्ष (पञ्चम व षष्ठ सेमेस्टर) में अष्टम पत्र पर्यावरण शिक्षा का होगा।

● आचार्य (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम)

आचार्य कक्षा में प्रवेश के लिए निम्नलिखित परीक्षायें मान्य हैं:-

अर्हता परीक्षा का नाम	संस्था का नाम
शास्त्री	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) अथवा अन्य कोई संस्कृत विश्वविद्यालय या मान्यता प्राप्त संस्था।
शिरोमणि	मद्रास विश्वविद्यालय, अन्नामलाई विश्वविद्यालय, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति।
विद्वद् मध्यमा	कर्नाटक सरकार, बैंगलोर
शास्त्रभूषण	(प्रीलिमिनरी) केरल सरकार, त्रिवेन्द्रम्
विद्या प्रवीण	आन्ध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर
बी.ए.	संस्कृत विषय के साथ मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से।

विशेष नियम -

1. आचार्य पाठ्यक्रम में विषय चयन से पूर्व उस विषय का शास्त्री कक्षा तक अध्ययन अनिवार्य है।
2. जिन प्रत्याशियों ने बी.ए. (संस्कृत), अथवा वेदालंकार/ विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त कर ली है, वे आचार्य स्तर पर साहित्य/ धर्मशास्त्र/ सांख्ययोग/ फलितज्योतिष/ या

कर्मकाण्ड विषय ले सकते हैं। बी.ए. (संस्कृत दर्शन सहित) पास छात्र आचार्य स्तर पर अद्वैत वेदान्त भी ले सकते हैं।

3. संस्कृत में बी.ए. (आनर्स) उत्तीर्ण प्रत्याशी आचार्य स्तर पर वेद/ व्याकरण/ साहित्य/ धर्मशास्त्र/ सांख्ययोग/ फलितज्योतिष/ कर्मकाण्ड विषय ले सकते हैं।
4. किसी एक विषय में आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण एम्.ए. (संस्कृत) प्रत्याशी, आचार्य स्तर पर, निम्नलिखित विषयों को छोड़कर कोई भी अन्य विषय ले सकते हैं।
(वर्जित विषय) सिद्धान्त ज्योतिष, वेद, नव्य न्याय, नव्य व्याकरण, मीमांसा।
लेकिन फलित ज्योतिष, नव्य न्याय/ नव्य व्याकरण आदि विषयों में आचार्य प्रत्याशी सिद्धान्त ज्योतिष, प्राचीन न्याय और व्याकरण आदि विषयों में आचार्य हेतु (तथा इसके विपरीत) प्रवेश ले सकते हैं।
5. संस्कृत में नक्षत्र विज्ञान एक विषय के रूप में पढ़े हुए प्रत्याशी आचार्य स्तर पर सिद्धान्त ज्योतिष विषय ले सकते हैं।

टिप्पणी : आचार्य पाठ्यक्रम में प्रवेश के इच्छुक छात्र अपने आवेदन पत्र में विषयों के चयन हेतु प्राथमिकता के क्रम से विषयों का उल्लेख करेंगे।

आचार्य पाठ्यक्रम में प्रतिवर्ष पांच प्रश्नपत्र होंगे। प्रतिवर्ष चार प्रश्नपत्र स्वीकृत शास्त्र पर आधारित होंगे तथा पंचम पत्र सभी शास्त्र के छात्रों के लिए सामान्य होगा। प्रति प्रश्नपत्र पूर्णाङ्क 100 हैं। प्रति प्रश्नपत्र समय तीन घंटे होगा। परीक्षार्थी निम्नलिखित शास्त्रविषयों में से कोई एक शास्त्र अध्ययन के लिए चुन सकता है:-

अनिवार्य विषय

नव्यव्याकरण/ प्राचीनव्याकरण/ साहित्य/ सिद्धान्तज्यौतिष/ फलितज्यौतिष/ सर्वदर्शन/ धर्मशास्त्र/ जैनदर्शन/ बौद्धदर्शन/ सांख्ययोग/ नव्यन्याय/ न्यायवैशेषिक/ मीमांसा/ अद्वैतवेदान्त/ पुराणेतिहास/ वेद/ पौरोहित्य

ऐच्छिक विषय (वैकल्पिक विषय)

आचार्य पाठ्यक्रम में पंचम प्रश्न-पत्र के स्थान पर निम्नलिखित विषय भी विकल्प के रूप में होते हैं। छात्रों के द्वारा इनमें से कोई एक विषय चुना जा सकता है:-

1. पालिभाषा और साहित्य
2. प्राकृतभाषा और साहित्य
3. जैन दर्शन और बौद्ध दर्शन
4. संस्कृत शिक्षण में अधिगम के लिए सामग्रियों का उत्पादन
5. धर्म शास्त्र
6. शारीरिक शिक्षा
7. संस्कृत साहित्येतिहास और भाषाविज्ञान

8. संस्कृत एवं संस्कृति

9. जैन दर्शन-साहित्य तथा अभ्यास

10. वैदिक साहित्य और उपनिषद्

11. प्राचीन भारतीय मनोविज्ञान

12. वर्णनात्मक भाषा विज्ञान

13. वास्तु शास्त्र

14. भारतीय रंगमंच और संस्कृत नाटक प्रस्तुति

● शिक्षा-शास्त्री (बी.एड्)

यह पाठ्यक्रम एक वर्ष के नियमित प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की शिक्षाशास्त्री उपाधि के लिए संचालित होता है।

प्रवेश के सामान्य नियम

1. किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से न्यूनतम 50% अङ्कों के साथ शास्त्री अथवा बी.ए. संस्कृत सहित,आचार्य/एम.ए. संस्कृत अथवा समकक्ष परीक्षात्तीर्ण छात्र संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष मई/जून में आयोजित होने वाली शिक्षाशास्त्री प्रवेश पूर्व परीक्षा में सम्मिलित हो सकते हैं। उसमें उत्तीर्ण छात्रों को वरीयता क्रम से शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जाता है। प्रवेश परीक्षा का आवेदन पत्र फरवरी मास में उपलब्ध होता है। इसके लिये नियमावली आवेदन पत्र के साथ संस्थान द्वारा अलग से प्रसारित की गई है।
2. प्रवेशार्थी की आयु दिनांक 1.10.2013 तक 20 वर्ष से कम नहीं होनी चाहिये।
3. इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए 10+2+3 शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत 15 वर्ष की शिक्षा का पूर्ण होना अनिवार्य है।
4. इस पाठ्यक्रम में परम्परागत पढ़े अर्थात् शास्त्री/आचार्य उत्तीर्ण छात्रों के लिए 80% तथा आधुनिक धारा के अर्न्तगत बी.ए. (संस्कृत) सहित अथवा एम.ए. संस्कृत उत्तीर्ण छात्रों के लिए 20% स्थान निर्धारित हैं।

पाठ्यक्रम

क) सैद्धान्तिक७

सैद्धान्तिक पत्रों के अन्तर्गत निम्नलिखित सात प्रश्न पत्र हैं। प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंक का है।

1. प्रथम पत्र वर्तमान सन्दर्भ में शिक्षा के आधार
2. द्वितीय पत्र विकास एवं अधिगम के मनोवैज्ञानिक आधार, शिक्षा में सांख्यिकी

3. तृतीय पत्र भारतीय शिक्षा का विकास, समसामयिक विचार एवं आधुनिक प्रवृत्तियाँ
4. चतुर्थ पत्र संस्कृत शिक्षण तथा शास्त्र शिक्षण विधियाँ, साहित्य/व्याकरण शिक्षण
5. पंचम पत्र आधुनिक भारतीय भाषा का शिक्षण
6. षष्ठम पत्र शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकि (कोई एक भाषा - अंग्रेजी, हिन्दी, उड़िया, डोगरी, कन्नड़, मलयालम)
7. सप्तम पत्र क) शैक्षिक नियोजन एवं प्रबन्धन

   ख) अधोलिखित में से कोई एक

   (i) मूल्य शिक्षा एवं मानवाधिकार शिक्षा।

   (ii) संगणक शिक्षा।

   (iii) शारीरिक शिक्षा, योग एवं स्वास्थ्य शिक्षा।

   (iv) मापन एवं मूल्यांकन।

ख) प्रायोगिक शिक्षण :

(क) प्रत्येक छात्राध्यापक को विभाग द्वारा अनुमोदित दो विषयों (शास्त्रीय तथा आधुनिक) में से एक विषय में 20 पाठ तथा सामान्य संस्कृत शिक्षण में 20 पाठ, कुल 40 पाठ विद्यालयों में निरीक्षकों के निर्देशन में शिक्षणाभ्यास के लिए पढ़ाने हैं।

(ख) शिक्षणाभ्यासोपरान्त बाह्य परीक्षा के लिए दो पाठ पढ़ाने होते हैं। जिसके कुल 200 अंक हैं। यथा-

प्रायोगिक

1.	संस्कृत शिक्षण	100
2.	आधुनिक विषय भारतीय भाषा/शिक्षण	100
3.	मनोविज्ञान प्रायोगिक	25
4.	श्रव्य-दृश्य सामग्री का निर्माण एवं प्रयोग	15
5.	परियोजना कार्य	10

सत्रीय प्रवृत्तियाँ

1.	प्राथमिक उपचार प्रशिक्षण	10
2.	बालचर प्रशिक्षण	10
3.	शैक्षिक यात्रा	10
4.	प्रबोधन वर्ग	10
5.	संस्कृत संभाषण शिविर	10

अंकों का कुल योग-सैद्धान्तिक 700+प्रायोगिक 300=1000

० शिक्षाचार्य (एम.एड्)

यह पाठ्यक्रम एक वर्ष के नियमित प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की शिक्षाचार्य उपाधि के लिए संचालित होता है। इसके लिए जयपुर एवं जम्मू परिसर में 35+35 स्थान निर्धारित हैं।

प्रवेश के सामान्य नियम

1. किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से न्यूनतम 50% अङ्कों के साथ आचार्य/एम.ए. संस्कृत अथवा समकक्ष परीक्षोत्तीर्ण तथा शिक्षा शास्त्री (बी.एड्) छात्र संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष मई में आयोजित होने वाली 'शिक्षा-आचार्य' प्रवेश पूर्व परीक्षा में सम्मिलित हो सकते हैं। उसमें उत्तीर्ण छात्रों को वरीयता क्रम से शिक्षाचार्य पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जाता है। प्रवेश परीक्षा का आवेदन पत्र, फरवरी मास में उपलब्ध होता है। इसके लिये नियमावली आवेदन पत्र के साथ संस्थान से अलग से प्रसारित की जाती है।
2. प्रवेशार्थी की दिनांक 1.10.2013 तक आयु 23 वर्ष से कम नहीं होनी चाहिये।
3. इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए 10+2+3+2 शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत 17 वर्ष की शिक्षा का पूर्ण होना अनिवार्य है।
4. इस पाठ्यक्रम में परम्परागत पढ़े अर्थात् आचार्य उत्तीर्ण छात्रों के लिए 80% तथा आधुनिक धारा के अर्न्तगत एम.ए. संस्कृत उत्तीर्ण छात्रों के लिए 20% स्थान निर्धारित हैं।

पाठ्यक्रम

इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत छः प्रश्न पत्र निर्धारित हैं, जिनमें से चार प्रश्न पत्र अनिवार्य एवं दो वैकल्पिक हैं।

(क) **अनिवार्य विषय**		**अंक**
प्रथम पत्र	शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा समाजशास्त्र	100
द्वितीय पत्र	संस्कृत शिक्षण का इतिहास एवं नवाचार	100
तृतीय पत्र	उच्चशिक्षा मनोविज्ञान	100
चतुर्थ पत्र	अनुसंधानविधिविज्ञान एवं सांख्यिकी	100

(ख) **वैकल्पिक विषय**

पञ्चम पत्र निम्नलिखित विषयों में से कोई एक विषय का चयन प्रत्येक छात्र को करना होगा

(क) अध्यापकशिक्षा

(ख) शैक्षिकप्रशासन एवं पर्यवेक्षण

(ग) शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन

(घ) विशिष्टबालशिक्षा

षष्ठ पत्र निम्नलिखित विषयों में से कोई एक विषय का चयन प्रत्येक छात्र को करना है।

(क) शैक्षिकप्रविधि

(ख) दूरस्थ शिक्षा

(ग) तुलनात्मक शिक्षा

(घ) मूल्याधारित शिक्षा एवं मानवाधिकार

प्रायोगिक

(क) लघुशोधनिबन्ध	**100 अंक**
(ख) मौखिक परीक्षा	**50 अंक**
(ग) क्षेत्रानुभव	**50 अंक**
(घ) सत्रीय प्रवृत्तियां	**100 अंक**
1. विचारगोष्ठी एवं दत्तकार्य	(25 अंक)
2. मनोविज्ञान प्रायोगिक कार्य	(25 अंक)
3. भाषाप्रयोगशाला	(25 अंक)
4. प्रौद्योगिक–संगणककार्य	(25 अंक)

योग =300

लिखित=600 प्रायोगिक=300

कुल योग =900

विद्यावारिधि (पीएच्.डी.)

शोधोपाधि का नाम

राष्ट्रिय–संस्कृत–संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) स्वयं अथवा अपने अन्तर्गत सभी परिसरों अथवा सम्बद्धताप्राप्त प्रतिष्ठित संस्थानों के माध्यम से प्रदान की जाने वाली शोधोपाधि को विद्यावारिधि (पीएच्.डी.) के नाम से अभिहित करता है। उपाधि प्रमाण–पत्र संस्कृत में तथा अंग्रेजी भाषा–अनुवाद के साथ दीक्षान्त- समारोह में प्रदान किया जाता है। इस उपाधि को भारत सरकार द्वारा पीएच.डी. के समकक्ष मान्यता प्राप्त है।

पञ्जीकरण की अर्हता

■ वे सभी विद्यार्थी, जो संस्कृत के किसी भी विषय में आचार्य/एम.ए. (संस्कृत), तत्समकक्ष उपाधि, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के परिसरों, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालयों, मानित विश्वविद्यालयों से कम से कम

55 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हों तथा राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा आयोजित प्राक्-शोध-परीक्षा में अर्हता क्रम में उत्तीर्ण हों, पञ्जीकरण के लिए आवेदन हेतु अर्ह होंगे।

■ संस्थान के परिसरों/ सम्बद्ध महाविद्यालयों/ विद्यालयों के अध्यापक अनुसन्धाता जिन्होंने आचार्य अथवा एम.ए. संस्कृत परीक्षा 55 % अंकों के साथ उत्तीर्ण की है 'अध्यापक-शोधार्थी' के रूप में आवेदन कर सकते हैं।

■ वे सभी विदेशी विद्यार्थी जिन्होंने भारत के किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से संस्कृत के किसी शाखा में स्नातकोत्तर उपाधि न्यूनतम 55% अंक के साथ अथवा उसके समान श्रेणी में उत्तीर्ण की है, भारत-सरकार के विदेश-विभाग एवं मानवसंसाधनविकास मन्त्रालय के माध्यम से शोध-छात्र के रूप में प्रवेश के लिये आवेदन कर सकते हैं।

■ अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति/ अन्यथा अक्षम अभ्यर्थियों के लिए संस्कृत विषय सम्बद्ध आचार्य परीक्षा मे न्यूनतम 50 % अंकों की उपलब्धि भी मान्य होगी।

प्राक्-शोध-परीक्षा

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली द्वारा फरवरी माह या मार्च मास में प्राक् शोध परीक्षा के लिए विज्ञापन दिया जाता है तथा मई-जून माह में परीक्षा आयोजित की जाती है।

आवेदन पत्र शुल्क	**₹ 500.00**
विलम्ब शुल्क	**₹ 50.00**

■ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) मुख्यालय परिसर में शोध पञ्जीकरण हेतु प्राक्-शोध-परीक्षा का आयोजन करता है। इस परीक्षा के लिए विद्यार्थी को निर्धारित आवेदन-पत्र प्रपूरित कर राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के मुख्यालय अथवा परिसरों में निश्चित तिथि तक जमा कराना होता है।

■ इस परीक्षा के लिए ऐसे विद्यार्थी भी योग्य माने जायेंगे जिन्होंने स्नातकोत्तर परीक्षा दी हो किन्तु परिणाम घोषित न हुआ हो, ऐसे छात्रों को पंजीकरण के पूर्व निर्धारित योग्यता के अनुरूप अंकपत्र (आवश्यक प्रतिशत के साथ) जमा करना अनिवार्य होगा।

■ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संचालित संस्कृत में नेट/जे.आर.एफ. तथा एम.फिल. परीक्षा में उत्तीर्ण छात्र इस परीक्षा के बिना भी विद्यावारिधि पंजीकरण के लिए अर्ह होंगे परन्तु उन्हें भी पंजीयन के लिए आवेदन पत्र भरना अनिवार्य है। भारत सरकार के नियमानुसार आरक्षण नीति का पालन किया जायेगा।

ऐसे छात्र को आवेदन के साथ अर्हतासम्बन्धी प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करना होगा।

प्राक्-शोध-परीक्षा-पाठ्यक्रम

शोधकार्य हेतु प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि उन्हें अपने स्नातकोत्तर कक्षा में पठित विषय का सम्यक् ज्ञान हो। मात्र पल्लवग्राही ज्ञान पर्याप्त नहीं

है। ग्रन्थ-सम्पादन एवं हस्तलेख-विज्ञान का परिचयात्मक ज्ञान भी अपेक्षित है। प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति तथा संस्कृत साहित्य एवं भाषा के विकास के विभिन्न चरणों का सामान्य ज्ञान होना चाहिए। समसामायिक विश्व एवं वर्तमान भारत के संवैधानिक स्वरूप का सामान्य ज्ञान वाञ्छनीय है।

उक्त प्रवेश परीक्षा में 100 अंकों के दो प्रश्न-पत्र तीन घण्टों की अवधि वाले होते हैं। इसमें निम्नलिखित विषयों पर आधारित वस्तुनिष्ठ प्रश्न होते हैं–

प्रथम प्रश्न-पत्र

- सामान्य ज्ञान (भारत एवं भारतीय समाज एवं संस्कृति का सामान्य ज्ञान), संस्कृत-भाषा के प्रकार (भिन्न-भिन्न शास्त्रों एवं कालों में), विविध धर्म एवं दर्शन (भारत में प्रचलित/उद्भूत), सर्वशास्त्रों के मूलाधार (मूलसिद्धान्त मात्र का ज्ञान), पाण्डुलिपि-विज्ञान/शोध प्रविधि का सामान्य परिचय (सन्दर्भ, पादटिप्पणी, ग्रन्थसूची का निर्माण, परिशिष्ट एवं लिप्यन्तरण का ज्ञान)।
- संस्कृत-व्याकरण का सामान्य ज्ञान (सन्धि, समास, वाच्य, सुबन्त, तिङन्त, कृदन्त, तद्धित का परिचयात्मक ज्ञान)
- प्रसिद्ध छन्द एवं अलंकारों का ज्ञान
- संस्कृत-साहित्य का क्रमिक विकास (सामान्य परिचय)

द्वितीय प्रश्न-पत्र

इस प्रश्न-पत्र में विद्यार्थी द्वारा स्नातकोत्तर में अधीत शास्त्र का ज्ञान अपेक्षित है। अन्तःशास्त्रीय विषयतालिका के अनुसार छात्र स्वरूचि का एक विषय वर्ग चुनकर उत्तर दे सकता है। कई विषय वर्गों से उत्तर दिया जाना स्वीकार्य नहीं होगा। विषय वर्ग की तालिका अधोलिखित है– वेदान्त, सांख्ययोग, न्याय-वैशिषिक, पुराणेतिहास, व्याकरण, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, मीमांसा, बौद्धदर्शन, जैनदर्शन, साहित्य तथा वेद। (इसके अतिरिक्त किसी विषय के शोधार्थ-अन्तःसम्बन्ध का निर्धारण पूर्णतः कुलपति का अधिकार होगा। वे किसी भी विषय में स्नातकोत्तर छात्र की योग्यतानुसार शोध-विभाग या विशेषज्ञ समिति की अनुशंसा पर शोध के लिए अनुमति दे सकते हैं।)

नोट– प्रत्येक प्रश्न-पत्र में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक पाने वाले विद्यार्थी अर्हता-सूची में स्थान पा सकेंग। तदनन्तर वरीयता क्रम से चयन की प्रक्रिया सम्पादित होगी।

पञ्जीकरण की प्रक्रिया

प्राक् शोध परीक्षा में वरीयता क्रम से अर्ह घोषित छात्र निश्चित अवधि तक शोध प्रारूप के साथ अपना आवेदन-पत्र शोध-निर्देशक द्वारा अग्रसारित कराकर सम्बद्ध परिसर में जमा करेगा। तत्पश्चात् परिसर की स्थानीय शोध समिति शोधार्थियों की तथा उनके द्वारा निर्धारित शोध- विषयों एवं शोध-प्रारूपों की समीक्षा करेगी। प्राचार्य उचित आवेदन-पत्रों को निर्धारित तिथि तक केन्द्रीय शोध-मण्डल में विचार एवं स्वीकृति हेतु राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली को प्रेषित करेंगे। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय) के शोध विभाग द्वारा आयोजित केन्द्रीय शोध मण्डल के उपवेशन में स्वीकृति के पश्चात् सम्बद्ध परिसर को निर्णय की सूचना प्राप्त होने के बाद छात्र अपना प्रवेश शुल्क जमा कर पंजीकरण की प्रक्रिया पूर्ण कर सकेगा। परिसर के अतिरिक्त संस्थान मुख्यालय से भी शोध कार्य कर सकते हैं।

शोधनिर्देशक के मानदण्ड

कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली द्वारा अधिकृत एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मानदण्डों के अनुरूप संस्थान के अध्यापक तथा प्रतिष्ठित सम्बद्धताप्राप्त संस्था में कार्यरत अध्यापक, शोध निर्देशन कर सकते हैं।

अन्तःशास्त्रीय विषय जैसे आधुनिक मनोविज्ञान, आयुर्वेद आदि विषय से सम्बद्ध बाह्य सह-निर्देशक की नियुक्ति आवश्यक होगी। स्थानीय-शोध-समिति की अनुशंसा पर केन्द्रीय-शोध-मण्डल संस्थान के बाहर से भी विशेषज्ञ विद्वान् को शोध-निर्देशक के रूप में नियुक्त कर सकते हैं।

विषय-चुनाव एवं शोध-प्रारूप निर्माण के महत्त्वपूर्ण बिन्दु

शीर्षक का निर्धारण, ▪ शोध शीर्षक के चुनाव का औचित्य, 1. शोधविषय की प्रासंगिकता तथा महत्त्व, 2. उस विषय पर किये जा चुके अध्ययनों का उल्लेख। ▪ शोध के आयाम ▪ शोधप्रबन्ध की संरचना।

शोधप्रबन्ध के सम्भावित अध्यायों को प्रारूप में बताया जाना चाहिये। शोध पूर्ण होने पर उन अध्यायों में परिवर्तन आदि की भी सम्भावना स्वीकार्य हो सकती है। सामान्यतः अध्यायों का प्रारूप पूर्व कथित महत्त्व, आयाम प्रासंगिकता तथा सम्भावित उपसंहार के आधार पर निर्मित होने चाहिये। अध्यायों के विभाजन में क्रमिकता का ध्यान रखना आवश्यक है। यह क्रमिकता विचारों की प्रस्तुति के क्रम पर भी आधारित हो सकती है। प्रत्येक अध्याय के सम्भावित बिन्दुओं को आवश्य लिखा जाना चाहिये, जिससे प्रारूप स्पष्ट हो सके। इसी प्रकार सम्भावित निर्णयों को बिन्दुशः प्रस्तुत करना चाहिए, ऐसा न प्रतीत हो कि शोध-सार प्रस्तुत किया जा रहा है। ▪ सन्दर्भसूची।

शोधनिर्देशक तथा विषय परिवर्तन की प्रक्रिया

पंजीकरण के छः माह के अन्दर शोधकर्त्ता अपने विषय/शोधप्रारूप में परिवर्तन/परिवर्धन/संक्षेपण हेतु निर्देशक के माध्यम से सम्बद्ध परिसर के प्राचार्य की अनुशंसा के साथ केन्द्रीय शोधमण्डल को आवेदन कर सकता है। केन्द्रीय शोधमण्डल इस पर निर्णय लेगा। शोध निर्देशक के परिवर्तन के लिए भी शोधार्थी अपनी सुविधानुसार आवेदन कर सकता है। माननीय कुलपति महोदय की संस्तुति के पश्चात् शोध निर्देशक परिवर्तित हो सकते हैं।

अनुसंधान काल एवं पुनः पञ्जीकरण

पंजीकरण की तिथि से कम से कम 24 माह (दो वर्ष) के बाद शोधकर्त्ता अपने

शोध-प्रबन्ध को किसी भी समय परीक्षणार्थ जमा कर सकता है। शोध-प्रबन्ध जमा करने की अधिकतम अवधि परिसर में पंजीकरण शुल्क जमा करने की तिथि से पाँच वर्ष होगी। पंजीकरण की तिथि से 60 माह (पाँच वर्ष) की अवधि अधिकतम अवधि होगी। इसके पश्चात् शोध-कार्य की पूर्णता हेतु शोधच्छात्र उचित कारण रहने पर अधिक से अधिक 24 माह (दो वर्ष) के लिए निर्धारित शुल्क (रु॰ 1000/-) जमा कर पुनः पंजीकरण करा सकता है। इसके लिए आवेदन- पत्र पर शोध-निर्देशक तथा सम्बद्ध परिसर के प्राचार्य द्वारा विलम्ब के कारणों के उल्लेख पूर्वक संस्तुति आवश्यक होगी।

सात वर्षों की सीमा समाप्त होने के पश्चात् आवश्यक होने पर केन्द्रीय शोधमण्डल द्वारा समय परिवर्धन के सम्बन्ध में विचार करके निर्णय लिया जा सकेगा।

उपस्थिति एवं प्रगति-विवरण

■ सभी पञ्जीकृत शोधच्छात्र का प्रत्येक 6-6 माह में शोध-कार्य की प्रगति का विवरण शोध निर्देशक निर्धारित प्रपत्र पर प्राचार्य के कार्यालय में जमा करेंगे। जिसकी एक प्रति शोध-निर्देशन एवं प्राचार्य की टिप्पणी के साथ परिसर द्वारा संस्थान मुख्यालय को प्रेषित की जायेगी।

■ नियमित शोधच्छात्र प्रत्येक माह में 75 प्रतिशत (कार्यदिवसों में) उपस्थित होकर शोध-निर्देशक के निर्देशानुसार कार्य करेंगे। अध्यापक या सेवारत शोधार्थी के लिए उपस्थिति की अनिवार्यता नहीं होगी।

■ शोध अवधि में शोधकार्य के लिए शोधछात्र किसी अन्य विश्वविद्यालय अथवा पुस्तकालय अथवा संस्था में निर्देशक की संस्तुति तथा प्राचार्य की अनुमति से जा सकते हैं। इस अवधि में उनकी उपस्थिति मानी जायेगी।

■ प्रत्येक पञ्जीकृत शोधछात्र को शोध अवधि में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के शोधविभाग द्वारा आयोजित शोधप्रक्रियाविज्ञान एवं पाण्डुलिपिविज्ञान के प्रशिक्षणशिविर में निर्देशानुसार भाग लेना अनिवार्य होगा।

■ परिसर द्वारा आयोजित विभिन्न संगोष्ठियों, व्याख्यानमालाओं आदि में नियमित शोधच्छात्र की उपस्थिति अनिवार्य होगी।

■ प्रत्येक शोधच्छात्र को अपने शोध अवधि के प्रत्येक वर्ष में शोध-विषय से सम्बन्धित कम से कम दो शोधपत्रों का परिसर की शोधसंगोष्ठी में प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा, ऐसी शोधसंगोष्ठियों का आयोजन प्राचार्य, विभागाध्यक्ष तथा शोधनिर्देशक के आवेदन पर सुविधानुसार करेंगे।

■ राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान (मानित-विश्वविद्यालय) में पञ्जीकृत शोधछात्र को अपने प्रवेश के समय अथवा प्रवेश तिथि के 6 माह के अन्दर निष्क्रमण प्रमाणपत्र जमा करना अनिवार्य होगा। इसके बाद संस्थान द्वारा विद्यार्थियों को ज्ञापन दिया जायेगा। इस ज्ञापन के निर्गत किए जाने की तिथि से 02 माह के भीतर निष्क्रमण प्रमाणपत्र शोध एवं

प्रकाशन विभाग में नहीं जमा किए जाने पर प्रवेश निरस्त कर दिया जाएगा।

शोध-प्रविधि विषयक पाठ्यक्रम की कार्यशाला

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 2009 के अनुसार प्रत्येक शोधार्थी को छः महीने का शोधप्रविधि विषयक पाठ्यक्रम का अध्ययन करना अनिवार्य है।

शोध-छात्रवृत्ति

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) प्रतिवर्ष अपने प्रत्येक परिसरों में कुल मिलाकर 15 शोधच्छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करता है। कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) किसी परिसर की विशेष परिस्थिति के आधार पर आवश्यकतानुसार विशेषाधिकार से छात्रवृत्ति की संख्या में परिवर्तन भी कर सकते हैं।

छात्रवृत्ति प्रदान करने का नियम

प्राक्-शोध-परीक्षा में उत्तीर्ण तथा आचार्य/एम.ए. (संस्कृत) में 60 प्रतिशत प्राप्त छात्रों को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) द्वारा घोषित परिणाम की वरीयता-क्रम-सूची के आधार पर संस्थान एवं प्रत्येक परिसर के हर एक विभाग में प्रथमतः एक-एक छात्रवृत्ति प्रदान की जायेगी। इस सम्बन्ध में कुलपति का निर्णय अन्तिम होगा।

▪ **शोध-छात्रवृत्ति की राशि** – वर्तमान में प्रत्येक विषय के शोधार्थी को वरीयता क्रम से नियमानुसार 5000.00 रुपये प्रति माह छात्रवृत्ति तथा 3000.00 रुपये प्रति वर्ष सांयोगिक राशि दी जायेगी। सांयोगिक धनराशि शोध छात्र द्वारा प्रस्तुत व्यय-विवरण के आधार पर प्रदान की जायेगी। शोधच्छात्र यह धनराशि पुस्तक-क्रय, शोध-सम्बन्धी यात्रा, लेखन तथा टंकण सम्बन्धी कार्यों में व्यय कर सकता है।

▪ **छात्रवृत्ति की अवधि** – छात्रवृत्ति की अवधि 24 माह के लिए निश्चित होगी। किन्तु मार्गनिर्देशक एवं स्थानीय-शोध-समिति की अनुशंसा पर यह छात्रवृत्ति संस्थान मुख्यालय द्वारा अतिरिक्त 12 माह के लिए बढ़ायी जा सकती है।

▪ **छात्रवृत्ति भुगतान** – छात्र के पञ्जीकरण के तीन माह के भीतर संस्थान की संस्तुति पर परिसरों के माध्यम से छात्रवृत्ति आरम्भ की जायेगी। इस अवधि में संस्थान से छात्रवृत्तिप्राप्त शोध-छात्र किसी भी अन्य संस्थान से छात्रवृत्ति/वेतन प्राप्त नहीं कर सकेगा।

शोध की अवधि में नियमित शोधच्छात्र किसी अन्य संस्थान से छात्रवृत्ति अथवा वेतन प्राप्त करता है तो उसे अनुशासनहीनता मानी जायेगी तथा छात्र का पंजीकरण निरस्त कर दिया जायेगा। ऐसी स्थिति में छात्र को परिसर से प्राप्त की गई समस्त छात्रवृत्ति भी वापस करनी होगी।

शोधच्छात्र से अपेक्षा की जाती है कि वह परिसर की गरिमा को उन्नत बनायेगा। परिसर की अनुशासनसमिति अनुचित आचरण करने वाले छात्र के प्रति अनुशासनात्मक

कार्यवाही कर संस्थान से उसकी छात्रवृत्ति समाप्त कर सकती है। अनुशासनहीनता की पुनरावृत्ति होने पर शोधच्छात्र का पंजीकरण भी स्थानीय शोधसमिति की अनुशंसा पर निरस्त किया जा सकता है।

शोध प्रबन्ध की भाषा

शोध प्रबन्ध की भाषा केवल संस्कृत होगी।

शोध-प्रबन्ध की प्रस्तुति

■ पंजीकरण के 24 माह पश्चात् किसी भी समय शोधच्छात्र शोध-प्रबन्ध का सार प्रस्तुत करने के लिए परिसर के प्राचार्य को शोधनिर्देशक की संस्तुति से प्रार्थना पत्र सकता है। प्राचार्य निश्चित तिथि को एक संगोष्ठी का आयोजन करेंगे, जिसमें छात्र शोधसारांश प्रस्तुत करेगा, जिसकी समीक्षा के पश्चात् प्राचार्य, शोध-प्रबन्ध जमा करने की स्वीकृति प्रदान करेंगे। शोध-सारांश की प्रस्तुति के तीन माह के भीतर शोध-प्रबन्ध जमा किया जाना आवश्यक होगा। शोध-सारांश की टंकित तीन प्रतियाँ परीक्षणार्थ शोधप्रबन्ध जमा करने से तीन माह पूर्व प्राचार्य एवं मार्गदर्शक के पास जमा करें जिसे प्राचार्य अग्रिम सूचना एवं कार्यवाही के लिए मुख्यालय परीक्षा अथवा शोध प्रकाशन विभाग को भेजेंगे।

नोट - विशेष परिस्थिति में कुलपति महोदय की संस्तुति पर 18 माह के बाद भी शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत हो सकता है।

■ शोधप्रबन्ध की भाषा संस्कृत होगी, जिसे केवल देवनागरी में लिपिबद्ध किया जा सकेगा।

■ शोध-छात्र शोधप्रबन्ध की टंकित/मुद्रित सुवाच्य छः प्रतियाँ मार्गनिर्देशक के पास प्रस्तुत करेगा, उन्हें मार्गनिर्देशक प्रमाणित कर प्राचार्य के द्वारा अग्रसारित कराकर परिसर कार्यालय में जमा करेंगे। उनमें से तीन प्रतियाँ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के परीक्षा अथवा शोध-विभाग को मूल्यांकन हेतु प्रेषित करेंगे। शेष तीन प्रतियाँ क्रमशः परिसर-पुस्तकालय तथा मार्गनिर्देशक एवं छात्र को समर्पित की जायेंगी।

उपाधि हेतु प्रस्तुत किये जाने वाले शोधप्रबन्ध के लिए यह आवश्यक होगा कि-

■ शोधप्रारूप-निर्माणसम्बन्धी नियमों के अन्तर्गत निर्दिष्ट सिद्धान्तों के अनुसार ही शोधप्रबन्ध प्रस्तुत होना चाहिए। सामान्यतः स्वीकृत शोधप्रारूप के आलोक में शोधीर्थी को शोध-प्रबन्ध तैयार करना चाहिए। यदि प्रारूप में परिवर्तन किया गया है तो सकारण विवरण देना चाहिए।

■ शोधनिर्देशक शोधप्रबन्ध को प्रमाणित करते हुए यह उल्लेख करेंगे कि यह शोधप्रबन्ध शोधाछात्र का मौलिक कार्य है और शोधार्थी के नियमानुसार आवश्यक अवधि तक उसके निर्देशकत्व में शोध कार्य किया है।

■ शोधार्थी राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) द्वारा निर्धारित

आवश्यक शुल्क परिसर में जमा करेगा। साथ ही उन्हें परिसर से सम्बन्धित विभागों (पुस्तकालय, संग्रहालय, क्रीडा, छात्रावास आदि) से अनापत्ति प्रमाण-पत्र परिसर कार्यालय में जमा करेगा।

परीक्षकों की नियुक्ति

- शोध छात्र द्वारा शोधप्रबन्ध प्रस्तुत करने के पश्चात् शोधनिर्देशक नौ विषय-विशेषज्ञों के नाम पूर्ण विवरण के साथ प्राचार्य के माध्यम से परीक्षा अथवा शोध एवं प्रकाशनविभाग राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली को परीक्षकों की नियुक्ति हेतु प्रेषित करेंगे। परिसर के प्राचार्य/संकाय-प्रमुख भी सम्बद्ध विषय के छह विषय-विशेषज्ञों के नाम निर्धारित-प्रपत्र पर पूर्ण संकेत के साथ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली को प्रेषित करेंगे। कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) अपने विवेक से उक्त नामों में से किन्हीं तीन विशेषज्ञों को मूल्यांकन हेतु परीक्षक नियुक्त कर सकते हैं। उक्त नामों के अतिरिक्त भी कुलपति अपनी इच्छा से किसी अन्य विषय-विशेषज्ञ को परीक्षक नियुक्त कर सकते हैं।

मूल्यांकन के लिए शोध-प्रबन्ध के साथ प्रेषण हेतु-

- तीन शोध प्रबन्ध।
- रु० 1000.00 का डिमांड ड्राफ्ट (कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली) के पक्ष में देय हो।
- छात्र का पूर्ण विवरण (फार्म के अनुसार)।
- प्राचार्य द्वारा सत्यापन एवं अग्रसारण प्रपत्र।

वाक्-परीक्षा

वाक्-परीक्षा के लिए परीक्षकों की संस्तुति कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली द्वारा की जायेगी। परीक्षा अनुभाग निर्दिष्ट परीक्षक को सूचित करेगा कि वह तीन माह के भीतर शोधप्रबन्ध से सम्बद्ध रिपोर्ट भेज दें। परीक्षकों के द्वारा विद्यावारिधि उपाधि के लिए संस्तुति प्राप्त होने के छः माह के अन्दर परीक्षाविभाग शोधार्थी की वाक्-परीक्षा का राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के मुख्यालय में अथवा सम्बन्धित परिसर में आयोजन करेगा। कुलपति महोदय की स्वीकृति से अन्यत्र भी आयोजन किया जा सकता है।

वाक्-परीक्षा में शैक्षणिक अधिकारी भी सम्मिलित हो सकते हैं। यदि किन्ही कारणों से परीक्षक सन्तुष्ट नहीं होता तो छः माह के भीतर पुनः वाक्-परीक्षा के लिए निर्देश दे सकता है। मुख्य वाक्-परीक्षक का निर्णय अन्तिम रूप से मान्य होगा। यदि परीक्षक दूसरी बार भी परीक्षार्थी के उत्तर से सन्तुष्ट नहीं होता तो शोधच्छात्र को विद्यावारिधि उपाधि प्राप्त करने के योग्य नहीं माना जायेगा और उसके द्वारा प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध निरस्त कर दिया जायेगा।

विद्यावारिधि हेतु शोध-प्रबन्ध का परीक्षण करने वाले विद्वानों तथा वाक्- परीक्षा के लिए आमन्त्रित विद्वान् को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के नियमानुसार यात्रा-भत्ता एवं मानदेय आदि प्रदान किया जायेगा।

प्रवेश हेतु अपेक्षित प्रमाणपत्र

1. पूर्व उत्तीर्ण परीक्षाओं की उत्तीर्णता के विषय में विश्वविद्यालय अथवा मान्यता प्राप्त संस्था से प्राप्त प्रमाण पत्र।
2. जन्मतिथि प्रमाण पत्र (मॅट्रिक या तत्समकक्ष परीक्षा का प्रमाण पत्र) जिसमें जन्म तिथि भी प्रमाणित की गई हो।
3. चरित्र प्रमाण पत्र (पूर्व संस्था के प्राचार्य द्वारा)।
4. स्थानान्तरण प्रमाण पत्र (टी. सी.)।
5. निष्क्रमण प्रमाण पत्र (माइग्रेशन सर्टिफिकेट)।

नोट- प्राचार्य विशेष परिस्थितियों में किसी छात्र को स्थानान्तरण प्रमाण पत्र एवं निष्क्रमण प्रमाण-पत्र बाद में प्रस्तुत करने की छूट दे सकते हैं किन्तु उचित अविध के अन्दर इसे प्रस्तुत न करने पर छात्र का नाम निरस्त कर दिया जायेगा।

6. पूर्व परीक्षा में प्राप्त अङ्को की विषयानुसार अंक पत्र (मार्कशीट)।
7. क्रीडा एवं पाठ्येतर प्रवृत्तियों में प्रवीणता प्राप्ति का प्रमाण-पत्र (यदि हो तो)।

आवेदक को अपने आवेदन पत्र के साथ उपयुक्त प्रमाण पत्रों की सत्यापित प्रतिलिपियां अवश्य संलग्न करनी चाहिये। प्रवेश के समय मूल प्रमाण-पत्र मांगने पर दिखाएं। अस्पष्ट एवं असत्यापित प्रमाण पत्रादि प्रवेशार्थ स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

2. प्रवेश-निरस्ति और प्रतीक्षकों का प्रवेश

जो छात्र प्रवेश स्वीकृत हो जाने पर प्रवेश सम्बन्धी समस्त औपचारिकताएं यथा समय पूर्ण नहीं करेंगे उनके नाम प्रवेश सूची से निरस्त कर दिये जायेंगे तथा उनके स्थान पर प्रतीक्षा सूची में रखे गये छात्रों को वरीयता क्रम से प्रवेश दिया जायेगा। प्रतीक्षा सूची में जो छात्र प्रवेश के वरीयताक्रम में प्रवेश योग्य होगें उन्हें भी निर्धारित समय पर प्रवेश सम्बन्धी सभी औपचारिकतायें पूर्ण करते हुए प्रवेश लेना होगा।

विशेष सूचना —

क) आवेदन पत्र एवं प्रमाण पत्रादि में कोई भी असत्य सूचना देने पर और राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा निर्धारित योग्यताओं में कमी होने पर आरम्भ में प्रवेश हो भी गया हो तो

भी बिना कारण बताये उस छात्र का प्रवेश निरस्त कर दिया जायेगा और इसके लिए संस्थान का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

ख) इन नियमों में तथा राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) द्वारा इनसे पूर्व या समय-समय पर प्रकाशित या निर्दिष्ट नियमों में अन्तर होने पर संस्थान द्वारा निर्दिष्ट नियम अन्तिम रूप से स्वीकार्य होंगे।

3. सुरक्षित धनराशि

(क) यदि प्रवेश प्राप्त छात्र संस्थान परिसर छोड़कर जाता है तो उसे सुरक्षित धनराशि के अतिरिक्त लिया हुआ कोई भी शुल्क लौटाया नहीं जायेगा।

(ख) उपर्युक्त धनराशि नकद के रूप में ही देय होगी चेक अथवा ड्राफ्ट के रूप में नहीं।

(ग) सुरक्षित धन राशि परीक्षा फल प्रकाशित होने के बाद अथवा सत्रावसान पर ही लौटायी जायेगी। यदि कोई छात्र बीच में उक्त राशि को वापस लेगा तो उस छात्र का प्रवेश निरस्त हो जायेगा एवं किसी भी परिस्थिति में उस छात्र का पुनः प्रवेश नहीं होगा।

4. परिधान

संस्थान परिसर में शिक्षाशास्त्री / शिक्षाचार्य को छोड़कर शेष छात्र-छात्राओं के लिए सादे परिधान का नियम है। शिक्षाशास्त्री / शिक्षाचार्य के छात्र-छात्राओं हेतु शिक्षणाभ्यास परिधान संबंधित परिसर के विभागाध्यक्ष द्वारा सुनिश्चित होगा।

5. अवकाश सम्बन्धी नियम

वार्षिक परीक्षा में प्रवेशार्हता और छात्रवृत्ति भुगतान की पात्रता के लिये एक शिक्षा सत्र में छात्र की 75 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य है। अर्थात् छात्र को एक शिक्षा सत्र में कुल व्याख्यान दिवसों का अधिकतम 25 प्रतिशत अवकाश दिया जायेगा। प्राचार्य की पूर्व अनुमति से छात्रों द्वारा लिये गये निम्नलिखित अवकाशों को छात्रवृत्ति के लिए ''अनुपस्थिति'' में नहीं गिना जायेगा।

1. सम्बन्धित विभागाध्यक्ष की अनुशंसा पर बिना चिकित्सकीय प्रमाण-पत्र के एक शैक्षिक सत्र में 10 दिनों का अवकाश।

2. एक शैक्षिक सत्र में 20 दिनों का चिकित्सकीय अवकाश, जिसके लिए पंजीकृत चिकित्सा अधिकारी द्वारा छात्र की अस्वस्थता का प्रमाण-पत्र प्रस्तुत किया गया हो।

3. वांछित उपस्थिति के पूर्ण होने पर कोई छात्र बीमारी के कारण वार्षिक परीक्षा में बैठने में असमर्थ होता है तो चिकित्सा अधिकारी के प्रमाणित करने पर वह अगले

वर्ष की परीक्षा में पूर्व छात्र के रूप में बैठ सकता है। अगले वर्ष वह अध्ययनार्थ कक्षाओं में उपस्थित हो सकता है किन्तु वह नियमित छात्र नहीं माना जायेगा और छात्रवृत्ति का अधिकारी नहीं होगा।

6. शुल्क विवरण

परिसर में प्रवेश स्वीकृत होने पर प्रत्येक छात्र को निम्नलिखित शुल्क एवं सुरक्षित धनराशि (रूपये में) पूरे सत्र के लिये आरम्भ में ही जमा करानी होगी।

क्र. सं.	विवरण	प्रा.शा.	शास्त्री	आचार्य	शि.शा.	शि.आ.	वि.वा. (शोध)	छात्रावास शुल्क
1.	प्रवेश फार्म शुल्क	50	50	50	50	50	50	
2.	प्रवेश शुल्क	25	25	25	25	25	25	100
3.	सुरक्षित धन पुस्तकालय	150	150	150	150	150	150	
	छात्रावास							1000
4.	नामांकन शुल्क	20	20	20	20	20	20	
5.	परिचय पत्र	50	50	50	50	50	50	
6.	पत्रिका शुल्क	75	75	75	75	75	75	
7.	क्रीड़ा शुल्क	100	100	100	100	100	100	
9.	छात्रकोष शुल्क	400	400	400	1000	1000	400	
10.	विविध प्रवृत्ति शुल्क	20	20	20	200	200	20	
11.	आर्ट क्राफ्ट शुल्क	50	50	50	200	200	50	
12.	विद्युत शुल्क							200
13.	रखरखाव शुल्क (अप्रत्यावर्तनीय)							1000

* शिक्षाशास्त्री कक्षा के छात्रों के लिए अतिरिक्त देय होगा।

(क) बालचर शिविर समायोजन (स्काउट कैम्प) रु. 200/-

(ख) प्राथमिक उपचार–प्रशिक्षण रु. 200/-

(ग) पाठ्यपुस्तिका, दैनन्दिनी आदि। रु. 400/-

(घ) शैक्षिक भ्रमण रु. 500/-

(कुल रु. 1300/-)

7. छात्र-कोष (छात्र कल्याण कोष)

छात्रकोष का प्रबन्ध एक समिति के अधीन है। परिसर के प्राचार्य समिति के अध्यक्ष होंगे तथा इसमें एक अध्यापक छात्र कल्याण अधिकारी के रूप में रहेंगे। कक्षाओं में प्रवेश के समय बनी योग्यता सूची में से सभी कक्षाओं से एक-एक सर्वप्रथम स्थान प्राप्त छात्र समिति के सदस्य होगें। छात्र कोष के मद के साथ लिया गया समस्त धन किसी बैंक में रखा जायेगा। एकाउन्ट का संचालन प्राचार्य एवं अनुभाग अधिकारी संयुक्त रूप से करेंगे। परिसर के अन्य धन सम्बन्धी मदों के समान छात्रकोष का भी लेखा निरीक्षण करवाया जायेगा।

8. छात्र कल्याण परिषद्

संस्थान के सभी परिसरों में नियमानुसार 'छात्र कल्याण परिषद्' कार्य करेगी। परिषद् में योग्यताक्रम से प्रत्येक कक्षा से पूर्व परीक्षा में सबसे अधिक अंक प्राप्त छात्र प्रतिनिधि के रूप में मनोनीत होंगे।

9. अनुशासन

प्रत्येक छात्र-छात्रा को संस्थान परिसर के गौरव को बढ़ाने के लिए सद् आचरण से रहना होगा। पान, तम्बाकू एवं अन्य नशीले पदार्थ खाना वर्जित है। विश्वविद्यालय की सभी शैक्षणिक प्रवृत्तियों में भाग लेना अनिवार्य है। परिसर के भवन, फर्नीचर आदि को कोई हानि पहुँचाये जाने पर छात्र का नाम परिसर से निरस्त किया जायेगा तथा क्षतिपूर्ति राशि छात्र से ली जायेगी।

10. आचार-संहिता (Code of Conduct)

परिसर के सभी छात्र अनुशासन के समस्त नियमों का सख्ती से पालन करेगें।

1. छात्रों को आत्मानुशासन का पालन करना चाहिए और कक्षाओं में नियमित उपस्थित रहना चाहिए।
2. छात्रों की किसी भी प्रकार की अनुशासनहीनता पर उन्हें यथोचित दण्ड दिया जायेगा। छात्रों द्वारा अत्यन्त गम्भीर दुर्व्यवहार या अनुशासनहीनता का दोषी पाये जाने पर/प्रमाणित होने पर अनुशासन समिति की अनुशंसा पर छात्र को संस्थान से निष्कासित भी किया जा सकता है।
3. कोई छात्र यदि परिसर की सम्पत्ति को नुकसान करता है तो वह अनुशासनात्मक कार्यवाही के योग्य माना जायेगा तथा नुकसान हुई सम्पत्ति की भरपाई के लिए वह जिम्मेदार होगा।
4. छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे परिसर की गरिमा को बनाए रखेंगे उन्हें ऐसी

किसी भी अवांछित गतिविधियों में भाग लेने से सख्त मना किया जाता है, जो परिसर की गरिमा के विपरीत हो।

5. परिसर में छात्र किसी भी राजनीतिक गतिविधियों में भाग नहीं लेंगे।
6. परिसर में स्वयं या उनके द्वारा हिंसा फैलाने, शान्ति भंग करने, अपनी बात जबर्दस्ती मनवाने का प्रयास करने पर परिसर की अनुशासन समिति उस छात्र को दण्डित कर सकती है।
7. अनुशासन समिति की अनुशंसा पर प्राचार्य का निर्णय अन्तिम होगा।
8. परिसर में कालांश के समय छात्रों द्वारा मोबाइल फोन का उपयोग वर्जित है।

11. रैगिंग-निषेध-अधिनियम

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (U.G.C.) रैगिंग निषेध अधिनियम-2009 के नियम- 6.3 (क) दिनांक 17 जून 2009 के अनुसार परिसरों में रैगिंग निषेध समिति का गठन किया जाए।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग रैगिंग निषेध अधिनियम-2009 के नियम-7 के अनुसार रैगिंग में निम्नलिखित अपराध सम्मिलित हैं।

1. रैगिंग हेतु उकसाना।
2. रैगिंग का आपराधिक षड्यंत्र।
3. रैगिंग के समय अवैध ढंग से एकत्र होना तथा उत्पात करना।
4. रैगिंग के समय जनता को बाधित करना।
5. रैगिंग के द्वारा शालीनता और नैतिकता भंग करना।
6. शरीर को चोट पहुँचाना।
7. गलत ढंग से रोकना।
8. आपराधिक बल प्रयोग।
9. प्रहार करना, यौन सम्बन्धी अपराध अथवा अप्राकृतिक अपराध।
10. बलात् ग्रहण।
11. आपराधिक ढंग से बिना अधिकार दूसरे के स्थान में प्रवेश करना।
12. सम्पत्ति से सम्बन्धित अपराध।
13. आपराधिक धमकी।
14. मुसीबत में फँसे व्यक्तियों के प्रति उपर्युक्त में से कोई अथवा सभी अपराध करना।
15. उपर्युक्त में से कोई एक अथवा सभी अपराध पीड़ित के विरुद्ध करने हेतु धमकाना।

16. शारीरिक अथवा मानसिक रूप से अपमानित करना।

17. रैगिंग की परिभाषा से सम्बन्धित सभी अपराध।

रैगिंग कैसे होती है —

निम्नलिखित कोई एक अथवा अनेक कार्य रैगिंग के अन्तर्गत आएँगे –

क किसी छात्र अथवा छात्रों द्वारा नए आनेवाले छात्र का मौखिक शब्दों अथवा लिखित वाणी द्वारा उत्पीड़न अथवा दुर्व्यवहार करना।

ख छात्र अथवा छात्रों द्वारा उत्पात करना अथवा अनुशासनहीनता का वातावरण बनाना जिससे नए छात्र को कष्ट, आक्रोश, कठिनाई, शारीरिक अथवा मानसिक पीड़ा हो।

ग किसी छात्र से ऐसे कार्य को करने के लिए कहना जो वह सामान्य स्थिति में न करे तथा जिससे नए छात्र में लज्जा, पीड़ा अथवा भय की भावना उत्पन्न हो।

घ वरिष्ठ छात्र द्वारा किया गया कोई ऐसा कार्य जो किसी अन्य अथवा नए छात्र के चलते हुए शैक्षिक कार्य में बाधा पहुँचाएं।

ड़ नए अथवा किसी अन्य छात्र का दूसरों को दिए गए शैक्षिक कार्य को करने हेतु बाध्य कर शोषण करना।

च नए छात्र का किसी भी प्रकार से आर्थिक शोषण करना।

छ शारीरिक शोषण का कोई भी कार्य/किसी भी प्रकार का यौन शोषण, समलैंगिक प्रहार, नंगा करना, अश्लील तथा काम सम्बन्धी कार्य हेतु विवश करना, अंग चालन द्वारा बुरे भावों को अभिव्यक्ति करना, किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट जिससे किसी व्यक्ति अथवा उसके स्वास्थ्य को हानि पहुँचे।

ज मौखिक शब्दों द्वारा किसी को गाली देना, ई–मेल, डाक, पब्लिकली किसी को अपमानित करना, स्थानापन्न अथवा कष्टदाय देना या सनसनी पैदा करना जिससे नए छात्र को घबराहट हो।

झ कोई कार्य जिससे नए छात्र के मन मस्तिष्क अथवा आत्मविश्वास पर दुष्प्रभाव पड़े। नए अथवा किसी छात्र को कुमार्ग पर ले जाना तथा उस पर किसी प्रकार की प्रभुता दिखाना।

संस्थाध्यक्ष द्वारा रैगिंग विरोधी की जानेवाली कार्रवाई –

रैगिंग विरोधी दल अथवा सम्बन्धित किसी व्यक्ति के भी द्वारा रैगिंग की सूचना प्राप्त होने पर संस्थाध्यक्ष तुरन्त सुनिश्चित करें कि क्या कोई अवैध घटना हुई है और यदि हुई है तो वह स्वयं अथवा उसके द्वारा अधिकृत रैगिंग विरोधी समिति से सूचना प्राप्ति के 24 घंटे के भीतर

प्राथमिकी दर्ज कराए अथवा रैगिंग से सम्बन्धित विधि के अनुसार संस्तुति दे। रैगिंग के अंतर्गत निम्नलिखित अपराध आते हैं।

रैगिंग की घटनाओं पर प्रशासनिक कार्रवाई –

रैगिंग निषेध अधिनियम–2009 के नियम 9.1 (ख) के अनुसार रैगिंग में संलिप्त छात्र/छात्रा के लिए निम्नलिखित दण्ड का प्रावधान हैं।

9.1 किसी छात्र को रैगिंग का दोषी पाए जाने पर संस्था द्वारा निम्नलिखित विधि अनुसार दण्ड दिया जाएगा।

क रैगिंग विरोधी समिति उचित दण्ड के सम्बन्ध में उचित निर्णय लेगी अथवा रैगिंग की घटना के स्वरूप एवं गम्भीरता को देखते हुए रैगिंग विरोधी दल दण्ड हेतु अपनी संस्तुति देगा।

ख रैगिंग विरोधी समिति रैगिंग विरोधी दल द्वारा निर्धारित किए गए अपराध के स्वरूप और गम्भीरता को देखते हुए निम्नलिखित में कोई एक अथवा अनेक दण्ड देगी।

I. कक्षा में उपस्थित होने तथा शैक्षिक अधिकारियों से निलम्बन

II. छात्रवृत्ति/छात्र अध्येतावृत्ति तथा अन्य लाभों को रोकना/वंचित करना

III. किसी टेस्ट/परीक्षा अथवा अन्य मूल्यांकन प्रक्रिया में उपस्थित होने से वंचित करना

IV. परीक्षाफल रोकना

V. किसी प्रादेशिक, राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय मीट, खेल, युवा महोत्सव आदि में संस्था का प्रतिनिधित्व करने से वंचित करना।

VI. छात्रावास से निष्कासित करना

VII. प्रवेश रद्द करना

VIII. संस्था से 04 सत्रों तक के लिए निष्कासन करना।

IX. संस्थान परिसर से निश्चित अवधि तक निष्कासन करना। जब रैगिंग करने अथवा रैगिंग करने के लिए भड़काने वाले व्यक्तियों की पहचान न हो सके तो संस्थान सामूहिक दण्ड का आश्रय ले।

ग. रैगिंग विरोधी समिति द्वारा दिए गए दण्ड के विरुद्ध अपील (प्रार्थना) निम्नलिखित से की जा सकेगी।

I. किसी विश्वविद्यालय से सम्बद्ध संस्था होने पर कुलपति से।

II. विश्वविद्यालय का आदेश होने पर कुलाधिपति से।

III. संसद के अधिनियम के अनुसार निर्मित राष्ट्रीय महत्व की संस्था होने पर उसके चेयरमेन अथवा चांसलर अथवा स्थिति के अनुसार।

12. छात्रों के लिए छात्रवृत्ति स्वीकृत करने हेतु विनियम

उद्देश्य :— संस्थान में अध्ययन कर रहे छात्रों को छात्रवृत्ति देने का प्रमुख उद्देश्य संस्कृत शिक्षा ग्रहण करने हेतु छात्रों को प्रोत्साहित करना है।

12.1 छात्रवृत्ति की पात्रता —

(क) संस्थान में नियमित रूप से अध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति देने पर विचार किया जायेगा।

(ख) छात्रवृत्ति की अर्हता के लिए गत परीक्षा में न्यूनतम 40% अंक होना अनिवार्य है। शिक्षा-शास्त्री में प्रविष्ट छात्रों के गत परीक्षा में 50% अंक होने चाहिये।

(ग) छात्रवृत्ति वरीयता क्रम से दी जायेगी। जिन छात्रों को पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में छात्रवृत्ति स्वीकृत हो गई है उनके लिए पाठ्यक्रम के अन्तिम वर्ष तक छात्रवृत्ति चालू रहेगी, यदि वे प्रत्येक वर्ष में उत्तीर्ण होते हुए योग्यता क्रम में आयेंगे। जो छात्र किसी विषय या प्रश्न पत्र में प्रोन्नत किये जाते हैं या पूरक परीक्षा के लिए रह गये हैं, उनके शेष वर्षों में उनको छात्रवृत्ति देने पर विचार नहीं किया जायेगा।

(घ) छात्रवृत्तियाँ शेष हों तो द्वितीय या तृतीय वर्ष के योग्यता क्रम में आने वाले उन छात्रों को भी छात्रवृत्ति दी जा सकती है जिनको पूर्व वर्ष या वर्षों में छात्रवृत्ति नहीं मिली हो।

12.2 छात्रवृत्तियों की स्वीकृति

प्राचार्य द्वारा छात्रवृत्तियों की स्वीकृति, छात्र द्वारा उत्तीर्ण अन्तिम परीक्षा में प्राप्त अङ्कों के आधार पर योग्यता क्रम से की जायेगी।

विश्वविद्यालय के बजट में प्रावधान होने एवं पाठ्यक्रमों के चलते रहने पर प्रतिवर्ष निम्नलिखित छात्रवृत्तियाँ उपलब्ध होंगी —

क)	प्राक्-शास्त्री	25	प्रत्येक वर्ष
ख)	शास्त्री	60	प्रत्येक वर्ष
ग)	शिक्षाशास्त्री	50%	छात्रों को प्रतिवर्ष
घ)	आचार्य	15	प्रत्येक वर्ष, प्रत्येक विषय में
च)	विद्यावारिधि	15	छात्रवृत्तियाँ प्रत्येक वर्ष

12.3 छात्रवृत्ति प्रदान करने के नियम

(क) छात्र की शैक्षणिक प्रगति, अच्छे आचरण एवं नियमित उपस्थिति पर निर्भर करेगी।

(ख) वर्ष में केवल 10 मास के लिए ही छात्रवृत्ति दी जायेगी।

(ग) प्रत्येक वर्ष या पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों का प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति के लिए नवीन चुनाव किया जायेगा। छात्रवृत्ति पाने वाले जिन छात्रों ने अपना पाठ्यक्रम पूरा कर लिया है या किसी खण्ड में उत्तीर्ण हो चुके हैं, उनको अग्रिम वर्ष या पाठ्यक्रम में छात्रवृत्ति योग्यता क्रम से दी जायेगी।

(घ) इन नियमों के अन्तर्गत किसी भी छात्रवृत्ति पाने वाले छात्र को किसी अन्य स्थान से छात्रवृत्ति वेतन या पारिश्रमिक पाने की छूट नहीं होगी। इस तरह की किसी भी वृत्ति प्राप्त करने की स्थिति में संस्थान में छात्रवृत्ति प्राप्त करने से पूर्व उसे वह वृत्ति छोड़नी होगी और यदि कोई धन प्राप्त किया हो तो वह वापस करना होगा। वर्ष भर में प्राप्त छात्रवृत्ति की धनराशि के बराबर से कम तक कोई छात्र नकद या किसी अन्य रूप में आकस्मिक पुरस्कार प्राप्त करने पर छात्रवृत्ति पाने के अयोग्य नहीं होगा। इसी प्रकार छात्रों को विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त नि:शुल्क शिक्षा, स्वाध्याय हेतु छात्रावास, पुस्तकें, एवं यातायात सुविधा (छूट) प्राप्त करने की अनुमति भी होगी।

12.4 छात्रवृत्ति की राशि

प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए छात्रवृत्ति की संशोधित राशि (मासिक) वर्तमान सत्र से निम्नलिखित है—

1.	प्राक्-शास्त्री	₹ 600
2.	शास्त्री	₹ 800
3.	शिक्षाशास्त्री	₹ 800
4.	आचार्य	₹ 1000
5.	शिक्षाचार्य	₹ 1000
6.	विद्यावारिधि	₹ 5000 एवं प्रतिवर्ष 3000 रु. सांयोगिक राशि

नोट - छात्रवृत्ति की राशि को संस्थान द्वारा किसी भी समय कम या अधिक किया जा सकता है।

छात्रवृत्ति का भुगतान संस्थान से वित्तीय स्वीकृति और राशि मिलने पर ही किया जा सकेगा। छात्रवृत्ति की प्राप्ति और उसको जारी रखने के लिए प्रत्येक कक्षा में नियमानुसार 75% उपस्थिति और विश्वविद्यालय के अनुशासन का सर्वथा पालन अनिवार्य है। किसी भी अध्यापक या कर्मचारी द्वारा छात्र के विरुद्ध अनुशासनहीनता की शिकायत प्राप्त होने पर छात्रवृत्ति स्थगित या निरस्त की जा सकेगी।

12.5 छात्रवृत्ति के लिए चयन की प्रक्रिया

जिस कक्षा में छात्र ने प्रवेश लिया है, उसमें छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए छात्र को निर्धारित आवेदन पत्र भर कर प्राचार्य की सेवा में प्रस्तुत करना होगा। आवेदन पत्रों की जांच के बाद, छात्रवृत्ति नियमों के आधार पर योग्यता क्रम से प्राचार्य छात्रवृत्ति स्वीकृत करेंगे।

अवधि —

(क) सामान्यतया छात्रवृत्ति की अवधि एक सत्र में 10 माह की होगी।

(ख) शोध छात्रवृत्ति सामान्यत: दो वर्ष (24 माह) के लिए होगी।

(ग) छात्रवृत्ति की अर्हता होने पर छात्रवृत्ति की अवधि पाठ्यक्रम के प्रथम या द्वितीय वर्ष (जैसी परिस्थिति हो) से लेकर अन्तिम तक होगी।

(घ) जो छात्रवृत्ति एक बार निरस्त कर दी जायेगी, वह राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) की पूर्व स्वीकृति के बिना पुन: प्रारम्भ नहीं की जायेगी।

(ङ) उत्तम आचरण तथा नियमित उपस्थिति के आधार पर छात्रवृत्ति को जारी रखने की प्राथमिक शर्ते हैं। किसी मास में किसी कक्षा तथा प्रश्न पत्र में 75 प्रतिशत से कम उपस्थिति वाले छात्र को तब तक छात्रवृत्ति नहीं दी जायेगी, जब तक वह उपस्थिति की कमी को पूर्ण कर 75 प्रतिशत तक उपस्थिति नहीं कर लेता। 30 दिन से अधिक निरन्तर अनुपस्थिति पर उस अवधि की छात्रवृत्ति निरस्त हो जायेगी, चाहे छात्र की कुल उपस्थिति पूर्ण क्यों न हो। ऐसे छात्र को 10 माह की अवधि में से अनुपस्थिति के समय को काटकर शेष समय की छात्रवृत्ति का ही भुगतान किया जायेगा।

12.6 भुगतान

सामान्यत: उपस्थितियों के आधार पर छात्रवृत्ति समिति की अनुशंसा पर छात्रवृत्ति के भुगतान का आदेश प्रत्येक मास के प्रथम सप्ताह में संस्थान के प्राचार्य द्वारा किया जायेगा। प्रवेश या वास्तविक उपस्थिति की तिथि से जो तिथि बाद में होगी, उसी तिथि से छात्रवृत्ति प्रारम्भ होगी।

13. अनिवार्य उपस्थिति

संस्थान की प्रत्येक कक्षा में छात्र की नियमित उपस्थिति आवश्यक है। बिना लिखित प्रार्थना-पत्र के लगातार 10 दिन तक कक्षा में अनुपस्थित रहने पर छात्र का नाम संस्थान से निरस्त कर दिया जायेगा। किन्तु प्राचार्य अनुपस्थिति के कारणों से सन्तुष्ट होने पर पुन: प्रवेश भी कर सकेंगे। उस स्थिति में छात्र को पुन: प्रवेश शुल्क जमा कराना होगा। कोई भी छात्र जिसकी कक्षा में 75% से कम उपस्थिति होगी वह छात्र परीक्षा में बैठने का अधिकारी नहीं होगा।

12.1 परीक्षा के सन्दर्भ में अनिवार्य उपस्थिति - 75 प्रतिशत

12.2 छात्रवृत्ति के सन्दर्भ में अनिवार्य उपस्थिति - 75 प्रतिशत

12.1 उपस्थिति में छूट

1. सभी सम्बद्ध परिसरों/महाविद्यालयों/आदर्श विद्यापीठों के प्राचार्य उपस्थिति प्रतिशत में 5 % तक की छूट दे सकते हैं परन्तु इसके लिए उन्हें छूट देने के कारणों

को लिखित रूप में संस्थान को अग्रसारित करना होगा। उससे कम उपस्थिति वाले छात्रों के मामले संस्थान के कुलपति को अग्रसारित करने होंगे जो कारणों से सन्तुष्ट होने पर 5 % तक की अतिरिक्त छूट दे सकते हैं।

2. एक परिसर से दूसरे परिसर अथवा एक महाविद्यालय से अन्य महाविद्यालय/ परिसर में स्थानान्तरित होने वाले छात्रों की पिछली संस्थाओं में उपलब्ध उपस्थिति को अपेक्षित उपस्थिति की प्रतिशत गणना में सम्मिलित कर लिया जाएगा। लेकिन जो छात्र पत्राचार के माध्यम से प्रारम्भिक पाठ्यक्रम में पढ़ रहे हैं, वे संस्थान द्वारा समय-समय पर जारी किए गये नियमों द्वारा अनुबन्धित होंगे।

3. उपर्युक्त सभी नियमों के लागू होने पर भी कोई छात्र जो संस्था से निकाला जा चुका है, अथवा निष्कासित हुआ है अथवा किसी भी एक अवधि के लिए परीक्षा के अयोग्य पाया गया है, तो इसे संस्थान के किसी भी परीक्षा में सम्मिलित नहीं किया जा सकेगा।

4. किसी एक परीक्षा में कोई भी छात्र किसी अन्य विश्वविद्यालय/ संस्थान की ही अन्य परीक्षा में एक ही समय में परीक्षा देने का अधिकारी नहीं होगा। प्रत्येक छात्र को प्रथम प्रवेश के पांच वर्षों के अन्दर केवल पांच प्रयत्नों में ही उपाधि प्राप्त करनी होगी।

14. परीक्षा उत्तीर्णता हेतु न्यूनतम प्रतिशत

1. उत्तरमध्यमा/प्राक्शास्त्री	33 % अंक प्रतिपत्र
2. शास्त्री	36 % अंक प्रतिपत्र
3. आचार्य	40 % अंक प्रतिपत्र

अगली कक्षा में प्रोन्नत होने के लिए विशेष नियम

1. शास्त्री प्रथम और द्वितीय वर्ष एवं आचार्य प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम में न्यूनतम 50 % प्रश्नपत्रों में उत्तीर्णता अनिवार्य है।

2. अनुत्तीर्ण विषय में दूसरे/तीसरे वर्ष में यथास्थिति परीक्षा दी जा सकती है।

3. प्रथमा से प्राक्शास्त्री पर्यन्त अन्तिम वर्ष में दो पत्रों में अनुत्तीर्ण होने पर अधिकतम दो बार अनुपूरक परीक्षा दे सकता है, उसमें भी अनुत्तीर्ण होने पर प्रमाणपत्र नहीं मिल सकेगा।

4. शास्त्री/आचार्य अन्तिम वर्ष में एक पत्र में अनुत्तीर्ण होने पर उत्तीर्णता के लिए अधिकतम दो अवसर दिए जा सकते हैं, किन्तु पाँच वर्षों की अवधि में उत्तीर्ण करने पर ही प्रमाणपत्र दिया जा सकेगा।

15. नेत्रहीन/स्थायी रूप से विकलांग/आकस्मिक दुर्घटना के कारण हाथ में फ्रैक्चर होने वाले परीक्षार्थियों हेतु लेखक की व्यवस्था

1. लेखक के उपयोग की व्यवस्था ऐसे परीक्षार्थियों हेतु की जा सकेगी जो

(i) स्थायी रूप से विकलांग होने के कारण लिखने में असमर्थ हों।

(ii) स्थायी रूप से नेत्रहीन हों।

(iii) दुर्घटना के कारण दायें हाथ में फ्रैक्चर होने की स्थिति में परीक्षार्थी सरकारी अस्पताल के मुख्य चिकित्साधिकारी की मेडिकल रिपोर्ट को उचित माध्यम से वार्षिक परीक्षा प्रारम्भ होने से एक दिन पूर्व ही परीक्षा नियंत्रक के पास जमा करा दिए हों।

2. लेखक की योग्यता परीक्षार्थी द्वारा दी जा रही परीक्षा से कम होनी चाहिए- जैसे शास्त्री परीक्षा के परीक्षार्थी को अधिक से अधिक पूर्वमध्यमा/ प्राक्शास्त्री के समकक्ष परीक्षा में उत्तीर्ण छात्र को ही लेखक के रूप में अनुमति दी जा सकेगी। आचार्य स्तर के लिए उसी प्रकार लेखक अधिक से अधिक शास्त्री या इसके समकक्ष परीक्षा पास किए हुए हों।

3. लेखक के प्रावधान का समस्त व्यय परीक्षार्थी को स्वयं ही वहन करना होगा परन्तु नेत्रहीन परीक्षार्थियों के लिए यह शुल्क संस्थान द्वारा देय होगा।

16. छात्रों को प्रदेय सुविधाएँ

16.1 रेलवे रियायती यात्रा की सुविधा

परिसर में पंजीकृत समस्त छात्रों को पूजावकाश, शीतावकाश एवं ग्रीष्मावकाश के अवसर पर अपने गृहनगर जाने तथा परिसर वापस आने के लिए रेलवे द्वारा किराये में छूट दी जाती है। ग्रीष्मावकाश में अन्तिम परीक्षा में सम्मिलित छात्रों को केवल घर जाने की सुविधा दी जायेगी। इस सुविधा को प्राप्त करने के लिए छात्र द्वारा आवेदन करने पर कार्यालय द्वारा आवश्यक प्रपत्र निर्गत किये जाते हैं। यात्रा आरम्भ से एक सप्ताह पहले आवेदनपत्र कार्यालय में प्रस्तुत करना होगा।

अवधेय है कि रेलवे के नियमानुसार यह छूट केवल 25 वर्ष से कम आयु वाले छात्रों को ही उपलब्ध है किन्तु शोध छात्र के लिए अवकाश अथवा गृहनगर का बन्धन नहीं है। वे अपने शोध निर्देशक के संस्तुति पर शोध कार्य करने के लिए किसी भी समय भारत के किसी भी नगर की रेलवे छूट पर यात्रा कर सकते हैं।

16.2 ग्रन्थालय-सुविधा

संस्थान के सभी परिसरों में सुसमृद्ध तथा विशाल ग्रन्थालयों की सुविधा विद्यमान है। इनमें प्राच्य विद्या तथा संस्कृत शास्त्रों के दुर्लभ ग्रन्थ उपलब्ध हैं। नियमित रूप से जर्नल तथा पत्रिकाएँ इनमें आती रहती है।

● **ग्रन्थालय-नियम**

1. संस्थान में प्रवेश लेने वाले छात्र पुस्तकालय सुरक्षित धन जमा करवाकर पुस्तकालय के सदस्य बन सकते हैं।
2. विद्यार्थी को 15 दिन के लिये पुस्तकें दी जाती हैं। यदि पुस्तक निर्धारित समय पर जमा नहीं की जायेगी तो प्रत्येक पुस्तक के लिये विलम्ब शुल्क देना होगा।
3. सन्दर्भ ग्रन्थ, दुर्लभ एवं बहुमूल्य पुस्तकें पुस्तकालय से निर्गत नहीं की जायेंगी।
4. पुस्तक खो जाने अथवा खराब हो जाने की स्थिति में पुस्तक लेने वाले को वैसी ही पुस्तक लाकर देनी होगी अथवा नियमानुसार उसका मूल्य चुकाना होगा। पाठक को पुस्तकें भली भाँति देखकर लेनी चाहिये।
5. पुस्तकों पर पेन, पेन्सिल आदि से लिखना या चिन्ह लगाना वर्जित है।
6. वार्षिक परीक्षा से पूर्व सभी पुस्तकें जमा करवाना अनिवार्य है, अन्यथा परीक्षा प्रवेश पत्र नहीं दिये जायेंगे।
7. प्रत्येक सदस्य छात्र को 3 पाठक पत्र (कार्ड) दिये जायेंगे जो अहस्तांतरणीय होंगे।
8. पुस्तकालय में शान्तिपूर्वक रहना अपेक्षित है।
9. पत्रिकायें पढ़कर यथास्थान रखें, बिना स्वीकृति के किसी भी पुस्तक अथवा पत्रिका को पुस्तकालय से बाहर ले जाना वर्जित है।
10. पुस्तकालय के नियम भंग करने की स्थिति में पुस्तकालय के किसी भी सदस्य की सदस्यता समाप्त करने का अधिकार प्राचार्य को है।
11. आवश्यक होने पर सदस्य से पुस्तकें समय से पूर्व भी वापस लौटाने हेतु कहा जा सकता है।

16.3 प्रयोगशाला-सुविधा

संस्थान के सभी परिसरों में प्रयोगशालाओं की सुविधा है। प्रमुख रूप से कम्प्यूटर प्रयोगशाला, मनोविज्ञान प्रयोगशाला, शैक्षणिक तकनीकी प्रयोगशाला तथा भाषा शिक्षण प्रयोगशाला इत्यादि प्रयोगशालाएँ सभी परिसरों में उपलब्ध हैं।

● **प्रयोगशाला-नियम**

1. संस्थान में नियमित रूप से अध्ययन करने वाले छात्र प्रयोगशाला का उपयोग कर सकता है।
2. प्रयोगशाला से बहुमूल्य उपकरण वितरित नहीं किये जायेंगे।
3. उपकरण लेने वाले को वैसा ही उपकरण लाकर देना होगा अथवा नियमानुसार उसका मूल्य चुकाना होगा। उपयोक्ता को उपकरण भली भाँति देखकर लेनी चाहिये।
4. वार्षिक परीक्षा से पूर्व सभी उपकरण जमा करवाना अनिवार्य है अन्यथा परीक्षा प्रवेश पत्र नहीं दिये जायेंगे।

5. प्रत्येक छात्र सदस्य को प्रयोगशाला पत्र (कार्ड) दिये जायेंगे जो अहस्तांतरणीय होंगे।
6. प्रयोगशाला में शान्तिपूर्वक रहना अपेक्षित है।
7. उपकरण यथास्थान रखें, बिना स्वीकृति के किसी भी उपकरण को प्रयोगशाला से बाहर ले जाना वर्जित है।
8. प्रयोगशाला के नियम भंग करने की स्थिति में प्रयोगशाला के किसी भी सदस्य की सदस्यता समाप्त करने का अधिकार प्राचार्य को है।
9. आवश्यकता होने पर सदस्य से उपकरण समय से पूर्व भी वापस लौटाने हेतु कहा जा सकता है।

16.4 छात्रावास सुविधा

संस्थान के सभी परिसरों में छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है।

- **छात्रावास के नियम**

16.4.1 कोई भी छात्र, कक्षा में प्रवेश लेने मात्र से छात्रावास में स्थान पाने का अधिकारी नहीं माना जाएगा अर्थात् कोई छात्र इसलिए छात्रावास में स्थान प्राप्त करने का अधिकारी नहीं होगा कि उसने पूर्व वर्ष में स्थान प्राप्त किया था, अपितु गतवर्षीय आचरण, अनुशासन एवं अध्ययन को ध्यान में रखकर ही छात्रावास में पुनः प्रवेश पर विचार किया जायगा। इस संदर्भ में संबंधित छात्रावास अधिष्ठाता की संस्तुति अपेक्षित होगा। प्रतिवर्ष पुराने छात्र को भी वही कार्यवाही करनी होगी, जो परिसर में प्रवेश लेने वाले नवीन छात्र के द्वारा छात्रावास में स्थान प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

16.4.2 छात्रों को छात्रावास में प्रवेश तभी दिया जा सकेगा जब वे निर्धारित शुल्क, जो कि प्रवेश शुल्क, सुरक्षित धनराशि, छात्रावास शुल्क, भोजनालय शुल्क आदि जमा कर देंगे। छात्रावास शुल्क समय-समय पर परिसर के प्राचार्य द्वारा निर्धारित किया जायेगा।

16.4.3 निर्धारित छात्रावास शुल्क वार्षिक जमा होगा।

16.4.4 छात्रावास में प्रवेश के लिए योग्यता तथा दूर से आने वाले छात्रों को वरीयता दी जाएगी।

16.4.5 आचार्य द्वितीय वर्ष और विद्यावारिधि द्वितीय वर्ष के छात्रों को छात्रावास में प्रवेश से पहले नये छात्रों को छात्रावास में स्थान पाने हेतु वरीयता मिलेगी। उसके बाद पुराने छात्रों को प्रवेश दिया जायेगा।

16.4.6 छात्रावास सुरक्षित धनराशि जो प्रवेश के समय जमा किया जाता है, को शैक्षिक वर्ष के समाप्त होने के समय तभी वापस किया जायेगा। यदि छात्रावास में रहने की अवधि में छात्रावास के सभी समान सही और सुरक्षित स्थिति में हों।

16.4.7 छात्रों को उसी कक्ष में रहना होगा जो उनको वार्डन/डिप्टी वार्डन के द्वारा आवंटित

किया गया हो। बिना वार्डन/डिप्टी वार्डन की अनुमति के कक्ष बदलना संभव नहीं होगा।

16.4.8 छात्र अनुशासन की कड़ाई से पालन करेंगे और दूसरे के लिए व्यवधान उत्पन्न न करें।

16.4.9 छात्रावास का द्वार छात्र एवं छात्राओं के लिए रात्रि 9.00 बजे से प्रात: 5.30 बजे तक बंद रहेगा। छात्र वार्डन/डिप्टी वार्डन की अनुमति के बिना छात्रावास के बाहर नहीं जा सकेगा।

16.4.10 आपात स्थिति में छात्र निर्धारित समय के बाद भी वाचमैन से द्वार खोलने का अनुरोध कर सकता है। इसके लिए उसको छात्रावास पुस्तिका में कारण और समय अंकित करना होगा।

16.4.11 छात्रों को अपने कक्ष और छात्रावास परिसर को स्वच्छ रखना होगा।

16.4.12 छात्रावास में मांसाहार (अण्डा आदि) वर्जित है।

16.4.13 छात्रावास में धूम्रपान, वर्जित दवा और मद्यपान सख्त मना है। दोषियों के विरूद्ध कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी।

16.4.14 पानी और बिजली का दुरूपयोग करना सख्त मना है। छात्र बाहर जाने से पहले नल और बिजली के यंत्र को ठीक से बंद कर दें।

16.4.15 छात्रावास में बिजली के प्रेस, हीटर, ऊष्मा के संचालक, गीजर, रेडियो, साउण्ड सिस्टम, टेलीविजन, वी.सी.आर., वी.सी.डी. आदि रखना सख्त मना है।

16.4.16 छात्रावास में रहने वाले छात्रों के अतिथि को छात्रावास के कक्ष में रहने की अनुमति नहीं होगी। अतिथि ₹ 50/- प्रतिदिन का भुगतान कर छात्रावास के अतिथि कक्ष में रह सकते हैं बशर्ते कि छात्रावास का अतिथि कक्ष खाली हो और वार्डन/डिप्टी वार्डन से पूर्वानुमति ली गयी हो। अतिथि कक्ष में ठहरने की व्यवस्था को अधिकार नहीं माना जाएगा। अतिथियों को एक मास में तीन दिन से अधिक कक्ष में ठहरने की अनुमति नहीं होगी।

16.4.17 अतिथि के आगमन की सूचना गेट पर अतिथि पंजिका में दर्ज करनी होगी।

16.4.18 छात्रों को परिसर में आयोजित कक्षाएं, सेमिनार और सम्मेलन में भाग लेना अनिवार्य होगा। जो छात्र कक्षा समय, सेमिनार और सम्मेलन के समय में छात्रावास में पाये जायेंगे उनके विरूद्ध अनुशासनिक कार्रवाई की जायेगी।

16.4.19 छात्रों को छात्रावास के सभी कार्य योजना जैसे-छात्रावास दिवस, पर्व और सांस्कृतिक गतिविधि में भाग लेना होगा।

16.4.20 छात्रावासीय छात्र के अतिरिक्त अन्य किसी छात्र को छात्रावास में रहने की अनुमति नहीं होगी।

16.4.21 छात्रावास में रहने वाले छात्र कोई महंगा सामान या अधिक रुपये (नगद) कमरे में नहीं रखेंगे।

16.4.22 छात्र कोई भी प्रतिबंधित या अवैध वस्तु अस्त्र शास्त्रादि छात्रावास में न रखें। दोषी के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई होगी।

16.4.23 संस्थान के द्वारा दिये गये फर्नीचर को छात्र क्षति नहीं पहुँचायेंगे। क्षति होने पर छात्र से उसका लागतमूल्य वसूल किया जायेगा।

16.4.24 यदि कोई कठिनाई, समस्या और शिकायत हो तो वार्डन/डिप्टी वार्डन से सम्पर्क किया जा सकता है। छात्रावास में रहने वाले छात्र कानून अपने हाथ में नहीं लेंगे।

16.4.25 वार्डन/डिप्टी वार्डन कभी भी छात्रावास का निरीक्षण कर सकते हैं।

16.4.26 छात्रावास में अनुचित व्यवहार एवं अनुशासन अवहेलना की स्थिति में प्रवेश निरस्त हो सकता है।

16.4.27 वार्डन/डिप्टी वार्डन किसी भी छात्र को छात्रावास के सही संचालन के लिए कोई कार्य जैसे-समाचार पत्र की देखभाल, टेलीविजन के सही संचालन आदि का कार्य छात्रावास के निर्बाध संचालन हेतु दे सकते हैं।

16.4.28 छात्र छात्रावास को खाली करने से पहले कमरे की चाभी छात्रावास लिपिक/वार्डन/डिप्टी वार्डन को अवश्य दे दें।

16.4.29 डिप्टी वार्डन के द्वारा नामित छात्रों को कुछ जिम्मेदारी जैसे अखबर की देखभाल, टी.वी. सेट का संचालन आदि कार्य करना पड़ेगा। दूसरे छात्र नामित छात्र का सहयोग करेंगे।

16.4.30 छात्रावास में रहने वाले छात्र परिसर को स्वच्छ एवं हरा-भरा रखेंगे।

16.4.31 छात्रों को छात्रावास में उपलब्ध सुविधा से सामंजस्य स्थापित करना होगा।

16.4.32 छात्रों को छात्रावास शुल्क, प्रवेश शुल्क और भोजनालय शुल्क की रसीद आदि आवश्यक पड़ने पर दिखाना होगा।

16.4.33 छात्रावास में रहने वाले छात्र बिना वार्डन/डिप्टी वार्डन की पूर्वानुमति के छात्रावास न छोड़े। यदि वे 15 दिनों से अधिक बिना समुचित कारण के अनुपस्थित रहेंगे, तो उनकी पात्रता रद्द मानी जायेगी।

16.4.34 उपर्युक्त नियमों का दृढ़ता से पालन न होने पर उसके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी।

16.5 व्यायाम शाला-सुविधाएँ

संस्थान के अधिकांश परिसरों में छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य के लिए व्यायामशाला (जिम) की सुविधा है। जहाँ आधुनिक व्यायाम यन्त्रों, डम्बल एवं वेटप्लेट इत्यादि के द्वारा छात्र प्रातः एवं सायंकाल निश्चित समयानुसार शारीरिक अभ्यास करते हैं।

व्यायामशाला के नियम

1. व्यायामशाला में शान्ति व्यवस्था बनाये रखें।
2. जो व्यायाम सामग्री जहाँ से उठाया जाये, अभ्यास के बाद यथास्थान रखना आवश्यक है।
3. यहाँ किसी प्रकार की अनुशासन हीनता नहीं होनी चाहिए।
4. यहाँ की कोई सामग्री कक्ष से बाहर नहीं जायेगी।
5. धुम्रपान इत्यादि नशा से सम्बधित कार्य निषेध है।
6. वेट ट्रेनिंग के समय साथ में सहयोगी रखना अनिवार्य है।
7. वेट प्लेट या डम्बल को फर्श पर सावधानी से रखें, जिससे किसी प्रकार का नुकसान न हो।
8. अभ्यास के उपरान्त लाइट, पंखे बन्द कर दें।
9. व्यायामशाला के अन्दर कहीं पर भी थूकना या गंदा करना मना है।
10. बिना अनुमति के बाहरी व्यक्तियों का प्रवेश निषिद्ध है।

16.6 पुरस्कार प्रावधान

संस्थान की पाठ्य एवं अन्य शैक्षणिक प्रवृत्तियों में भाग लेकर प्राथमिकता पाने, परीक्षाओं में उच्च अङ्क प्राप्त करने वाले तथा उपस्थिति सद्व्यवहार आदि द्वारा पुरस्कारार्ह प्रमाणित होने वाले छात्रों को संस्थान की ओर से प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार दिया जायेगा।

17. शैक्षिक कलैण्डर (सत्र 2013-14)

1.	नूतन सत्रारम्भ	26.6.2013
2.	प्रवेश प्रक्रिया	26.6.2013 से
	(बिना विलम्ब शुल्क)	02.07.2013 तक
3.	कक्षाध्यापन का शुभारम्भ	02.07.2013
4.	प्रवेश की अन्तिम तिथि (विलम्ब शुल्क के साथ)	31.7.2013
5.	संस्कृत सप्ताह कार्यक्रम	20 से 27 अगस्त 2013
6.	स्वतन्त्रता दिवस समारोह	15.8.2013
7.	प्राथमिक उपचार प्रशिक्षण (शि.शा.)	अगस्त 2013
8.	पूरक परीक्षाएँ	संस्थान द्वारा घोषित तिथियों पर
9.	शैक्षिक एवं क्रीड़ा प्रतियोगिताएँ	5 से 11 सित. 2013
10.	हिन्दी पखवाड़ा	14.9.2013 से

11.	गाँधी जयन्ती	2 अक्टूबर 2013
12.	स्काउट एण्ड गाइड प्रशिक्षण (शि.शा.)	अक्टूबर 2013
13.	राज्यस्तरीय शास्त्रीस्पर्धा	तिथि की घोषणानुसार
14.	दशहरा अवकाश	प्रथम/द्वितीय सप्ताह अक्टूबर 2013
15.	युवा महोत्सव	अन्तिम सप्ताह अक्टूबर 2013
16.	शिक्षा दिवस	11 नवम्बर 2013
17.	विशिष्ट व्याख्यान माला (शास्त्रीय/स्मृति)	नवम्बर 2013
18.	अखिल भारतीय शास्त्रीय वाक्स्पर्धा	तिथि घोषणानुसार
19.	प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएँ	दिसम्बर 2013
20.	द्वितीय सेमेस्टर आरम्भ	26 दिसम्बर 2013
21.	कौमुदी महोत्सव/नाटयमहोत्सव	तिथि घोषणानुसार
22.	गणतन्त्र दिवस	26.1.2014
23.	वसन्त पंचमी एवं सरस्वती पूजन	04.02.2014
24.	शैक्षिक भ्रमण (शि.शा.)	फरवरी 2014
25.	वार्षिकोत्सव	मार्च 2014
26.	वार्षिक परीक्षा	अप्रैल-मई 2014
27.	द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा	द्वितीय सप्ताह मई 2014
28.	ग्रीष्मावकाश	25 मई 2014 से 25 जून 2014 तक

नोट : विशेष परिस्थितियों में उपर्युक्त कार्यक्रमों की तिथियों में परिवर्तन सम्भव है।

18. अवकाश (वर्ष 2013)

18.1 राजपत्रित अवकाश

क्र.	अवकाश	दिनांक	दिन
1.	मिलाद-उन-नवी या ईद-ए-मिलाद	जनवरी 25	शुक्रवार
2.	गणतन्त्र दिवस	जनवरी 26	शनिवार
3.	रामनवमी	अप्रैल 19	शुक्रवार
4.	होली	मार्च 27	बुधवार
5.	महावीर जयन्ती	अप्रैल 24	बृहस्पतिवार
6.	गुड फ्राईडे	मार्च 21	शुक्रवार

7.	बुद्ध पूर्णिमा	मार्च 25	शनिवार
8.	जन्माष्टमी (वैष्णव)	अगस्त 28	बुधवार
9.	स्वतन्त्रता दिवस	अगस्त 15	बृहस्पतिवार
10.	ईद-उल-फितर	अगस्त 09	शुक्रवार
11.	महात्मा गांधी जयन्ती	अक्टूबर 02	बुधवार
12.	दशहरा (विजय दशमी)	अब्टूबर 13	रविवार
13.	ईदू-ल-जूहा (बकरीद)	अक्टूबर 16	बुधवार
14.	दिवाली (दीपावली)	नवम्बर 03	रविवार
15.	मुहर्रम	नवम्बर 14	बृहस्पतिवार
16.	गुरु नानक जयन्ती	नवम्बर 17	रविवार
17.	क्रिसमस डे	दिसम्बर 25	बुधवार

18.2 प्रतिबन्धित अवकाश

क्र.	**अवकाश**	**दिनांक**	**दिन**
1.	नव वर्ष दिवस	जनवरी 01	बृहस्पतिवार
2.	मकर संक्रान्ति	जनवरी 13	रविवार
3.	पोंगल	जनवरी 14	सोमवार
4.	श्री पंचमी	जनवरी 14	बृहस्पतिवार
5.	वसन्तपंचमी/श्रीपंचमी	फरवरी 15	शुक्रवार
6.	गुरु रविदास जयन्ती	फरवरी 07	बृहस्पतिवार
7.	स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती	फरवरी 16	बृहस्पतिवार
8.	शिवाजी जयन्ती	फरवरी 19	मंगलवार
9.	महाशिवरात्रि	मार्च 10	बृहस्पतिवार
10.	होलिका दहन	मार्च 10	बृहस्पतिवार
11.	ईस्टर सनडे	मार्च 31	रविवार
12.	वैशाखी	अप्रैल 13	शनिवार
13.	विशु	अप्रैल 13	शनिवार
14.	मेसादी	अप्रैल 14	रविवार
15.	वैसाखी(बंगाल)/बहाग बीहू (असम)	अप्रैल 15	सोमवार
16.	गुरु रविन्द्रनाथ जयन्ती	मई 09	बृहस्पतिवार

17.	हजरत अली जयन्ती	मई 24	शुक्रवार
18.	रथ यात्रा	जुलाई 10	बृहस्पतिवार
19.	रक्षा बन्धन	अगस्त 20	मंगलवार
20.	जमात-उल-विदा	अगस्त 02	शुक्रवार
21.	पारसी नव वर्ष दिवस	अगस्त 18	रविवार
22.	विनायक चतुर्थी	सितम्बर 09	सोमवार
23.	ओणम्	सितम्बर 16	सोमवार
24.	गणेशचतुर्थी	सितम्बर 09	सोमवार
25.	महासप्तमी (अतिरिक्त)	अक्टूबर 11	शुक्रवार
26.	दशहरा (महा अष्टमी) (अतिरिक्त)	अक्टूबर 12	शनिवार
27.	दशहरा (महा नवमी)	अक्टूबर 13	रविवार
28.	महर्षि वाल्मिकी जयन्ती	अक्टूबर 18	शुक्रवार
29.	करक चतुर्थी (करवा चौथ)	अक्टूबर 22	मंगलवार
30.	नरक चतुर्दशी	नवम्बर 02	शनिवार
31.	दीपावली (दक्षिण भारतीय)	नवम्बर 02	शनिवार
32.	गोवर्धन पूजा	नवम्बर 03	रविवार
33.	भाई दूज	नवम्बर 05	बृहस्पतिवार
34.	प्रतीहार षष्ठी या सूर्य षष्ठी (छठ पूजा)	नवम्बर 08	शुक्रवार
35.	गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस	नवम्बर 24	रविवार
36.	क्रिसमस एव (Christmas Eve)	दिसम्बर 24	मंगलवार

19. परिसर की समितियाँ

संस्थान के सभी परिसरों में वार्षिक गतिविधियों को सुव्यवस्थित एवं सुचारु रूप से संचालन हेतु प्रमुखत: निम्नलिखित समितियों का गठन किया जाना चाहिए। इनके अतिरिक्त आवश्यकतानुसार परिसर द्वारा कुछ उपसमिति का गठन भी किया जा सकता है।

1. प्रवेश समिति
2. अनुशासन समिति
3. छात्रावास समिति
4. पुस्तकालय समिति

5. क्रीडा समिति
6. शैक्षिक एवं क्रीड़ा स्पर्धा समिति
7. सांस्कृतिक, शास्त्रीय एवं कला समिति
8. छात्रवृत्ति समिति
9. परीक्षा समिति
10. पत्रिका प्रकाशन समिति
11. रैगिंग निषेध समिति
12. अध्यापक-अभिभावक परामर्श समिति
13. योजना, परियोजना एवं विकास समिति
14. क्रय-विक्रय, नीलामी, प्रिंटिंग एवं फोटोग्राफी समिति
15. आन्तरिक गुणवत्ता संवर्धन समिति
16. नैक समिति (आन्तरिक गुणवत्ता प्रत्यायन प्रकोष्ठ) (NAAC)
17. सत्यापन समिति (पुस्तक, स्टोर, फर्नीचर, फिक्सर एवं स्टेशनरी आदि)
18. विकलांग, अल्पसंख्यक, मानवाधिकार एवं महिला उत्पीड़न निषेध समिति
19. व्यक्तित्व संवर्धन, रोजगार तथा नियोजन परामर्श समिति
20. सूचना का अधिकार प्रकोष्ठ (RTI CELL)
21. स्थानीय शोध समिति
22. राष्ट्रीय सेवा योजना समिति (NSS)
23. विद्युत एवं जलापूर्ति समिति
24. पर्यावरण, स्वास्थ्य एवं परिवहन व्यवस्था समिति
25. प्रेस प्रिंटिग, विज्ञापन, सूचना प्रसारण एवं जनसम्पर्क समिति
26. पारदर्शिता एवं जागरुकता निष्पादन समिति
27. छात्र कल्याण कोष समिति

विशेष **- इस पुस्तिका में वर्णित नियम/उपनियम में परिवर्तन/निरस्तीकरण करने का सर्वाधिकार कुलपति राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली के पास सुरक्षित है।**

परिशिष्ट

1. राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के परिसरों में अध्यापनीय विषय

क्र. सं.	परिसर	प्राक्शास्त्री (द्विवर्षीय)		शास्त्री (त्रिवर्षीय-6 सेमेस्टर)		आचार्य (द्विवर्षीय-4 सेमेस्टर)
		आधुनिक विषय	**ऐच्छिक शास्त्रीय विषय**	**आधुनिक विषय**	**ऐच्छिक शास्त्री विषय**	
1.	**जम्मू**	अंग्रेजी हिन्दी/डोगरी राजनीतिशास्त्र/इतिहास कम्प्यूटर	व्याकरण/ साहित्य/ ज्योतिष/ दर्शन/ वेद	अंग्रेजी हिन्दी/डोगरी राजनीतिशास्त्र/ इतिहास कम्प्यूटर	व्याकरण/ साहित्य/ दर्शन/ वेद/ सिद्धान्त ज्योतिष/ फलित ज्योतिष	व्याकरण/साहित्य/सर्वदर्शन/ सिद्धान्त ज्योतिष/फलित ज्योतिष
2.	**गरली**	अंग्रेजी हिन्दी इतिहास/अर्थशास्त्र कम्प्यूटर	व्याकरण/ साहित्य/ ज्योतिष/ दर्शन	अंग्रेजी हिन्दी इतिहास/अर्थशास्त्र कम्प्यूटर	व्याकरण/ साहित्य/ फलित ज्योतिष/ वेदांत	व्याकरण/साहित्य/ फलित ज्योतिष/वेदान्त
3.	**लखनऊ**	अंग्रेजी हिन्दी राजनीति शास्त्र/ अर्थशास्त्र कम्प्यूटर	व्याकरण/ साहित्य/ ज्योतिष/ बौद्धदर्शन	अंग्रेजी हिन्दी राजनीति शास्त्र/ अर्थशास्त्र कम्प्यूटर	व्याकरण/ साहित्य/सिद्धान्त ज्योतिष/ फलित ज्योतिष/बौद्ध दर्शन/ वेद	नव्य व्याकरण/प्राचीन व्याकरण/साहित्य/ सिद्धान्त ज्योतिष/फलित ज्योतिष/ बौद्ध दर्शन

क्र. सं.	परिसर	प्राक्शास्त्री (द्विवर्षीय)		शास्त्री (त्रिवर्षीय-6 सेमेस्टर)		आचार्य (द्विवर्षीय-4 सेमेस्टर)
		आधुनिक विषय	**ऐच्छिक शास्त्रीय विषय**	**आधुनिक विषय**	**ऐच्छिक शास्त्री विषय**	
4.	**भोपाल**	अंग्रेजी हिन्दी राजनीतिशास्त्र/इति. कम्प्यूटर	व्याकरण/ साहित्य/ ज्योतिष	अंग्रेजी हिन्दी राजनीतिशास्त्र/इति. कम्प्यूटर	व्याकरण/ साहित्य/सिद्धान्त ज्योतिष/ फलित ज्योतिष/ वेद	नव्य व्याकरण/साहित्य/सिद्धान्त ज्योतिष/ फलित ज्योतिष
5.	**जयपुर**	अंग्रेजी हिन्दी राजनीति शास्त्र कम्प्यूटर	व्याकरण/ साहित्य/ ज्योतिष/दर्शन	अंग्रेजी हिन्दी राजनीति शास्त्र/ अंग्रेजी साहित्य/ हिन्दी साहित्य कम्प्यूटर	व्याकरण/ साहित्य/सिद्धान्त ज्योतिष/ फलित ज्योतिष/जैन दर्शन/ सर्वदर्शन/धर्मशास्त्र/ वेद	व्याकरण/साहित्य/फलित ज्योतिष/ सिद्धान्त ज्योतिष/जैन दर्शन/धर्मशास्त्र/सर्वदर्शन
6.	**मुम्बई**	अंग्रेजी हिन्दी राजनीति शास्त्र कम्प्यूटर	व्याकरण/ साहित्य/ ज्योतिष	अंग्रेजी हिन्दी राजनीति शास्त्र कम्प्यूटर	नव्यव्याकरण/प्राचीनव्याकरण साहित्य/ फलित ज्योतिष	नव्यव्याकरण/साहित्य/फलित ज्योतिष
7.	**पुरी**	अंग्रेजी हिन्दी/उड़िया इतिहास/गणित कम्प्यूटर	व्याकरण/ साहित्य/ ज्योतिष/दर्शन	अंग्रेजी हिन्दी/ उड़िया इतिहास/गणित कम्प्यूटर	व्याकरण/ साहित्य/ सर्वदर्शन/ सिद्धान्त ज्योतिष/ फलित ज्योतिष	नव्यव्याकरण/साहित्य/ सर्वदर्शन/पुराणेतिहास/अद्वैत वेदान्त/ सांख्ययोग/ धर्मशास्त्र/ नव्य न्याय/ सिद्धान्त ज्योतिष/फलित ज्योतिष

क्र. सं.	परिसर	प्राक्शास्त्री (द्विवर्षीय)		शास्त्री (त्रिवर्षीय-6 सेमेस्टर)		आचार्य (द्विवर्षीय-4 सेमेस्टर)
		आधुनिक विषय	**ऐच्छिक शास्त्रीय विषय**	**आधुनिक विषय**	**ऐच्छिक शास्त्री विषय**	
8.	**शृंगेरी**	अंग्रेजी हिन्दी/कन्नड़ इतिहास कम्प्यूटर	व्याकरण/ साहित्य/ ज्योतिष/दर्शन/ वेदांत/मीमांसा	अंग्रेजी हिन्दी/ कन्नड़ इतिहास कम्प्यूटर	व्याकरण/ साहित्य/ सर्वदर्शन फलित ज्योतिष	व्याकरण/साहित्य/फलित ज्योतिष सर्वदर्शन/ मीमांसा/ अद्वैत वेदान्त/ नव्य न्याय
9.	**गुरुवायूर**	अंग्रेजी हिन्दी/मलयालम इतिहास कम्प्यूटर	व्याकरण/ साहित्य/ ज्योतिष/दर्शन/ न्याय/वेदांत	अंग्रेजी हिन्दी/मलयालम इतिहास कम्प्यूटर	व्याकरण/ साहित्य/ सर्वदर्शन फलित ज्योतिष	व्याकरण/साहित्य/ सर्वदर्शन/ मीमांसा/ अद्वैत वेदान्त/ नव्य न्याय
10.	**इलाहाबाद :** इस परिसर में प्राक्शास्त्री, शास्त्री और आचार्य की कक्षाएँ संचालित नहीं होती। यहाँ शोधकार्य तथा पाण्डुलिपि संरक्षण तथा प्रकाशन से सम्बन्धित कार्य ही होते हैं।					

नोट : शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम की पढ़ाई जम्मू, लखनऊ, भोपाल, पुरी, जयपुर, मुम्बई, शृंगेरी एवं गुरुवायूर् परिसर में और शिक्षााचार्य की पढ़ाई जयपुर, जम्मू एवं भोपाल परिसर में होती है।

2. अध्यापन समय सारिणी निर्देश

सभी परिसरों में सामान्य अध्यापन समयसारिणी प्रणाली संचालन के लिए एक प्रारूप दिया जा रहा है, इसके निर्माण के समय अधोलिखित कुछ आवश्यक बातों पर ध्यान देना अनिवार्य है।

1. समय सारिणी के अनुसार प्रत्येक कालांश को प्रारम्भ करने के लिए एक ही स्थान से विद्युत ध्वनि यंत्र या घंटा बजाना आवश्यक है।
2. समय सारिणी के अनुसार सभी कक्षाओं की प्रार्थना एक स्थान पर सामूहिक होगी।
3. आचार्य प्रथम वर्ष के सभी पारंपरिक शास्त्रों के पञ्चम पत्र में कई ऐच्छिक विषय होगें, जिसमें वैदिक वाङ्मय का इतिहास एवं भारतीय संस्कृति पढ़ने वाले छात्रों का अध्यापन एक ही कक्ष में एक ही कालांश में और एक ही अध्यापक से कराया जाए।
4. प्रत्येक कक्षा के छात्रों के लिए सप्ताह में एक कालांश पुस्तकालय के लिए निश्चय किया जाए।
5. प्रत्येक कक्षा के लिए प्रतिदिन शारीरिक-शिक्षा / खेलकूद का एक कालांश होना आवश्यक है।
6. शास्त्री तृतीय वर्ष में पर्यावरण विषय का एक कालांश होगा, जिसकी कुल संख्या प्रतिवर्ष 50 कालांश से अधिक नही होगी।
7. संगोष्ठी, सेमिनार, संस्कृत सप्ताह, हिन्दी पखवाड़ा, स्पर्धाएं इत्यादि कार्यक्रम कार्यदिवस में अपराह्न 02.00 बजे से रखा जाय। इन दिनों में कालांश का समयावधि 30 मिनट ही रखा जाय जिससे सभी कालांश में समान अध्यापन कार्य हो सके।
8. निम्नलिखित प्रारूप के अनुसार अध्यापन समय सारिणी एवं अध्यापकवार समयसारिणी का निर्माण कर सत्रारम्भ के पश्चात् 30 जून तक कुलसचिव, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली को प्रेषित कर दें।

3. अध्यापन समय सारिणी (कक्षानुसार)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)

परिसर का नाम .....

सत्र 20..... - 20.....

दिनांक.....

सोमवार से शुक्रवार प्रातः 9:30 से सायं 6:00 बजे तक

क्र.सं.	कक्षा	प्रातः	प्रथम कालांश	द्वितीय कालांश	तृतीय कालांश	चतुर्थ कालांश		पंचम कालांश	षष्ठ कालांश	सप्तम कालांश	अष्टम कालांश	नवम कालांश
		9:45-10:00	10:00 - 10:45	10:45 - 11:30	11:30 - 12:15	12:15 - 1:00	1:00-1:45	1:45 - 2:30	2:30 - 3:15	3:15 - 4:00	4:00 - 4:45	4:45 - 5:30
1.	प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष	प्रार्थना	पत्र सं., विषय, अध्यापक, कक्ष सं.				मध्यावकाश					
2.	प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष		पत्र सं., विषय, अध्यापक, कक्ष सं.									
3.	शास्त्री-प्रथम वर्ष प्रथम/द्वितीय सेमे.		पत्र सं...../.....विषय अध्यापक, कक्ष सं.									
4.	शास्त्री-द्वितीयवर्ष तृतीय/चतुर्थ सेमे.		पत्र सं...../.....विषय अध्यापक, कक्ष सं.									
5.	शास्त्री-तृतीयवर्ष पंचम/षष्ठ सेमे.		पत्र सं...../.....विषय अध्यापक, कक्ष सं.									
6.	आचार्य-प्र.व.,वि.. प्रथम/द्वितीय सेमे.		पत्र सं...../..... अध्यापक, कक्ष सं.									
7.	आचार्य द्वि.व.,वि... तृतीय/चतुर्थ सेमे.		पत्र सं...../..... अध्यापक, कक्ष सं.									
8.	शिक्षा शास्त्री		पत्र संख्या अध्यापक, कक्ष सं.									
9.	शिक्षाचार्य		पत्र संख्या अध्यापक, कक्ष सं.									

प्राचार्य

4. अध्यापन समय सारिणी (अध्यापकानुसार)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)

परिसर का नाम .....

सत्र 20..... - 20.....

दिनांक.....

सोमवार से शुक्रवार प्रातः 9:30 से सायं 6:00 बजे तक

क्र.सं.	अध्यापकनाम पदनाम, विषय	प्रथम कालांश	द्वितीय कालांश	तृतीय कालांश	चतुर्थ कालांश		पंचम कालांश	षष्ठ कालांश	सप्तम कालांश	अष्टम कालांश	नवम कालांश
		10:00 - 10:45	10:45 - 11:30	11:30 - 12:15	12:15 - 1:00	1:00-1:45	1:45 - 2:30	2:30 - 3:15	3:15 - 4:00	4:00 - 4:45	4:45 - 5:30
1.		कक्षा, विषय, पत्रसं. कक्ष सं.				मध्यावकाश					
2.		Class, Sub., P.No., Room No.									
3.											
4.											
5.											
6.											
7.											
8.											

प्राचार्य

5. छात्रवृत्ति कार्ड

सत्र 20..... - 20.....

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)

परिसर का नाम .....

कक्षा अनुक्रमांक..... नाम..... पिता का नाम..... कक्षा..... प्रवेश तिथि.....

मास	कुल कक्षाएँ	कुल उपस्थिति	उपस्थिति %	छात्रवृत्ति राशि	छात्र. देय दिनांक	छात्र हस्ताक्षर	कैशियर हस्ता.	टिप्पणी
जुलाई								
अगस्त								
सितम्बर								
अक्टूबर								
नवम्बर								
दिसम्बर								
जनवरी								
फरवरी								
मार्च								
अप्रैल								
मई								
महायोग								

नोट - **संस्थान परिसरों के कैशियर द्वारा नियमानुसार छात्रवृत्ति भुगतान का उल्लेख इस कार्ड पर करना आवश्यक है।**